

मङ्सिर - १

सर्वोच्च अदालत बुलेटिन

पाक्षिक प्रकाशन

वर्ष २७, अङ्क १५

२०७५, मङ्सिर १-१५

पूर्णाङ्क ६३३



प्रकाशक

सर्वोच्च अदालत

रामशाहपथ, काठमाडौं

फोन नं. ४२००७२८, ४२००७२९, ४२००७५० Ext. २५११ (सम्पादन), २५१४ (छापाखाना), २१३१ (बिक्री)

फ्याक्स: ४२००७४९, पो.व.नं. २०४३८

Email: info@supremecourt.gov.np, Web: www.supremecourt.gov.np

सम्पादन तथा प्रकाशन समिति

| | |
|---|--------------|
| माननीय न्यायाधीश श्री हरिकृष्ण कार्की, सर्वोच्च अदालत | - अध्यक्ष |
| मुख्य रजिष्ट्रार श्री राजनप्रसाद भट्टराई | - सदस्य |
| नायब महान्यायाधिवक्ता श्री किरण पौडेल, प्रतिनिधि, महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय | - सदस्य |
| रजिष्ट्रार श्री महेन्द्रनाथ उपाध्याय | - सदस्य |
| अधिवक्ता श्री खम्मबहादुर खाती, महासचिव, नेपाल बार एसोसिएसन | - सदस्य |
| वरिष्ठ अधिवक्ता श्री खगेन्द्रप्रसाद अधिकारी, अध्यक्ष, सर्वोच्च अदालत बार एसोसिएसन | - सदस्य |
| प्रा.डा.ताराप्रसाद सापकोटा, डिन, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कानून संकाय | - सदस्य |
| सहरजिष्ट्रार श्री भद्रकाली पोखरेल, सर्वोच्च अदालत | - सदस्य सचिव |

सम्पादक : श्री रामप्रसाद पौडेल

सम्पादन तथा प्रकाशन शाखामा कार्यरत
कर्मचारीहरू

शाखा अधिकृत श्री निलकण्ठ बराल
शाखा अधिकृत श्री मन्दिरा शाही
कम्प्युटर अधिकृत श्री विक्रम प्रधान
ना.सु. श्री अर्जुनबाबु सापकोटा
सि.क. श्री ध्रुव सापकोटा
कम्प्युटर अपरेटर श्री विजय खड्का
कम्प्युटर अपरेटर श्री अर्जुन सुवेदी
कार्यालय सहयोगी श्री राजेश तिमल्सिना

भाषाविद् : श्री रामचन्द्र फुयाल

बिक्री शाखामा कार्यरत कर्मचारी
डि.श्री नरबहादुर खत्री

मुद्रण शाखामा कार्यरत कर्मचारीहरू

सुपरभाइजर श्री कान्छा श्रेष्ठ
मुद्रण अधिकृत श्री आनन्दप्रकाश नेपाल
सिनियर प्रेसम्यान श्री नरेन्द्रमुनि बज्राचार्य
सिनियर हेल्पर श्री तुलसीनारायण महर्जन
सिनियर प्रेसम्यान श्री योगप्रसाद पोखरेल
सिनियर मेकानिक्स श्री निर्मल बयलकोटी
सहायक डिजायनर श्री रसना बज्राचार्य
सिनियर बुकबाइन्डर श्री रमेश बासुकला
सिनियर बुकबाइन्डर श्री विद्यानन्द पोखरेल
बुकबाइन्डर श्री यमनारायण भडेल
बुकबाइन्डर श्री मीरा वाग्ले
कम्पोजिटर श्री प्रमिलाकुमारी लामिछाने
प्रेसम्यान श्री केशवबहादुर सिटौला
बुकबाइन्डर श्री अच्युतप्रसाद सुवेदी

विभिन्न इजलासहरूबाट सम्पादन शाखामा प्राप्त भई यस अङ्कमा
प्रकाशित निर्णय / आदेशहरू

| | | | |
|---------------|----|--------------|----|
| पूर्ण इजलास | १ | इजलास नं. १० | ५ |
| संयुक्त इजलास | ९ | इजलास नं. ११ | ४ |
| इजलास नं. १ | २ | इजलास नं. १२ | १३ |
| इजलास नं. २ | २ | इजलास नं. १३ | ८ |
| इजलास नं. ३ | २ | इजलास नं. १४ | २ |
| इजलास नं. ४ | २ | इजलास नं. १५ | १ |
| इजलास नं. ५ | ७ | | |
| इजलास नं. ६ | ३ | | |
| इजलास नं. ७ | १२ | | |
| इजलास नं. ८ | २ | | |
| इजलास नं. ९ | ३ | | |
| जम्मा | ४५ | जम्मा | ३३ |

कूल जम्मा

४५ + ३३ = ७८

नेपाल कानून पत्रिका

मा प्रकाशित भएका फैसलाहरू (२०१५ सालदेखि
हालसम्म)

हेर्न, पढ्न तथा सुरक्षित गर्न

www.nkp.gov.np

मा जानुहोला ।

खोज्ने तरिका

सर्वप्रथम www.nkp.gov.np लगइन गरेपश्चात् गृहपृष्ठमा देखिने शब्दबाट फैसला खोज्नुहोस् भन्ने स्थानमा आफूले खोज्न चाहेअनुसारको कुनै शब्द नेपाली युनिकोड फन्टमा टाइप गर्नुहोस् । यसबाट खोजेअनुसारको फैसला प्राप्त गर्न नसकेमा वेबसाइटको दोस्रो शीर्षकमा रहेको वृहत् खोज खोलेर विभिन्न किसिमले फैसला खोज्न सकिनेछ । त्यस अतिरिक्त नेकाप प्रत्येक वर्ष र हाफ्रो बारेमा समेत हेर्न सक्नुहुनेछ ।

यस पत्रिकाको इजलाससमेतमा उद्धरण गर्नुपर्दा निम्नानुसार गर्नुपर्नेछ:

सअ बुलेटिन, २०७०...., ... - १ वा २, पृष्ठ

(साल) (महिना)

उदाहरणार्थ: सअ बुलेटिन, २०७५, मङ्सिर - १, पृष्ठ १

सर्वोच्च अदालतलगायत मातहतका अदालतहरू एवम् अन्य न्यायिक निकायहरूका कामकारवाहीसँग सेवाग्राहीहरूको कुनै गुनासो, उजुरी र सुझाव भए सर्वोच्च अदालत, प्रधानन्यायाधीशको निजी सचिवालयमा रहेको

Toll Free Number

१६६०-०१-३३३-५५

वा

इमेल ठेगाना

cjs@supremecourt.gov.np

मा सम्पर्क गर्न सकिने छ ।

विषयसूची

| क्र.सं. | विषय | पक्ष / विपक्ष | पृष्ठ |
|----------------------|---|---|----------------|
| पूर्ण इजलास | | | १ - २ |
| १. | निर्णय दर्ता बदर दर्ता | दीपकबहादुर पाण्डे वि. महेश पराजुली | |
| संयुक्त इजलास | | | २ - ८ |
| २. | ज्यान मार्ने उद्योग | नेपाल सरकार वि. राकेश शेर्मा लिम्बुसमेत | |
| ३. | ज्यान मार्ने उद्योग | नेपाल सरकार वि. प्रेमलाल धितालसमेत | |
| ४. | कर्तव्य ज्यान | सूर्यमान चेपाङ वि. नेपाल सरकार | |
| ५. | बढुवाको झुठ्ठा प्रमाणपत्र पेस गरी भ्रष्टाचार गरेको | उत्तरा घिमिरे वि. नेपाल सरकार | |
| ६. | उत्प्रेषण / परमादेश | केशवराज पौडेलसमेत वि. शिक्षा मन्त्रालय, काठमाडौंसमेत | |
| ७. | उत्प्रेषण / परमादेश | उमेश साह वि. जनकपुर न.पा. को कार्यालय, जनकपुरसमेत | |
| ८. | उत्प्रेषण | केदारनाथ दाहाल वि. नेपाल विद्युत् प्राधिकरण, प्र.का. दरबारमार्गसमेत | |
| इजलास नं. १ | | | ८ - ९ |
| ९. | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. विश्वनाथ महतो | |
| १०. | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. खगीराम रामजाली घर्तीमगर | |
| इजलास नं. २ | | | ९ - ११ |
| ११. | अंशबन्डा | भविलाल सापकोटा वि. दिनकला सापकोटासमेत | |
| १२. | कर्तव्य ज्यान | सूर्यबहादुर कार्की वि. नेपाल सरकार | |
| इजलास नं. ३ | | | ११ - १२ |
| १३. | संशोधनतर्फ छुट्याई पाउँ | बासुदेव मण्डल वि. उपेन्द्र नारायण मण्डल | |
| १४. | दूषित दर्ता बदर दर्ता | खैरुन निशा वि. अनिलकुमार श्रीवास्तव | |
| इजलास नं. ४ | | | १२ - १३ |
| १५. | वैदेशिक रोजगार कसुर | नेपाल सरकार वि. योगेन्द्र साहसमेत | |
| १६. | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. प्रशन्नमान श्रेष्ठसमेत | |
| इजलास नं. ५ | | | १३ - १८ |
| १७. | कर्तव्य ज्यान | प्रवेश गुरुङसमेत वि. नेपाल सरकार | |
| १८. | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. दोर्णबहादुर महरा | |
| १९. | जालसाज | शिव मादेन वि. गंगामाया मादेन | |
| २०. | भ्रष्टाचार | नेपाल सरकार वि. खगेन्द्रप्रसाद भट्टराईसमेत | |
| २१. | उत्प्रेषण | कर्णबहादुर कुँवर वि. गृह मन्त्रालय, सिंहदरबारसमेत | |

| | | |
|--------------------|---------------------------|--|
| इजलास नं. ६ | | १८ - २१ |
| २२. | कर्तव्य ज्यान र कुटपिट | कारसाड वाइवा तामाड वि. नेपाल सरकार |
| २३. | कर्तव्य ज्यान | कालुराम भन्ने विरबहादुर तामाड वि. नेपाल सरकार |
| २४. | कर्तव्य ज्यान | दिलचन राना वि. नेपाल सरकार |
| इजलास नं. ७ | | २१ - २९ |
| २५. | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. कर्णबहादुर वि.क.समेत |
| २६. | जबरजस्ती करणी र डाँका | नेपाल सरकार वि. उस्मान मियाँसमेत |
| २७. | हातहतियार खरखजाना | नेपाल सरकार वि. खुसीराम चौधरी |
| २८. | अंश चलन | नरेन्द्रेश्वरी श्रेष्ठसमेत वि. प्रदिपकुमार श्रेष्ठ |
| २९. | उत्प्रेषण / परमादेश | हुसेन मियाँ वि. भूमिसुधार कार्यालय, मोरङ, विराटनगरसमेत |
| ३०. | उत्प्रेषण / परमादेश | ओमकुमार दाहाल वि. नेपाल राष्ट्र बैंक, बालुवाटारसमेत |
| ३१. | कर्तव्य ज्यान र चोरी | नेपाल सरकार वि. अनु भन्ने अमर कार्कीसमेत |
| ३२. | लागु औषध (अफिम) | रतनबहादुर शाही वि. नेपाल सरकार |
| ३३. | मानव अपहरण तथा शरीर बन्धक | नेपाल सरकार वि. नवराज पराजुलीसमेत |

| | | |
|---------------------|------------------------------|---|
| ३४. | स्ववासी जग्गा दर्ता | दिनेश नेपाली वि. मालपोत कार्यालय, कलंकीसमेत |
| इजलास नं. ८ | | २९ - ३१ |
| ३५. | कर्तव्य ज्यान | कुलवीर भन्ने कुलबहादुर राना मगर वि. नेपाल सरकार |
| ३६. | कर्तव्य ज्यान | कालेनी भन्ने शर्मिला पुनमगर वि. नेपाल सरकार |
| इजलास नं. ९ | | ३१ - ३४ |
| | कर्तव्य ज्यान | डम्बरबहादुर खड्का वि. नेपाल सरकार |
| ३७. | अंश दर्ता | मिनादेवी कुर्मीसमेत वि. संगीता कुमारी |
| ३८. | कर्तव्य ज्यान | यादव चन्द्र राई वि. नेपाल सरकार |
| इजलास नं. १० | | ३५ - ३९ |
| ३९. | उत्प्रेषण | गगनदेव राय यादव वि. रामऔतार महारा चमारसमेत |
| ४०. | ठगी | नेपाल सरकार वि. वीरेन्द्रबहादुर थापासमेत |
| ४१. | हक कायम रैकर परिणत दर्तासमेत | सानुभाई महर्जन वि. रामलाल महर्जन |
| ४२. | करारबमोजिम गरिपाउँ | विष्णुप्रसाद पौडेल वि. ताराप्रसाद भट्टराई |
| ४३. | कर्तव्य ज्यान | हरेन्द्र सहनी वि. नेपाल सरकार |

| | | | | | |
|---------------------|--|--|--|-----|--|
| इजलास नं. ११ | | ३९ - ४३ | | | |
| ४४. | घर भत्काई खिचोला मेटाई चलन | सदाम हुसेन अन्सारी वि. अमरोदिन मियाँसमेत | | ५३. | जग्गा दर्ता प्रचण्डकुमार बस्नेत वि. पन्नादेवी भट्ट |
| ४५. | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. अमितकुमार देव | | ५४. | उत्प्रेषण / परमादेश विपिन हाडा वि. काठमाडौं जिल्ला अदालत, बबरमहलसमेत |
| ४६. | निषेधाज्ञा | शत्रुधनप्रसाद ठाकुरसमेत वि. जीवनारायण साह | | ५५. | लागु औषध नेपाल सरकार वि. कमल घिमिरेसमेत |
| ४७. | उत्प्रेषण | सीतेश्वर सिंह वि. निजामती किताबखाना, हरिहरभवनसमेत | | ५६. | उत्प्रेषण रविता पोखरेल वि. उच्च अदालत, पोखरासमेत |
| इजलास नं. १२ | | ४३ - ५२ | | ५७. | उत्प्रेषण / परमादेश गजेन्द्रकुमार श्रेष्ठसमेत वि. पुनरावेदन अदालत, पाटनसमेत |
| ४८. | जग्गा खिचोला मेटाई हक कायम गरिपाउँ | मिनराज ढुङ्गाना वि. काशीप्रसाद जोशीसमेत | | ५८. | उत्प्रेषण / परमादेश पुष्पबहादुर अर्याल वि. क्षेत्रबहादुर शाहीसमेत |
| ४९. | उत्प्रेषण | गणेशप्रसाद साहसमेत वि. पुनरावेदन अदालत, राजविराजसमेत | | ५९. | उत्प्रेषण / परमादेश प्रमिला मण्डल वि. महोत्तरी जिल्ला अदालतसमेत |
| इजलास नं. १३ | | ५२ - ५६ | | ६०. | उत्प्रेषण / परमादेश रामेश्वरी के.सी. ढुङ्गाना वि. नेपाल सरकार, अर्थ मन्त्रालय, सिंहदरबारसमेत |
| ५०. | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. जयप्रताप थापासमेत | | ६१. | लिखित दर्ता बदर दर्ता श्रीमती गोदावरी देवीसमेत वि. हरेन्द्रप्रसाद केशरी |
| ५१. | कर्तव्य ज्यान (साधक) | नेपाल सरकार वि. गोविन्दप्रसाद नेम्वाङ | | ६२. | निषेधाज्ञा धनबहादुर घिमिरे वि. नवराज खत्री (पौडेल) समेत |
| ५२. | कर्तव्य ज्यान (साधक) | नेपाल सरकार वि. पवन परियार | | ६३. | कर्तव्य ज्यान शम्भु चन्द्रवंशी वि. नेपाल सरकार |

| | | |
|---------------------|------------------------------------|------------------------------------|
| ६४. | अपहरण गरी ज्यान मारने उद्योग | रामकुमार कार्की वि. नेपाल सरकार |
| ६५. | जबरजस्ती करणी | अशोककुमार देउला वि. नेपाल सरकार |
| इजलास नं. १४ | | ५६ - ५९ |
| ६६. | जबरजस्ती करणी | नेपाल सरकार वि. उमेश चौधरीसमेत |

| | | |
|---------------------|---|---|
| ६७. | कर्तव्य ज्यान | भुपाल दाहालसमेत वि. नेपाल सरकार |
| इजलास नं. १५ | | ५९ - ६० |
| ६८. | दूषित दर्ता निर्णय बदर दर्ता हक कायमसमेत | बखतमान सिंह बस्नेत वि. धनकुमारी बस्नेत |

पूर्ण इजलास

मा.न्या.श्रीसारदाप्रसाद घिमिरे, मा.न्या.श्रीबमकुमार श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री टंकबहादुर मोक्तान, ०७०-NF-०००८, निर्णय दर्ता बद्र दर्ता, दीपकबहादुर पाण्डे वि. महेश पराजुली

विवादको साबिक कि.नं. ७० को क्षेत्रफल ५-१२-०-० को जग्गा २०२१ सालमा नापी हुँदा फिल्डबुकमा जग्गाधनीको नाम, थर र वतन तथा विरहमा समेत पर्ती जनिएको देखिन्छ। सो बेहोराबाट वादीले दाबी गरेजस्तो उक्त जग्गा निजले तथा निजको पति रामचन्द्र पराजुलीले भोगचलन गरेको भन्ने देखिँदैन। उक्त जग्गा आफ्नो भोगचलनमा रहेको भए नापीको समयमा नै आफ्नो नाममा नापी गराउनु पर्नेमा सो गराउन सकेको नदेखिएको र नापी हुन छुट भएको भए पनि समयमा उपचार खोज्नु पर्नेमा कहींकतै उजुर गरेको भनी दाबी गर्न सकेको देखिँदैन। २०२१ सालमा भएको नापीमा आफ्नो नाममा नापी गराउन नसकेको र २०४३ सालको नापीमा मात्र निजले उक्त जग्गा आफ्नो भनी दाबी गरेको देखिने।

कि.नं. ७० को जग्गाको १९७४ सालको केदारेश्वर महादेव गुठीको लगत रहेको हुँदा गुठीको नाममा दर्ता कायम गरिदिनु भनी गुठी संस्थानले लेखी पठाएको आधारमा मालपोत कार्यालय, काठमाडौंको मिति २०३५।८।७ को निर्णयअनुसार उक्त जग्गा गुठीको नाममा दर्ता भई जग्गाधनी दर्ता स्वेस्तासमेत कायम भएको देखिएको र सो सम्बन्धमा वादीले समयमा कुनै दाबी तथा कतै उजुर गरेको अवस्था देखिँदैन। वादीले दाबी गरेजस्तो उक्त जग्गा आफ्नो भोगचलनमा रहेको भए २०२१ सालको नापीमा आफ्नो नाममा नापी गराउनु पर्ने र २०३५ सालको मालपोत कार्यालयको निर्णयउपर उचित समयमा सम्बन्धित निकायमा उजुर

गरी कारबाही चलाउनु पर्नेमा सो गरेको नदेखिनका साथै त्यस्तो प्रयास गरेको भन्ने भनाइसमेत रहेको नदेखिने।

वादी दाबीको कि.नं. ८२ को क्षेत्रफल १-५-०-० भएको जग्गा साबिक कि.नं. ७० को भएकोमा विवाद रहेको देखिएन। उक्त कि.नं. ७० को जग्गाको गुठीको नामको १९७४ को लगत रहेको तथा २०२१ सालको नापीको फिल्डबुकमा उक्त कि.नं. ७० को जग्गा पर्ती जनिएको आधारमा केदारेश्वर महादेव गुठीको नाममा कायम हुने गरी मिति २०३५।८।७ मा मालपोत कार्यालयबाट भएको निर्णयउपर वादीले समयमा फिराद गरी उक्त जग्गा आफ्नो हो भनी दाबी गर्न नसकेको र हाल लामो समयपश्चात् फिराद गर्दासमेत उक्त जग्गा आफ्नो भएको भन्ने ठोस प्रमाण पेश गर्न सकेको नदेखिने।

जग्गाको विषयमा विवाद उठेको अवस्थामा आफ्नो हो भनी दाबी गर्नेले उक्त जग्गा आफ्नो भएको तथ्यसहित ठोस प्रमाण पेश गर्न सक्नुपर्ने हुन्छ। वादी दाबीलाई पुष्टि गर्न सक्ने लिखत प्रमाणको अभावमा जग्गाको हक कायम हुनसक्ने अवस्था हुँदैन। वादीले दाबी गरेको कि.नं. ८२ को मूलस्रोतको रूपमा रहेको साबिकको कि.नं. ७० को जग्गा पूरै कित्ता केदारेश्वर महादेव गुठीको नाममा दर्ता कायम हुने गरी मालपोत कार्यालयबाट २०३५ सालमा भएको निर्णयउपर कहींकतै उजुर नपरी उक्त निर्णय हालसम्म यथावत् रहेको देखिँदा ठोस प्रमाणको अभावमा उक्त वादी दाबीको जग्गा वादीको हो भन्न सकिने अवस्था नदेखिने।

अतः उल्लिखित तथ्य एवम् आधार प्रमाणबाट वादी दाबीको कि.नं.८२ को १-५-२-० जग्गा वादीका नाममा दा.खा. दर्तासमेत हुने ठहर गरी यस अदालतको संयुक्त इजलासबाट मिति २०६६।१।१९ मा भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा उल्टी भई दाबीको जग्गा वादीको हकभोगको रहेको

भन्ने प्रमाणित हुन नसकेको हुँदा वादी दाबी पुग्न नसक्ने ठहर्‍याई सुरु काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट मिति २०५२।८।२८ मा भएको फैसला सदर हुने ठहर गरी पुनरावेदन अदालत, पाटनबाट मिति २०५७।५।५ मा भएको फैसला सदर हुने।

इजलास अधिकृत: दुर्गाप्रसाद खनाल

कम्प्युटर: रामशरण तिमिल्सिना

इति संवत् २०७५ साल भदौ १४ गते रोज ५ शुभम्।

संयुक्त इजलास

१

स.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.श्री जगदीश शर्मा पौडेल, ०७०-CR-०५५१, ज्यान मार्ने उद्योग, नेपाल सरकार वि. राकेश शेर्मा लिम्बुसमेत

प्रतिवादीको बयान र पीडितको भनाई हेर्दा यिनै प्रतिवादीले पीडितलाई अघिल्लो दिनको विवादको विषयलाई लिएर बाँसको लड्डीले प्रहार गरेको तथ्यमा विवाद देखिएन। कुटपिट गरेको तथ्यमा प्रतिवादी राकेश शेर्माको स्वीकारोक्ति देखिएको छ। ज्यान मार्नेसम्मको पूर्वरिसइवी रहेको थियो भन्ने पुनरावेदन जिकिर रहेकोमा अघिल्लो दिन अपरिचित सुस्त मनस्थितिका व्यक्तिलाई यी प्रतिवादीसमेतले कुटपिट गरेको विषयमा पीडितले त्यसो गर्नु हुँदैन भन्नेसम्मको प्रतिवाद गरेको विषयमा प्रस्तुत वारदात भएको दाबी लिएर पनि यी प्रतिवादीहरूले पीडितलाई मार्ने पर्नेसम्मको रिसइवी र मनसाय रहेको भन्ने अन्य पेस भएका प्रमाणबाट स्थापित नदेखिने।

पीडित र प्रतिवादीहरूको अगाडिको सामान्य वादविवादको विषयलाई लिएर पीडितलाई आक्रमण गरिनु केवल सामान्य प्रतिशोध रहेको कुरा बाँसको लड्डीले प्रहार गरेको परिस्थितिबाट देखिएको र ज्यान मार्ने उद्देश्यले प्रहार गरेको भन्ने वादी पक्षको अनुमानबाहेक केही देखिँदैन। अनुमानलाई पुष्टि गर्ने

अन्य परिस्थितिजन्य प्रमाण केही नदेखिँदा केवल शंकाको भरमा दोषी ठहर गरिनु हुँदैन भन्ने फौजदारी कानूनको सर्वमान्य सिद्धान्तबमोजिम समेतबाट ज्यानै मार्ने उद्देश्य प्रतिवादीहरूले लिएका रहेछन् भनी मान्न नमिल्ने।

प्रस्तुत मुद्दाको वारदात र तेस्रो पक्षको उपस्थितिका कारण पीडितको ज्यान बच्न गएको भन्ने तथ्ययुक्त प्रमाणको विद्यमानता पनि नरहेको र प्रतिवादीहरूले बाँसको लड्डीले हानेपछि म पल्टिएको र साथीहरूले उपचारका लागि लगेको भन्ने पीडितको मौकाको कागजबाट देखिएकोमा तेस्रो पक्षको उपस्थितिबाट पीडित बच्न सफल भएको भन्ने अवस्थाको विद्यमानता नदेखिएबाट पुनरावेदनको फैसला उल्टी गरी प्रतिवादीहरूलाई सजाय हुनुपर्दछ भन्ने पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

वारदातका रूप र प्रकृतिअनुसार मुलुकी ऐन, कुटपिटको महलको १ नं. ले परिभाषित गरेको कसैले कसैलाई हातहतियार उठाई वा अरु कुनै प्रकारको रगतपछे वा चोट अङ्गभङ्ग पारेमा वा जिउमा अरु पीडा नोक्सान हुने काम गरेमा कुटपिट गरेको ठहर्छ भनी कसुर कायम गरिएको कानूनी व्यवस्थासम्म आकृष्ट हुने देखिँदा कुटपिट वारदात कसुरका सम्बन्धमा छुट्टै कानूनी व्यवस्था रहेकोमा तदनुसार प्रस्तुत वारदात विषयमा सोही कानूनी व्यवस्थासम्म आकृष्ट हुन सक्ने अवस्था विद्यमान रहेको र प्रतिवादीहरूले प्रदर्शन गरेको सामान्य सेखी, सनक र लहडको भरमा पीडितलाई कुटपिट गरी पीडा पुर्‍याउने उद्देश्य र मनसायबाट सो वारदात घटना घटित भएको देखिँदा र ज्यान मार्नेसम्मको काम पनि भई नसकेको र सो घटनामा पीडितको ज्यान लिनुपर्नेसम्मको मनसाय तत्त्व रहे भएको कुरा प्रमाणित हुन सक्ने ठोस आधार र तथ्ययुक्त प्रमाणको विद्यमानता नरहेको ठहर गरी पुनरावेदन अदालत, इलामबाट भएको फैसला मनासिब नै देखिन आउने।

तसर्थ पीडितलाई मार्नेसम्मको मनसाय तत्त्वको विद्यमानता र तेस्रो पक्षको हस्तक्षेपका कारणबाट मात्रै पीडित बच्न सफल भएको भन्ने नदेखिएका आधारबाट प्रतिवादीहरूले ज्यान मार्ने उद्योगतर्फ सफाइ पाउने र कुटपिटको वारदात स्थापित भएकोले सरकारी मुद्दासम्बन्धी ऐन, २०४९ को दफा २७ बमोजिम सरोकारवालाले सकार गरेमा यसै मिसिलबाट कारबाही किनारा गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत, इलामबाट मिति २०६९।१२।१२ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: ईश्वरीप्रसाद भण्डारी

कम्प्युटर: रामशरण तिमिल्सिना

इति संवत् २०७४ साल वैशाख १३ गते रोज ४ शुभम्।

२

स.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.श्री जगदीश शर्मा पौडेल, ०७२-CR-०२०८, ज्यान मार्ने उद्योग, नेपाल सरकार वि. प्रेमलाल धितालसमेत

घाजाँचकेसफारामरवारदातकोअवस्थालाई हेर्दा पीडितलाई मार्न चाहेका भए प्रतिवादीहरूले जे पनि गर्न सक्ने अवस्थामा पीडितलाई मार्ने नै मनसाय थियो भनी भन्न मिल्ने देखिँदैन। पीडितको मौकाको कागज, अदालतसमक्षको बकपत्र एवम् प्रत्यक्षदर्शीको भनाइअनुसार खुकुरी चक्कु लाठीले प्रहार गरेको भए पीडितको शरीर गम्भीर घा चोटहरू हुने र प्रतिवादीहरूले चक्कु खुकुरी र केही प्रतिवादीहरूले लाठीले प्रहार गरेको भन्ने अभियोग दाबीलाई घाउ जाँच केस फारामबाट समर्थित भएको नदेखिँदा मार्ने नै मनसायले पीडितलाई आक्रमण गरेको भन्ने पुनरावेदन जिकिर समर्थित हुन सकेको नदेखिने।

जाहेरवालासमेतलाई प्रहार गर्न लागेकोले भागी प्रहरीलाई खबर गर्न गएको, फर्की आउँदा पीडित कराएको भन्ने जाहेरवालाको भनाई रहे पनि पीडितले आफूलाई प्रतिवादीहरूले कुटपिट गरी खोलामा फाली दिएका र आफू कराएपछि मानिसहरू

आई अस्पताल लगेको भन्ने पीडित स्वयम्को भनाई रहेकोमा प्रतिवादीहरूले तेस्रो पक्षको हस्तक्षेप भएपछि भागेको भन्ने कुरा पुष्टि नभई प्रतिवादीहरूले कुटपिट गरी फालिदिएपछि मात्रै तेस्रो पक्षको उपस्थिति देखिएको कुरा पीडित स्वयम्को भनाई र जाहेरी दरखास्तसमेतबाट पुष्टि भइरहेको मिसिल संलग्न प्रमाणबाट तथ्य स्थापित हुन आएको अवस्थामा तेस्रो पक्षको उपस्थितिका कारण प्रतिवादीहरू भागेको भन्ने पुनरावेदन जिकिर पुष्टि हुन सकेको नदेखिँदा सोतर्फको पुनरावेदन जिकिरसमेत खण्डित भइरहेको देखिने।

पीडितको मौकाको कागज जाहेरीसमेतबाट खुकुरी चक्कु लाठीको प्रहार भएको भन्ने देखिए पनि घाउचोटको प्रकृति हेर्दा खुकुरी प्रयोग भएको भए अझै जोखिमी प्रकृतिका घा चोटको विद्यमानता हुनेमा सो नदेखिएको पीडितउपर कुटपिटको वारदात स्थापित भएको अवस्था र ज्यान मार्ने उद्योगको कसुर स्थापित हुनका लागि पहिलो पीडित प्रतिवादीबीच रिसइवी रही सोअनुसार मार्ने मनसाय राखी योजना बनाई ज्यान मार्ने तयारी गरी प्रहार गरेको हुनुपर्ने त्यसपछि दोस्रोमा तेस्रो पक्षको हस्तक्षेपबाट पीडित बाँच्न सफल भएको हुनुपर्ने वा कसुरदारहरूलाई परास्त गरी बचाएको हुनुपर्ने अवस्था प्रस्तुत मुद्दामा देखिएन। तसर्थ उपर्युक्त दुई आधारको विद्यमानताको अभावमा ज्यान मार्ने उद्योगतर्फको कसुर ठहर नगरी मुलुकी ऐन, कुटपिटको महलबमोजिम कुटपिटको वारदात भएको ठहर गरी भएको फैसला मनासिबै देखिन आउने।

तसर्थ मौकाको निवेदन र जाहेरी दरखास्तमा पीडितलाई पूर्वरिसइवी लिई साँझको समयमा कुटपिट गरी ज्यान मार्नेसम्मको कार्य गरेको भन्ने अभियोग दाबी पुष्टि हुन नसकी यी पीडितलाई कुटपिट गरेको अवस्था घा जाँच केस फारामसमेतबाट देखिँदा सरकारी मुद्दासम्बन्धी ऐन, २०४९ को दफा २७ बमोजिम प्रस्तुत वारदात कुटपिटमा परिणत गरी जाहेरवालाले सकार गरेमा यसै मिसिलबाट कारबाही गर्ने गरी

पुनरावेदन अदालत, जुम्लाबाट मिति २०७१।८।२२
मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।
इजलास अधिकृत: ईश्वरीप्रसाद भण्डारी
कम्प्युटर: रामशरण तिमिल्सिना
इति संवत् २०७४ साल वैशाख १३ गते रोज ४ शुभम् ।

३

**स.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.श्री
केदारप्रसाद चालिसे, ०७१-CR-००८५, कर्तव्य
ज्यान, सूर्यमान चेपाङ वि. नेपाल सरकार**

आफ्नो श्रीमती र भाइबीच करणी लिनुदिनु
गरेको देखेको स्थितिमा श्रीमतीलाई लखेटेको तर
करणि गर्ने भाइ रक्सी खाई मातिएको अवस्थामा
घरमै रहेको अवस्थामा भाइलाई केही नगरेको भन्ने
भनाईलाई विश्वास गर्न लायक देखिएन । आफ्नै
श्रीमतीलाई भाइले करणी गरेको देखेपछि प्रतिवादी
तत्काल आवेशमा आई रक्सीले मातेकोले भाग्न
नसकेको मृतक भाइलाई समाती डोरीले घाँटी, कम्मर
तथा हातखुट्टासमेतमा बाँधी भन्दा र दलिनमा
बाँधेको कारणबाट मृतकको मृत्यु भएको स्थिति
देखिन्छ । प्रतिवादीले घटनास्थलबाट भागेकी
श्रीमतीलाई लखेटेको र भेटेको भए श्रीमतीमाथि
समेत आक्रमण गर्नसक्ने अवस्था देखिएबाट भाइलाई
केही नगरेको भन्ने प्रतिवादीको भनाई युक्तिसङ्गत
नदेखिने ।

मृतकलाई घाँटीमा डोरीले बाँधी झुण्ड्याएमा
मानिस मर्नसक्छ भन्ने प्रतिवादीलाई जानकारी हुँदाहुँदै
त्यस्तो कार्य गरेबाट प्रस्तुत वारदातमा आपराधिक
कार्य र मनसाय दुवै स्पष्ट प्रमाणित भइरहेको अवस्था
देखिन्छ । प्रस्तुत वारदात परिवारभित्र भएकोले नै
प्रतिवादीलाई बचाउनको लागि भाइ जाहेरवाला
आशिष चेपाङ र श्रीमती लालकुमारीले मृतक आफैँ
झुण्डिएको भन्ने बेहोराको अदालतमा बकपत्र गरे
पनि सो बकपत्रलाई अन्य प्रमाण एवम् घटनाक्रमले

समर्थन गरेको देखिँदैन । घटनास्थल प्रकृति मुचुल्का
हेर्दा लासलाई जुन प्रकारले घाँटी, हातखुट्टा र
कम्मरसमेतमा बाँधी घरको दलिनमा झुण्ड्याइएको
अवस्थासमेतले प्रस्तुत वारदात मृतक स्वयम् आफैँले
आत्महत्या गरेको भन्ने प्रस्ट नहुने ।

तसर्थ: प्रतिवादीले अदालतमा गरेको बयान,
जाहेरवाला तथा घटनास्थल प्रकृति मुचुल्कामा
बस्ने व्यक्तिहरूले अदालतमा गरेको बकपत्रसमेतका
आधारमा मात्र प्रतिवादीले आरोपित कसुर गरेको
होइन भनी विश्वास गर्नसक्ने अवस्था देखिएन ।
रक्सीको नसामा रहेको मृतकलाई डोरीले घाँटी,
हातखुट्टासमेतका शरीरको विभिन्न ठाउँमा बाँधी
दलिनमा र भन्दासमेत बाँधी झुण्ड्याउँदा मानिस
मर्नसक्ने कुराको जान्दाजान्दै पनि सो कार्य गरी
मृतकको मृत्यु भएको देखिएकोले प्रस्तुत वारदातलाई
मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं.
अन्तर्गत कसुर कायम गरी प्रतिवादीलाई सर्वस्वसहित
जन्मकैदको सजाय गरेको चितवन जिल्ला अदालतको
फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालत, हेटौँडाको
मिति २०७०।११।१३ को फैसला मिलेकै देखिँदा
सदर हुने ।

प्रतिवादीले आफ्नै श्रीमती र भाइबीच करणी
लेनदेन भइरहेको अवस्थामा फेला पारेपछि तत्काल
आवेशमा आई कुनै योजना तयारीको अभावमा
तत्कालै उठेको रिस थाम्न नसकी आफ्नै श्रीमतीसँग
करणि गर्ने भाइ सुमन चेपाङलाई समाती डोरीले घाँटी,
हातखुट्टालगायत शरीरका विभिन्न स्थानमा बाँधी
दलिनमा झुण्ड्याई भन्दासमेतमा बाँध्दा मर्छ भन्ने
कुरा जान्दाजान्दै पनि डोरी कस्सिन गई मृत्यु भएको
अवस्था देखिए तापनि मृतकबाट भएको गल्तीको
कारण वारदात हुन गएको देखिँदा यी प्रतिवादी सुमन
चेपाङलाई सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय चर्को पर्ने
देखिँदा ७ वर्ष मात्र सजाय गर्न पुनरावेदन अदालत,

हेटौंडाले व्यक्त गरेको रायसमेत सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: विदुर काफ्ले

कम्प्युटर: रामशरण तिमिल्सिना

इति संवत् २०७३ साल कात्तिक २९ गते रोज २ शुभम् ।

४

स.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.श्री मीरा खड्का, ०७०-CR-११७८, बढुवाको झुठ्ठा प्रमाणपत्र पेस गरी भ्रष्टाचार गरेको, *उत्तरा घिमिरे वि. नेपाल सरकार*

प्रतिवादी उत्तरा घिमिरेको नामको उक्त प्रमाणपत्र अनुसन्धानको क्रममा अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगबाट उच्च माध्यमिक शिक्षा परिषद् भक्तपुरमार्फत सम्बन्धित बोर्डमा प्रमाणीकरणको लागि पठाइएकोमा उक्त परिषद्मार्फत भारत पटनाको बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्डबाट निज प्रतिवादी उत्तरा घिमिरेको उक्त मध्येमा परीक्षा उत्तीर्ण गरेको भनिएको सन् १९९० क्रमाङ्क ४२१।३५६ को शैक्षिक योग्यताको प्रमाण पत्रका सम्बन्धमा कैफियत महलमा "T.R. मे उक्त क्रमाङ्क अंकित नही है" भन्ने बेहोरा उल्लेख भई आएको मिसिल संलग्न विवरणबाट देखिन्छ । साथै प्रतिवादीले उक्त परीक्षा द्वितीय श्रेणीमा उत्तीर्ण गरेको भन्ने दाबी लिई निवेदनसाथ विशेष अदालतमा पेस गरेको प्रमाणका सम्बन्धमा विशेष अदालतबाट पुनः प्रमाणीकरणको लागि उच्च माध्यमिक शिक्षा परिषद्मा लेखी पठाएको देखिन्छ । सो प्रमाणपत्रका सम्बन्धमा उच्च माध्यमिक शिक्षा परिषद्, सानोठिमी भक्तपुरको च.नं.१४८४ मिति ०६५।११।११ को पत्रबाट "४२१।३५६।१९९० इस कोड क्रमाङ्क में कार्यालय, अभिलेख (T.R.) इस छात्राका नाम एवम् क्रमाङ्क प्रिन्ट नहीं है प्रेषित पत्रकी छायाँप्रति पत्राङ्क ८९७ दिनाङ्क ०६।४।०७ जाँच के क्रम में गलत पाया गया है" भनी उल्लेख गरी प्रमाणपत्र प्रमाणीकरण भई आएको देखिन्छ । यसरी पटकपटक प्रमाणीकरणको लागि पठाउँदासमेत उक्त शैक्षिक योग्यताका प्रमाणपत्रहरू

साँचो बेहोराको नभएको भनी सम्बन्धित बोर्डबाट नै लेखी आएको देखिँदा उक्त प्रमाणपत्र सक्कली हो भन्ने पुनरावेदन जिकिर खण्डित भएको देखिने ।

प्रमाणपत्रबाट कुनै लाभ नलिएको भन्ने पुनरावेदक प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकिर मनासिब नदेखिनुको अतिरिक्त पेस गरिएका प्रमाणपत्रबाट कुनै फाइदा वा सुविधा लिएको वा नलिएको भए पनि नक्कली प्रमाणपत्र पेस गर्नु नै भ्रष्टाचारजन्य कसुर हुन जाने देखिएकोले पुनरावेदकको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

पुनरावेदक प्रतिवादीले आफूले उत्तीर्ण गरेको भनिएका पूर्वमध्यमा तहको शैक्षिक योग्यताको प्रमाणपत्र २०५३ सालमा पेस गरेको भन्ने मिसिलबाट देखिएको र विवादित प्रमाणपत्रका सम्बन्धमा अनुसन्धान गर्न मिति २०६१।६।२८ मा अनुसन्धान अधिकृत तोकी अनुसन्धान तहकिकात सुरु गरी मिति २०६३।५।१३ मा निजउपर अभियोगपत्र दायर भएको देखिएकोले साबिक भ्रष्टाचार निवारण ऐन, २०१७ को दफा २४क बमोजिम अनुसन्धानको कारबाही सुरु भएको मितिले २ वर्षभित्र नै मुद्दा दायर भएको देखिँदा कसुर हुँदाका बखत प्रचलनमा रहेको साबिक भ्रष्टाचार निवारण ऐन, २०१७ बमोजिम सजाय हुने गरी विशेष अदालतबाट भएको फैसला अन्यथा भन्न नमिल्ने ।

अतः उल्लिखित आधार र प्रमाणहरूबाट पुनरावेदक प्रतिवादी उत्तरा घिमिरेलाई साबिक भ्रष्टाचार निवारण ऐन, २०१७ को दफा १२ को कसुरमा सोही ऐनको दफा १२ र २९(२) बमोजिम रु. ५००।- (पाँच सय) जरिवाना हुने ठहर गरी विशेष अदालतबाट मिति २०७०।४।३० मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: दिलिपराज पन्त

कम्प्युटर: विकेश गुरागाई

इति संवत् २०७३ साल साउन ३१ गते रोज २ शुभम् ।

यसै लगाउको निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैअनुसार

फैसला भएका छन्:

- ०६८-CR-०४५७, भ्रष्टाचार (न.प्र.प.), रामभक्त ठकुरी वि. नेपाल सरकार
- ०७०-CR-१४३१, राष्ट्र सेवकको पदमा बढुवा पाउनको लागि झुठ्ठा (नक्कली) शैक्षिक प्रमाणपत्र पेस गरी भ्रष्टाचार गरेको, जनकबहादुर कार्की वि. नेपाल सरकार

५

स.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा, ०६९-WO-०३७७, उत्प्रेषण / परमादेश, केशवराज पौडेलसमेत वि. शिक्षा मन्त्रालय, काठमाडौंसमेत

निवेदकद्वय केशवराज पौडेल र देवेन्द्रराज ठकुरी बुढानिलकण्ठ स्कुलमा शिक्षक तथा अभिभावक नै रहेको देखिएको हुँदा त्यस स्कुलसँग सार्थक सरोकार (Meaningful Relation) भएको पाइयो। शिक्षकको सम्बन्ध समग्र स्कुलको हिततर्फ ध्यानाकर्षण हुने नै हुन्छ। त्यस्तै अभिभावकको पनि आफ्ना सन्तानको भविष्यलाई विचार गर्दै स्कुलको स्तरतर्फ ध्यानाकर्षण हुनु स्वाभाविक हो। तसर्थ: विपक्षीहरूले उठाएको रिट निवेदकहरूलाई निवेदन दिने हकदैया नभएको भन्ने भनाइसँग सहमत हुन नसकिने।

एउटा व्यक्तिले कुनै पदको विज्ञापनमा आफ्नो योग्यता भएसम्म दरखास्त पेस गर्न पाउने हक संविधान र कानूनले सुरक्षित गरेकोले दरखास्त पेस गर्न र योग्यता पुगेसम्म नियुक्ति पाउन सक्ने कुरामा अन्यथा हुँदैन, तर नियुक्ति गर्ने कामको लागि गठन गरिएको व्यवस्थापन समितिमा समेत आफैं रहेर पुनः आफ्नो नियुक्ति गर्नुचाहिँ वास्तवमा प्राकृतिक न्याय सिद्धान्तविपरीत हुन जान्छ। किनकि नियुक्ति हुने व्यक्ति नै समितिमा रहेछ भने स्वाभाविक रूपमा नियुक्तिमा प्रभाव पर्न सक्ने।

निवेदन विचाराधीन रहेकै अवस्थामा मिति २०७०।१।१ देखि लागू हुने गरी विपक्षीहरू मध्येकै

केशरबहादुर खुलाललाई विवादित बुढानिलकण्ठ स्कुलको प्रिन्सिपल पदमा नियुक्ति गरिएको र सो नियुक्ति रिट निवेदकहरूको मागअनुसार नै निष्पक्षरूपमा स्वच्छ प्रतिस्पर्धाद्वारा भएकोले रिट निवेदनको निवेदन मागको कुनै औचित्य नरहेको जानकारी विपक्षी नेपाल सरकारका विद्वान् सहन्यायाधिवक्ता श्री रेवतीराज त्रिपाठी र बुढानिलकण्ठ स्कुलको तर्फबाट उपस्थित विद्वान् अधिवक्ता श्री परशुराम कोइरालाले बहसको क्रममा इजलाससमक्ष जानकारी गराउनुभएको र रिट निवेदकतर्फका विद्वान् अधिवक्ता श्री रामचन्द्र सुवेदीले समेत इजलाससमक्ष नै सो बेहोराको समर्थन गर्नु भएकोले प्रस्तुत रिट निवेदनको थप तथ्य र औचित्यभित्र प्रवेश गरी विचार गर्नुपर्ने देखिएन। तसर्थ: प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत: विदुर काफ्ले

कम्प्युटर: अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०७३ साल असोज ५ गते रोज ४ शुभम्।

६

स.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा, ०७१-WO-१०४६, उत्प्रेषण / परमादेश, उमेश साह वि. जनकपुर न.पा. को कार्यालय, जनकपुरसमेत

विवादित सडक विस्तार कार्यक्रम राजमार्ग, सहायक मार्ग, जिल्ला वा सहरि कुन स्तरको हो र सोको चौडाइलगायतका मापदण्ड सार्वजनिक सडक ऐन, २०३१ को दफा ३ र ४ मा सडक सुधार र विस्तार गर्न जग्गा प्राप्ति गर्नुपर्ने व्यवस्थासमेतका आधारमा के कस्तो हुनुपर्ने हो, सो यकिन गरी सो मापदण्डअनुसार विस्तार र स्तरवृद्धि गर्न सकिने कुरामा विवाद छैन। तर त्यसो गर्दा सो कार्य सार्वजनिक हितको लागि गर्न लागिएको हो भन्ने कुरा सार्वजनिक रूपमै स्पष्ट हुनुपर्दछ र सार्वजनिक हितको लागि सडक विस्तार गर्दा निजी सम्पत्तिको प्रयोग गर्नु परेमा संविधान र कानूनको दायराभित्र रही गर्नुपर्नेमा त्यसो नगरी व्यक्तिको निजी

सम्पत्ति / जग्गामा प्रचलित कानूनविपरीत जबरजस्ती कब्जा गरी चिनो लगाई सडक विस्तार गर्ने कार्यलाई कानूनसम्मत मान्न नसकिने ।

जनकपुर उपमहानगरपालिकाअन्तर्गतको शिव चोकदेखि कदम चोकसम्मको सडक विस्तार गर्न मिति २०७०।१।२७ मा जनकपुर नगर परिषद्बाट निर्णय भई सो निर्णयानुसार सडक विस्तार गर्न लागिएको भनिएको, यसको जानकारी स्थानीय स्तरमा प्रभाव पर्ने पक्षलाई नदिइएको र सो निर्णयानुसार २०७२ सालको जेठ महिनामा सडक विस्तार गर्न लाग्दा उपमहानगरपालिकाका कर्मचारीहरूबाट घरघरमा चिह्न लगाउने क्रममा संविधान र प्रचलित कानूनअनुसार क्षतिपूर्ति दिने कुराको प्रत्याभूति कहींकतै गरिएको देखिँदैन । यसबाट व्यक्तिको सम्पत्ति सडक विस्तारको नाममा जबरजस्ती कब्जा गर्न खोजेको देखियो । यसरी व्यक्तिको निजी घर, जग्गालगायतका सम्पत्ति सडक विस्तारको क्रममा प्राप्ति गर्दा संविधान र कानूनअनुसार क्षतिपूर्ति दिने कुरा सो मिति २०७२।१।२७ को नगर परिषद्को निर्णयमा उल्लेख भएको कहींकतैबाट नदेखिएको र २०७२ सालको जेठ महिनामा उपमहानगरपालिकाका कर्मचारीहरूबाट घरघरमा चिह्न लगाउँदा क्षतिपूर्ति दिने कुराको स्पष्ट प्रत्याभूति कहींकतैबाट नदेखिएबाट निवेदकको संविधानप्रदत्त सम्पत्तिको हकको आघात पुगेको देखिने ।

व्यक्तिको सम्पत्ति क्षतिपूर्ति नदिई सोझै अधिग्रहण गरी सडक विस्तार गर्ने कार्यलाई कानूनसम्मत मान्न सकिने । सार्वजनिक हितकै लागि भए पनि व्यक्तिको निजी सम्पत्ति राज्य वा राज्यका निकायबाट प्राप्त गर्दा कानूनबमोजिमको क्षतिपूर्ति दिएर मात्र प्राप्ति गर्न र प्रयोग गर्न सकिने, तर प्रस्तुत सन्दर्भमा त्यसो भए गरेको नदेखिएको हुँदा मिति २०७०।१।२७ को नगर परिषद्को निर्णय र सो निर्णयको आधारमा २०७२ सालको जेठ महिनामा

जनकपुर उपमहानगरपालिकाका कर्मचारीहरूबाट घरघरमा चिह्न लगाउने निर्णयसमेतका कार्य उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर हुने ठहर्छ । अब यी रिट निवेदकको जग्गामा पर्ने गरी सडक विस्तार गर्नुपर्ने भएमा संविधान प्रचलित कानूनबमोजिमका प्रक्रिया पूरा गरी क्षतिपूर्ति दिने प्रक्रिया अपनाई क्षतिपूर्ति दिएर मात्र सडक विस्तार गर्नु भनी परमादेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृत: विदुर काफ्ले

इति संवत् २०७३ साल माघ १९ गते रोज ४ शुभम् ।

७

स.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल, ०७२-WO-००४२, उत्प्रेषण, केदारनाथ दाहाल वि. नेपाल विद्युत् प्राधिकरण, प्र.का. दरबारमार्गसमेत

निवेदक मिति २०६१।१।१२ देखि अनिवार्य अवकाश भएको भन्ने रिट निवेदन बेहोराबाट देखिन्छ । निजसेवानिवृत्त भएपछि निर्माण भएको विनियमावलीको अवकाशसम्बन्धी प्रावधानलाई आधार बनाई प्रस्तुत रिट निवेदन परेको देखिन्छ । उक्त विनियमावली, २०६२ को विनियम १३६(२) मा प्राधिकरणमा मिति २०५४।१।०।३ अघि अस्थायी सेवामा अटुट कार्यरत रही स्थायी भएका कर्मचारीको हकमा उक्त अस्थायी अवधिको गणना गरिने भन्ने प्रावधान रहेको पाइन्छ । नेपाल विद्युत् कर्पोरेसन विघटन भएपछि निवेदकको स्थायी सेवा नेपाल विद्युत् प्राधिकरणमा मिलान भएको र सो अवधिमा निज अस्थायी भई काम गरेको भन्ने पनि होइन । निवेदक २०५४ सालअघि अस्थायी सेवामा रहेको भन्ने देखिँदैन । मिति २०३३।३।१९ देखि स्थायी नियुक्ति पाई मिति २०६१।१।१२ मा अनिवार्य अवकाश भई सेवा निवृत्त भएका निवेदकको हकमा उक्त विनियमावलीको नियम १६२(२) आकर्षित हुने अवस्था नरहेको र निज स्थायी भएको मिति २०३३।३।१९ देखिको सेवा अवधि गणना गरी सोही मितिबाट निवृत्तिभरण सुविधा पाउने गरी

निवृत्तिभरण उपलब्ध गराउने विद्युत् प्राधिकरणको निर्णयलाई अन्यथा भन्न नमिल्ने भएकोले निवेदन मागबमोजिमको आदेश जारी गर्नु परेन । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: दिलीपराज पन्त

इति संवत् २०७४ साल वैशाख ३ गते रोज १ शुभम् ।

इजलास नं. १

१

मा.न्या.श्री गोपाल पराजुली र मा.न्या.श्री सारदाप्रसाद घिमिरे, ०७३-RC-००८२, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. विश्वनाथ महतो

कसैले कसैलाई धार भएको वा नभएको खुर्पा जस्तो जोखिमी हतियारले प्रहार गर्दा भएको मृत्युमा सर्वस्वसहित जन्मकैद गर्नुपर्ने ।

प्रतिवादीले मादक पदार्थ सेवन गरेर होस् वा मानसिक असन्तुलनको कारण होस् खुर्पा प्रहार गर्दा प्रतिवादीको बुबाको शरीरको विभिन्न भागमा चोटपटक लागी मृत्यु भएको छ, मादक पदार्थ सेवनकर्ताले कानून पालना नगर्नुपर्ने युक्तियुक्त आधार र कारण प्रतिवादीले देखाउन सकेको देखिँदैन । प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २७ बमोजिम आफ्नो जिकिर पुष्टि गर्ने कानूनी अभिभारा प्रतिवादीको हो । त्यो अभिभारा प्रतिवादीले पूरा गर्न सकेको देखिँदैन । मानसिक असन्तुलनको कारण घटना घटित भएको हो कि भन्ने सम्बन्धमा हेर्दा लिला महतोले प्रतिवादीले मानसिक रोगको औषधी खान छोडेपछि वारदात भएको भनी बकपत्र गरेको देखिन्छ । तर विशेषज्ञ डा.सुनिलकुमार साहले मानसिक रोगीले हत्या गर्ने सम्भावना कम हुन्छ भनी बकपत्र गरेको देखिँदा लिला महतोको बकपत्र खण्डित भएको पाइयो । यस अवस्थामा विशेषज्ञ डा. को बकपत्र प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २३ को उपदफा (७) बमोजिम प्रतिवादी विरुद्ध प्रमाणमा लिन मिल्ने नै

देखिने ।

प्रतिवादीले अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष आफूले प्रहार गरेको खुर्पाको चोटपीडाले बुबाको मृत्यु भएको भनी बयान गरेकोमा अदालतमा पनि बुबा जीवनराम महतोको आफैँले प्रहार गरेको खुर्पाको चोटपीडाले मृत्यु भएको स्वीकार गरी बयान गरेको देखिँदा प्रतिवादीको बयान पनि प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा ९ बमोजिम प्रतिवादी विरुद्धकै प्रमाण हुने हुँदासमेतका आधार र कारणबाट पुनरावेदन अदालत, हेर्दाको मिति २०७३।४।१८ मा कसुरदार ठहर्‍याई गरेको फैसला मिलेकै देखिँदा साधकको रोहमा सदर हुने ।

प्रतिवादी २३ वर्षको कलिलो उमेरको भई निजले आफ्नो बाबुलाई मार्नु पर्नेसम्मको पूर्वरिसइवी, योजना केही नदेखिएको र घटना घटनुपूर्व निजले मानसिक रोगको औषधी सेवन गरी हाल औषधी सेवन गर्न छोडेको कारण घटना भएको भन्ने देखिँदा घटना हुँदाको परिस्थितिलाई मध्यनजर राख्दा घटना भवितव्य हो कि भन्नेसम्मको स्थिति देखिएकोले प्रतिवादीलाई सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय गर्दा चर्को पर्न जाने देखिएकोले १० वर्षको कैद सजाय गर्दा पनि कानूनको मकसद पूरा हुने हुँदा प्रतिवादीलाई मुलुकी ऐन, अ.ब.१८८ नं. बमोजिम १० वर्ष कैद सजाय हुने गरी व्यक्त भएको पुनरावेदन अदालत, हेर्दाको राय पनि सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: भीमबहादुर निरौला

इति संवत् २०७३ साल चैत १५ गते रोज ३ शुभम् ।

२

मा.न्या.श्री गोपाल पराजुली र मा.न्या.श्री सारदाप्रसाद घिमिरे, ०७३-RC-००८५, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. खगीराम रामजाली घर्तीमगर

प्रतिवादीले मृतकलाई खुर्पाले प्रहार गरेको भनी बयान गरेकोमा मौकामा बरामद भएको उक्त खुर्पा चिनी सनाखत गरेको देखिन्छ । मिसिल संलग्न

मृतकको फोटो हेर्दा पनि शरीरभरी काटिएको घाउ, खत र रगत बगेको पनि देखिन्छ । यसरी मृतकको फोटोबाट शरीरमा गहिरो घाउ र खतसमेत देखिएको सम्बन्धमा प्रतिवादीले खुर्पाले प्रहार गर्दा लागेको चोटपटक हो भनी गरेको बयान मिसिल संलग्न शव परीक्षण प्रतिवेदनमा Intracranial hemorrhage blunt trauma उल्लेख भएबाट पनि समर्थित भएको देखियो । तसर्थ प्रतिवादी खगीराम रामजाली घर्ती मगरको बयान प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा ९ बमोजिम निज प्रतिवादी विरुद्ध प्रमाण ग्राह्य हुने ।

प्रतिवादीले मृतकलाई कहिले धार भएपछिबाट र कहिले धार नभएपछिबाट खुर्पाले प्रहार गर्दा लागेको चोटपटकको पीडाले मृतकको मृत्यु भएको देखिन्छ । प्रतिवादी स्वयम्ले आफूले खुर्पा प्रहार गरी मृतकलाई मारेको तथ्यलाई स्वीकार नै गरेको देखिएको छ । यसरी प्रतिवादीको जोखमी हतियार खुर्पा प्रहारबाट मृतक पवी रामजाली घर्तीमगरको मृत्यु भएको तथ्य निज स्वयम्को बयान, जाहेरवाला, घटना विवरण लेखाउने र वस्तुस्थिति मुचुल्काका मानिसहरूको बकपत्रबाट स्थापित भएबाट प्रतिवादी खगीराम रामजाली घर्ती मगरलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३ नं. को देहाय १ बमोजिम सुरु प्युठान जिल्ला अदालतको फैसला सदर गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालत, तुलसीपुरको मिति २०७३।३।१९ को फैसला मनासिब नै देखिँदा साधकको रोहमा सदर हुने ।

प्रतिवादीको मृतक श्रीमती पवी रामजाली घर्ती मगरलाई मार्नेसम्मको पूर्वयोजना, रिसइवी र पूर्वतयारी भएको देखिएको छैन । केवल मृतक र प्रतिवादी दुवैजनाले मादक पदार्थ सेवन गरेकोमा मादक पदार्थको नसाको सुरमा भएको झैं-झगडाको कारण उत्पन्न रिस तत्काल थाम्न नसकी प्रहार गरेको लात र खुर्पाको चोटपटकको पीडाबाट मृत्यु भएको देखिएको अतिरिक्त प्रतिवादीले आफूले कसुर गरेको

कुरा स्वीकार गरी न्याय सम्पादनमा सहयोग गरेको देखिँदा हदैसम्मको सजाय गर्नुभन्दा प्रतिवादीलाई मुलुकी ऐन, अ.बं. १८८ नं. बमोजिम १५ वर्ष कैद सजाय गर्दा पनि कानूनको मकसद पूरा हुने देखिएकाले प्रतिवादीलाई १५ वर्ष कैद सजाय हुनेसमेत ठहर्ने ।

प्रतिवादी ६५ वर्ष उमेरको भई जेष्ठ नागरिक भएको देखिन्छ । निज जेष्ठ नागरिकले पुनरावेदन अदालतमा जेष्ठ नागरिक ऐन, २०६३ को दफा १२ बमोजिम सजाय छुट पाउन माग गरेको देखिन्छ । तर पुनरावेदन अदालत, तुलसीपुरले सो सम्बन्धमा विवेचना गरेको देखिँदैन । तथापि जेष्ठ नागरिक ऐन, २०६३ अनुसार प्रतिवादीले सजायमा छुट पाउने वा नपाउने सम्बन्धमा सम्बन्धित कारागार कार्यालयले कैद सजाय छुट दिने गरी सिफारिस गर्न सक्ने नै हुँदा यस सम्बन्धमा केही गरी रहन नपर्ने ।

इजलास अधिकृत: भीमबहादुर निरौला

इति संवत् २०७३ साल चैत १५ गते रोज ३ शुभम् ।

इजलास नं. २

१

मा.न्या.श्री दीपकराज जोशी र मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ, ०७०-सी-१०५९, अंशबन्डा, भविलाल सापकोटा वि. दिनकला सापकोटासमेत

पुनरावेदक वादीका पिता खिललालले जेठी श्रीमतीतर्फका छोरा प्रतिवादी लिलारामलाई आफ्नो नाममा रहेको सम्पत्तिमध्येबाट ०-५-० जग्गा बकसपत्र पारित गरिदिई जेठी श्रीमती र छोरासँग अलग भिन्न भई कान्छी श्रीमती र निजतर्फका परिवार यी पुनरावेदक वादीका सँगसाथ रहे बसेको देखिन्छ । त्यसैगरी निज खिललालले जेठी श्रीमतीबाट अलग भिन्न रहे बसेपछि आफ्नो नाममा रहेको जिल्ला नवलपरासी, देउराली गा.वि.स. वडा नं. ५क कि.नं. १५९ को क्षेत्रफल ०-१०-० जग्गा मिति २०५२।६।२७ र.न.

१३२२ बाट अन्जना प्रधानलाई राजीनामा पारित गरी दिएको देखिन्छ भने निज खिमलालले नै कान्छी श्रीमती यी पुनरावेदक वादीकी आमा प्रतिवादी सावित्री सापकोटालाई आफ्नो नाममा रहेको जिल्ला नवलपरासी, गैँडाकोट नगरपालिका वडा नं. ५ क कि.नं. १८६१ को क्षेत्रफल ०-१०-२-३ जग्गा मिति २०६२।१।५ मा हालैको बकसपत्र पारित गरी दिएको मिसिल संलग्न प्रतिलिपिहरूबाट देखिन्छ । २०३३ सालभन्दा पछि यी पारित लिखतका सम्बन्धमा खिमलालको जेठी श्रीमती र निजतर्फका छोराको कुनै दाबी जिकिर रहेकोसमेत पाइँदैन । यी लिखित प्रमाणसमेतका आधारमा खिमलालको जेठी श्रीमती दिनकला र निजतर्फका छोरा लिलाराम प्रत्यर्थी प्रतिवादी र खिमलालको कान्छी श्रीमती सावित्री र निजतर्फका छोरा पुनरावेदक वादी र प्रत्यर्थी प्रतिवादी २०३३ सालदेखि नै व्यवहार प्रमाणले छुट्टिई अलग भिन्न भइरहे बसेको मान्नु पर्ने ।

प्रतिवादीमध्येका खिमलालले जेठी श्रीमती दिनकला र निजतर्फका छोरा लिलाराम सापकोटालाई आफ्नो नाममा रहेको सम्पत्तिमध्येबाट क्षेत्रफल ०-५-० मिति २०३३।१।३० मा हालैको बकसपत्र पारित गरी दिई प्रत्यर्थी प्रतिवादीमध्येका यी दिनकला र लिलारामबाट अलग भिन्न भई बसेको देखिँदा लिलारामका नाममा रहेको सम्पत्ति पैतृक सम्पत्ति हो भनी दाबी गर्न मिल्ने नदेखिने ।

तसर्थ सुरु चितवन जिल्ला अदालतले वादीले सम्पूर्ण प्रतिवादीहरूबाट अंश पाउने ठहर गरी मिति २०६९।९।८ मा गरेको फैसलालाई केही उल्टी यी पुनरावेदक वादी भविलाल सापकोटाले प्रत्यर्थी प्रतिवादीहरू दिनकला सापकोटा र लिलाराम सापकोटाबाहेकका अन्य प्रतिवादीहरूबाट मात्र अंश पाउने ठहर गरी पुनरावेदन अदालत, हेटौँडाले मिति २०७०।६।६ मा गरेको फैसला मिलेको देखिँदा सदर

हुने ।

इजलास अधिकृत: प्रेम खड्का

कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

इति संवत् २०७४ साल जेठ २४ गते रोज ४ शुभम् ।

२

मा.न्या.श्री दीपकराज जोशी र मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी, ०७२-CR-०४३८, कर्तव्य ज्यान, *सूर्यबहादुर कार्की वि. नेपाल सरकार*

प्रतिवादीले अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष तथा अदालतमा आई बयान गर्दा जिल्ला भक्तपुर, मध्यपुर थिमी न.पा.४ नगदेशमा रहेको सुशीला जोशीको निर्माणाधीन घरमा म र मेरो परिवार काम गर्दै तथा घर कुरेर बसेकोमा मिति २०६९।७।२५ गते अं.२३:०० बजेको समयमा वादविवाद भएपछि मेरी श्रीमतीले मट्टीतेल खनाई बलिरहेको टुकी बत्तीबाट आफैँले आगो लगाएकी हुन् मैले आगो लगाई दिएको होइन भनी लेखाए पनि आफ्नो बयान बेहोरालाई पुष्टि गर्ने गरी कुनै सबुत प्रमाण पेस गर्न सकेको अवस्था देखिँदैन । मृतकले आफू मर्ने बेलामा उपचारको क्रममा व्यक्त गरेको कुरालाई प्रमाणमा लिनुपर्ने कानूनी व्यवस्था प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा ११ मा रहेको र मर्ने बेलामा कसैलाई झुठो बोल्न सक्ने अवस्था नहुँदा प्रतिवादीले अभियोग दाबीबमोजिम कसुर गरेको कुरा पुष्टि हुन आउने ।

मृतकले उपचारको क्रममा कोरिया नेपाल मैत्री अस्पतालमा भर्ना भएको अवस्थामा आफूलाई श्रीमानले मट्टीतेल खनाई आगो लगाई दिएको भनी सोही अस्पतालका डाक्टर भावुक सुवेदी तथा स्टाफ नर्स अनु अधिकारीसमक्ष कागज गरेको र सो कागजलाई डाक्टर भावुक सुवेदी तथा स्टाफ नर्स अनु अधिकारीले अदालतमा उपस्थित भई सोही बेहोरा उल्लेख गरी उक्त कागजलाई सनाखतसमेत गरिदिएको देखिन्छ । मृतकले आफू मर्नुभन्दा अगाडि

उपचारको क्रममा व्यक्त गरेको कुरालाई प्रमाणमा लिनुपर्ने कानूनी व्यवस्था प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा ११ मा रहेको देखिन्छ। लास जाँच प्रकृति मुचुल्का हेर्दा मृतकको शरीरको विभिन्न भागमा जली छाला पिल्सिएकोसमेत देखिन्छ भने Autopsy Report हेर्दा Cause of Death Burn Injuries भन्ने लेखिएको पाइन्छ। यी प्रतिवादी सूर्यबहादुर कार्कीले आफ्नो श्रीमती फुलमायालाई मट्टीतेल खनाई आगो नलगाएको भए मृतकलाई बचाउने प्रयासको लागि अस्पताल लम्नुपर्नेमा सो नगरी आफू चुप लागी बसिरहेको र पछि गाउँघर छिमेकी उपस्थित भई अस्पतालमा उपचारार्थ लगेको भन्ने मिसिल संलग्न कागजातबाट देखियो। यसर्थ प्रतिवादी सूर्यबहादुर कार्कीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १ र १३(३) नं. को कसुर अपराधमा निजलाई ज्यानसम्बन्धीको १३(३) नं. बमोजिम जन्मकैदको सजाय हुनेगरी भक्तपुर जिल्ला अदालतबाट मिति २०७०।११।१४ मा भएको फैसलालाई सदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत, पाटनले मिति २०७२।२।५ मा गरेको फैसलालाई अन्यथा गर्नुपर्ने नदेखिने।

तसर्थ, विवेचित आधार प्रमाणहरूबाट पुनरावेदक प्रतिवादी सूर्यबहादुर कार्कीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १ र १३(३) नं. को कसुर अपराधमा निजलाई ज्यानसम्बन्धीको १३(३) नं. बमोजिम जन्मकैदको सजाय हुनेगरी भक्तपुर जिल्ला अदालतबाट मिति २०७०।११।१४ मा भएको फैसलालाई सदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत, पाटनले मिति २०७२।२।५ मा गरेको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: प्रेम खड्का / दिपेन्द्र तिवारी (शा.अ.)

कम्प्युटर: पद्मा आचार्य

इति संवत् २०७४ साल असोज २३ गते रोज ५ शुभम्।

इजलास नं. ३

१

मा.न्या.श्री ओमप्रकाश मिश्र र मा.न्या.श्री जगदीश शर्मा पौडेल, ०७०-CI-१३०२, संशोधनतर्फ छुट्याई पाऊँ, बासुदेव मण्डल वि. उपेन्द्र नारायण मण्डल

मूल कि.नं.३७ बाट किताकाट भई दक्षिण पश्चिमतर्फ कि.नं.६७६ को ०-१३-० जग्गा जग्गाधनी लक्ष्मीराज मिश्रसमेतको नाउँमा कायम रहेको र सीधा दक्षिणतर्फ कायम कि.नं. ६७५ को ०-६-९ जग्गा प्रत्यर्थी उपेन्द्रनारायणको नाउँमा रहेको भन्ने तथा उक्त कि.नं. ६७५ को जग्गाको दाता निज लक्ष्मीराज मिश्र रहेको भन्ने कुरामा कुनै विवाद देखिँदैन। प्रस्तुत विवादमा वादीले मोहियानी प्राप्त गरेको भनेको मूल कि.नं. ३७ लक्ष्मीराज मिश्रको हो भन्ने स्वयम् वादीको कथनबाट देखिन आउँछ। विवादित कि.नं. ६७५ सोही कि.नं. ३७ बाट किताकाट भई निजै दाता लक्ष्मीराज मिश्रबाट प्राप्त हुन आएको र उक्त जग्गामा पुनरावेदक वादीको नाम मोही महलमा रहे भएको देखिँदैन। मूल कि.नं. ३७ बाट किताकाट भई कायम उक्त कि.नं. ६७५ बाहेक अरु जग्गा पनि रहे भएको अवस्था एकातिर देखिन आउँछ भने अर्कोतिर यी पुनरावेदक वादी प्रस्तुत कि.नं. ६७५ को जग्गाको निर्विवाद मोही हो भन्ने तथ्य कहींकतैबाट पुष्टि हुन आएको अवस्था पनि देखिँदैन। यस्तो अवस्थामा यी वादी बासुदेव मण्डललाई उक्त कि.नं. ६७५ को जग्गाको मोही मानीतर्फ छुट्याई दिएको भूमिसुधार कार्यालय, सप्तरीको फैसला केही उल्टी गरेको पुनरावेदन अदालत, राजविराजको मिति २०७०।३।१८ को फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: आत्मदेव जोशी
कम्प्युटर: बासुदेव गिरी
इति संवत् २०७३ साल फागुन १७ गते रोज ३ शुभम्।

मा.न्या.श्री ओमप्रकाश मिश्र र मा.न्या.श्री जगदीश शर्मा पौडेल, ०७१-CA-०४७६, दूषित दर्ता बदर दर्ता, खैरून निशा वि. अनिलकुमार श्रीवास्तव

पुनरावेदिकाको पति बसीर अहमदको जीवनकालमै २०३० सालमा तत्कालीन गाउँ पञ्चायतबाट भएको निर्णय निज बसीरले आफ्नो जीवनकाल २०५८ सालसम्म स्वीकार गरी बसेको तर सोपश्चात् लामो समयपछि निजको हकवालाको रूपमा यी वादी प्रस्तुत मुद्दाको फिरोद लिई अदालत, प्रवेश गरेको देखिन्छ। २०६० सालको दे.नं. ७३३ को जग्गा खिचोला मेटाई चलन चलाई पाउँ भन्ने मुद्दामा नै यी वादीले उक्त जग्गा आफ्नो पतिको नामबाट विद्यालयको नाममा गएको कुरा औपचारिक रूपमा थाहा पाएपछि २०६८ सालमा आएर थाहा पाएको भनेको आधारमा मात्र निजको मुद्दा गर्ने हदम्याद कायम हुन सक्ने नदेखिने।

लगत दर्ता नं. ४८६ को जग्गा २०३०।३।५ मा वसिर अहमदको नामबाट विद्यालयको नाममा लगत दर्ता कायम गर्ने गरी तत्कालीन कृष्णनगर गाउँ पञ्चायतबाट निर्णय भएकोमा वसिर अहमदबाट आफू जीवित रहँदासम्म उक्त निर्णयउपर कानूनबमोजिम कारबाही चलाएको देखिँदैन। २०४५।१।११ मा दुखी मुसलवानका दुई छोराहरू यी पुनरावेदकाको पति वसिर मुसलवान र अर्का गफुर मुसलमानबीच बन्डापत्र गर्दा दाबीको लगत दर्ता नं. ४८६ को जग्गालाई उल्लेख नगरेबाट सो लगत दर्ता नं. ४८६ को जग्गामा वसिर अहमदको हकभोग नरहेको कुराले निरन्तरता पाएको देखिने। बन्डापत्रमा लगत दर्ता नं. ४८६ को जग्गाको सम्बन्धमा कुनै उल्लेख नगरेको र सो जग्गा विद्यालयको नाममा लगत दर्ता कायम भएकोमा सोउपर वसिर अहमदले कानूनबमोजिम कारबाही चलाएको नदेखिएको हुँदा वसिर अहमदले आफ्नो आचरण एवम् व्यवहारबाट लगत दर्ता नं. ४८६ को बहाल

विटौरीको उक्त जग्गा विद्यालयको नाममा लगत दर्ता कायम भएको कुरालाई स्वीकार गरेको मान्नुपर्ने हुन आउँछ। मिसिल संलग्न अरू तथ्ययुक्त आधार प्रमाणहरूबाट वादीको दाबी पुष्टि नभइरहेको अवस्थामा सर्जमिनका धेरै मानिसहरूले लेखाएको बेहोरालाई मात्र आधार लिई निर्णयमा पुग्नु न्यायोचित नहुने।

वादी दाबीबमोजिम बहाल विटौरी लगत दर्ता नं.४८६ को ०-०-१४ जग्गाको दर्ता बदर गरी सो जग्गा वादीको नाममा दर्ता हुने गरी भएको कपिलवस्तु जिल्ला अदालतको फैसला उल्टी भई वादीको दाबी नपुग्ने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत, बुटवलको मिति २०७१।२।२० को फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।
इजलास अधिकृत: आत्मदेव जोशी
कम्प्युटर: चन्दनकुमार मण्डल
इति संवत् २०७३ साल फागुन १७ गते रोज ३ शुभम्।

इजलास नं. ४

मा.न्या.श्री देवेन्द्र गोपाल श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी, ०७१-CR-१३९१, वैदेशिक रोजगार कसुर, नेपाल सरकार वि. योगेन्द्र साहसमेत

प्रतिज्ञा म्यान पावरका सञ्चालक प्रदीप राय कुर्मिले जाहेरवाला तथा योगेन्द्र साहसँग कुनै कारोबार नभएको भनी अनुसन्धान अधिकृतसमक्ष र वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणसमक्ष इन्कारी बयान गरेको देखिन्छ। पर्फेक्ट इम्प्लोमेन्ट सर्भिस प्रा.लि. का सञ्चालक डिल्लीप्रसाद लामिछानेले जाहेरवालाको डिमान्ड निजको मेनपावरमा आएको र श्रम स्वीकृति निकाली दिएको भनी स्वीकार गरी वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणसमक्ष बयान गरेको देखिन्छ। प्रतिवादीका साक्षी अनिरुद्र खनाल तथा भोगेन्द्र शाहले जाहेरवाला पर्फेक्ट मेनपावरमार्फत विदेश गएका हुन् भनी बकपत्र गरेको देखिन्छ। जाहेरवालाले प्रतिवादीहरूले वैदेशिक

रोजगारको लागि रकम लिएको भन्ने कुनै लिखत कागज पेस गर्न सकेको नदेखिने।

उपर्युक्त बमोजिमको तथ्य एवम् साक्षी प्रमाणहरूबाट जाहेरवालालाई प्रतिवादीहरूले विनाइजाजत विदेश पठाएको भन्ने कुरा प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ अनुसार विवादाविरत ठोस तथ्ययुक्त आधार प्रमाणहरूबाट कसुर प्रमाणित गराउन सकेको नदेखिँदा विनाप्रमाण प्रतिवादीहरूलाई अनुमानको भरमा कसुरदार ठहर गर्न मिलेन। तसर्थ प्रतिवादीहरूले आरोपित कसुरबाट सफाई पाउने ठहर्‍याई वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट भएको मिति २०७१।०४।१९ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: महेश खनाल

कम्प्युटर: मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७३ साल फागुन ११ गते रोज ४ शुभम्।

२

मा.न्या.श्री देवेन्द्र गोपाल श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी, ०७२-CR-०३८५, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. प्रश्नमान श्रेष्ठसमेत

मृतक दुर्गा थापा दिउँसो मोदी केयर र बेलुका झरना डान्स रेस्टुरेन्टमा काम गर्ने गरेको जाहेरवालाको बकपत्रसमेतबाट देखिन्छ। एउटै फ्ल्याटमा बस्ने र घरको भाडा तथा मोबाइल एवम् टपसमेत चोरी भएको भन्ने विषयमा प्रतिवादीहरूसँग मृतकको विवाद भएको भन्ने आधारमा मौकामा बुझिएका मानिसहरूले यी प्रतिवादीउपर शंकाको आधारमा मात्र कागज गरिदिएको देखिन्छ। निजहरूले बकपत्र गर्दा सुनेको भरमा थाहा पाएको भनी व्यक्त गरेको देखिन्छ। तर निजहरूको शंका पुष्टि हुने तथ्यगत आधार केही पेस हुन सकेको नदेखिने।

मृतक दुर्गा थापालाई यी प्रतिवादीहरूले नै कर्तव्य गरी मारेको भन्ने देखिने विश्वसनीय सबुद प्रमाण वादी पक्षबाट पेस हुन नसकेको अवस्थामा एउटै घरमा

भाडामा बस्ने गरेको भनी अनुमान र शंकाको भरमा मात्र प्रतिवादीहरूलाई कसुरदार ठहर गर्न मिल्ने देखिएन। निज प्रतिवादीहरूलाई अभियोग दाबीबमोजिम सजाय पाउनु हुनुपर्ने भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

अतः प्रतिवादीहरूको कसुर कायम हुने तथ्यगत वस्तुनिष्ठ आधार प्रमाणहरूबाट पुष्टि भएको नदेखिएको कारण प्रतिवादीहरूलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(१) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद सजाय हुने ठहर्‍याई सुरु काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला उल्टी गरी प्रतिवादीहरूले अभियोग दाबीबाट सफाई पाउने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत, पाटनको मिति २०७१।६।२८ गतेको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: महेश खनाल

कम्प्युटर: मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७३ साल फागुन ११ गते रोज ४ शुभम्।

इजलास नं. ५

१

मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा. र मा.न्या. श्री सारदाप्रसाद घिमिरे, ०७०-CR-०६८२, ०७०-CR-०६८३, ०७०-CR-०८६८ र ०७०-CR-०६८४, कर्तव्य ज्यान, प्रवेश गुरुङ वि. नेपाल सरकार, सुवास गुरुङ वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. गम्भीर गुरुङसमेत र गम्भीर गुरुङ वि. नेपाल सरकार

प्रतिवादी गम्भीर गुरुङले मौकामा एवम् अदालतसमक्ष बयान गर्दासमेत आफूले सुरुमा दुईपटक विस्तारै ढाडमा छुरी प्रहार गरेको र त्यति गर्दा पनि नछाडेपछि माथि शरीरको कतातिर मजाले हानिदिएको भनी लेखाएको बेहोरा शव परीक्षण प्रतिवेदन एवम्

घटनास्थल तथा लास जाँच मुचुल्कासँग मेल खान आएकोसमेतबाट यी प्रतिवादीहरू सुवास गुरुङ र प्रवेश गुरुङ वारदातअघि वारदातस्थलमा रहेका भए पनि वारदात हुँदा भागी गएका र निजहरूले चोट प्रहार गरेको नदेखिएको तथा निज इश्वर भण्डारीलाई मार्न संयोग पारेको वा सहयोग गरेकोसमेत नदेखिएको अवस्थामा निज प्रतिवादीहरू निर्दोष देखिँदा सुभाष गुरुङको हकमा ज्यानसम्बन्धीको १७ (१) नं. को कसुर एवम् प्रवेश गुरुङको हकमा सोही महलको १७(३) नं. को कसुर ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत, पोखराको इन्साफ सो हदसम्म मिलेको नदेखिने।

प्रतिवादी गम्भीर गुरुङले मौकामा एवम् अदालतसमक्ष बयान गर्दासमेत आफूले सुरुमा दुईपटक विस्तारै ढाडमा छुरी प्रहार गरेको र त्यति गर्दा पनि नछाडेपछि माथि शरीरको कतातिर मजाले हानिदिएको भनी लेखाएको बेहोरा शव परीक्षण प्रतिवेदन एवम् घटनास्थल तथा लास जाँच मुचुल्कासँग मेल खान आएकोसमेतबाट यी प्रतिवादी सन्दिप गुरुङ वारदातअघि वारदातस्थलमा रहेका भए पनि वारदात हुँदा सो स्थानमा नरहेका र निजले चोट प्रहार गरेको नदेखिएको तथा इश्वर भण्डारीलाई मार्न संयोग पारेको वा सहयोग गरेकोसमेत नदेखिएको अवस्थामा निर्दोष रहेका निज प्रतिवादीको हकमा कसुर ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत, पोखराको इन्साफ सो हदसम्म मिलेको नदेखिने।

वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदनमा प्रत्यर्थी बनाइएका अन्य प्रतिवादीहरू पुष्प गुरुङ, हरि गुरुङ, रोहित गुरुङ, आइतबहादुर वि.क., खुमिन्द्र गुरुङ, शैलेश गुरुङ, नविन गुरुङ, भोजबहादुर गुरुङ, राकेश लामा, अर्जुन खत्री र दावा लामाका हकमा हेर्दा निज इश्वर भण्डारीको मृत्यु प्रतिवादी गम्भीर गुरुङको चोट प्रहारबाट भएको भन्ने कुरामाथि निज प्रतिवादी गम्भीर गुरुङ एवम् अन्य प्रतिवादीहरूको सम्बन्धमा गरिएको विवेचना एवम् ठहर निर्णयबाट देखिसकेको छ। यी

प्रतिवादीहरूले उक्त वारदात घटाउनमा कसको के कस्तो भूमिका थियो भनी अभियोजन पक्षले खुलाउन सकेको पनि पाइँदैन। कसुर ठहर भएका प्रतिवादी गम्भीर गुरुङले मौकामा एवम् अदालतसमक्ष बयान गर्दा पनि उक्त घटना वारदात गराउन यी प्रत्यर्थी प्रतिवादीहरूको कुनै भूमिका रहेको भनी खुलाएको पाइँदैन। यसबाट समेत यी प्रतिवादीहरू निर्दोष देखिएको हुँदा निजहरूको हकमा पुनरावेदन अदालत, पोखराले प्रमाणको विवेचना गरी सफाइ दिने ठहर्‍याएको फैसला मिलेको देखिन आउने।

तसर्थ उपर्युक्त आधार प्रमाणबाट लमजुङ जिल्ला अदालतको फैसला केही उल्टी हुने ठहर्‍याई प्रतिवादी गम्भीर गुरुङको हकमा मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १ नं., १३(३) नं. बमोजिम जन्मकैद हुने ठहर गरी बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०४८ को दफा ११ (३) बमोजिम जन्मकैदको आधा १० वर्ष कैद सजाय हुने ठहर्‍याएको हदसम्म पुनरावेदन अदालतको फैसला सदर हुन्छ। प्रतिवादी प्रवेश गुरुङलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १७(३) नं.को कसुर ठहर गरेको, प्रतिवादी सुवास गुरुङ र सन्दिप गुरुङलाई सोही महलको १७(१) नं. बमोजिमको कसुर ठहर गरेको फैसला सो हदसम्म उल्टी भई निज प्रतिवादीहरू प्रवेश गुरुङ, सुवास गुरुङ र सन्दिप गुरुङले अभियोग दाबीको कसुरबाट सफाइ पाउने ठहर्छ। अन्य प्रतिवादीहरू पुष्प गुरुङ, हरि गुरुङ, रोहित गुरुङ, आइतबहादुर वि.क., खुमिन्द्र गुरुङ, शैलेश गुरुङ, नविन गुरुङ, भोजबहादुर गुरुङ, राकेश लामा, अर्जुन खत्री र दावा लामाले सफाइ पाउने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत, पोखराको मिति २०७०।४।२९ को फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।
इजलास अधिकृत: आत्मदेव जोशी
कम्प्युटर: विपिनकुमार महासेठ
इति संवत् २०७४ साल असार ८ गते रोज ५ शुभम्।

२

मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा. र मा.न्या. श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०६७-CR-०५५३ र ०६७-CR-०९५२, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. दोर्णबहादुर महारा र दोर्णबहादुर महारा वि. नेपाल सरकार

वारदातले यी प्रतिवादीले कुनै हतियार वा लाठा ढुंगा कतैबाट बरामद भएको छैन । मृतकको शरीरमा मानिस मर्न सक्ने प्रकृतिको चोटपटक केही छैन । यसरी ज्यानसम्बन्धी महलको १३ को देहाय ३ मा उल्लेख भएको कुनै पनि कार्य गरेको देखिँदैन । उपर्युक्त नम्बरबमोजिमको सजाय गर्नको लागि मृतक र अभियुक्तबीच पुरानो रिसइवी हुनुपर्छ । अभियुक्तले मृतकलाई मनसाययुक्त तरिकाबाट हातहतियार छोडी मार्नेसम्मको काम गरेको हुनुपर्छ । प्रस्तुत घटनाको शव परीक्षण प्रतिवेदनमा मृतकको मृत्यु बढी नसा सेवनका कारण पानीमा डुबी निस्सासिएर भएको भनी प्रतिवेदन आएको देखिन्छ । उपर्युक्त प्रमाण र कारणले गर्दा यी प्रतिवादीलाई ज्यानसम्बन्धी महलको १३ को देहाय ३ बमोजिम सजाय गर्न कानूनसङ्गत र न्यायोचित नदेखिने ।

जहाँसम्म प्रतिवादीले रिसको आवेशमा घाँटीमा समाती पानीको कुलामा धकेलेको हो मार्ने नै मनसायले नै मृतकलाई कुलोमा धकेलेको होइन त्यसकारण म प्रतिवादीलाई ज्यानसम्बन्धीको ५ नं. ले न्यूनतम सजाय हुनुपर्छ अधिकतम होइन भनी पुनरावेदकले लिएको जिकिरतर्फ विचार गर्दा प्रतिवादीले पूर्वयोजना र तयारीका साथ प्रस्तुत वारदात घटित गराएको नदेखिए तापनि एउटा साधारण समझ भएको मानिसले एउटा नशामा धुत भएको मानिसलाई कुटपिट गरी कुलोमा फालेपश्चात् सो मान्छेलाई के भयो भनी हेर्दै नहेरी उठाउन कोसिस पनि नगरी कसैलाई कुनै जानकारी नै नदिई चुपचाप घरमा गएर बस्नु तथा आफैँले गरेको उक्त कार्यले गर्दा पीडित मर्न सक्छ

भन्ने कुरातर्फ विचार नै नगरी मृतकलाई कुलोभित्रको पानीमा छोडेर हिँड्नु जस्ता कार्यले यी प्रतिवादीले लापरवाही हेलचक्रयाई तथा होस नपुन्याई व्यवहार गरेको पुष्टि हुने ।

ज्यानसम्बन्धी महलको ५ नं. ले “ज्यान लिने इविलाग वा मनसाय नभई कसैले आफूले गरेको कर्तव्यले मानिस मर्ला भन्ने जस्तो नदेखिएको कुनै काम कुरा गर्दा त्यसैद्वारा केही भई कुनै मानिस मर्न गएको भवितव्य ठहर्छ” भनी व्यवस्था रहेको पाइन्छ । प्रस्तुत घटना विवरणलाई हेर्दा एउटा नशामा धुत भएको मानिसलाई कुटपिट गरी कुलोमा लडाएपश्चात् सो मान्छेलाई के भयो भनी हेर्दै नहेरी कसैलाई कुनै जानकारी नै नदिई चुपचाप घरमा गएर बसी घटना सम्बन्धमा कुनै होस नपुन्याई पूरै हेलचक्रयाई गरेको अवस्थामा प्रतिवादीको माग दाबीबमोजिम हुनु पर्ने कुनै आधार नदेखिने ।

अतः प्रतिवादीलाई ज्यानसम्बन्धी महलको ६ को देहाय २ बमोजिम सजाय हुनुपर्ने हो कि होइन भन्नेतर्फ विचार गर्दा प्रतिवादीले मृतकलाई मार्नुपर्ने पूर्वयोजना र मनसाय रहे भएको मिसिलबाट देखिँदैन । खाजाको पैसा तिर्ने सम्बन्धमा वादविवाद भई एकले अर्कालाई धकेल्ने क्रममा प्रतिवादीले मृतकलाई घाँटी समाती कुलोमा धकेल्दा निज मृतक मुखको तर्फबाट उक्त कुलोमा लडी मुख तथा नाकमा हिलो पसेको कारण निस्सासिएर निजको मृत्यु हुन गएको भनी शव परीक्षण प्रतिवेदन रहेको देखिन्छ । घटनाको सम्बन्धमा देखी जान्ने व्यक्तिहरूले समेत सोही बेहोराको पुष्टि गरेको अवस्था छ । प्रस्तुत वारदात घटित हुनमा मृतक स्वयम्ले कार्य पनि महत्त्वपूर्ण देखिन्छ । प्रतिवादीले आरोपित कसुरमा साबित रही अनुसन्धान र अदातलमा बयान गरी न्यायिक प्रक्रियामा सहयोग पुन्याएको अवस्था पनि रहेको छ । यसबाट प्रतिवादीको बयानउपर ठूलो प्रश्न उठाउन मिल्ने पनि नदेखिने ।

मिसिल संलग्न उल्लिखित कारण र अवस्था वारदात हुँदाको परिस्थितिलाई दृष्टिगत गर्दा खाजाको पैसा तिर्ने जस्तो सानो विवादमा एउटा नशामा धुत भएको मानिसलाई कुटपिट गरी कुलोमा फालेपश्चात् सो मान्छेलाई के भयो भनी हेर्दै नहेरी कसैलाई कुनै जानकारी नै नदिई चुपचाप घरमा गएर बसी घटना सम्बन्धमा कुनै होस नपुन्याई पूरै हेलचक्रयाई गरेको देखिँदा पुनरावेदन अदालत, तुलसीपुर, दाङबाट मिति २०६७।५।२१ मा प्रतिवादी दोर्णबहादुर महारालाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको ६(२) नं. बमोजिमको कसुरमा २(दुई) वर्ष कैद सजाय गर्ने गरेको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: मनकुमारी जिएम वि.क.

कम्प्युटर: पद्मा आचार्य

इति संवत् २०७३ साल मङ्सिर ७ गते रोज ३ शुभम्।

३

मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा. र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०६८-CR-००६८, जालसाज, शिव मादेन वि. गंगामाया मादेन

मुलुकी ऐन, कित्ते कागजको महलको १० नं. मा "जालसाजी कागज गर्ने गराउनेलाई बिगो खोलिएको रहेछ भने त्यसै बिगोको सयकडा पच्चीस रुपैयाँ जरिवाना हुन्छ। बिगो खोलिएको रहेनछ भने दुई सय रुपैयाँसम्म जरिवाना हुन्छ" भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको देखिन्छ। यसरी हक मार्ने नियतबाट खडा भएको लिखतको बिगो खुलेको रहेछ भने सो बिगो अङ्क २५ प्रतिशतले हुन आउने रकम जरिवाना गर्नुपर्ने बाध्यात्मक व्यवस्था रहेको देखिन्छ। जुन लिखतबाट वादीको हक मेट्ने कार्य भएको हो, सो लिखतमा उल्लिखित बिगोको अङ्कका आधारमा नै सो बिगोको २५ प्रतिशतले हुन आउने रकम नै जरिवाना गर्नुपर्ने देखियो। विवादको लिखतबाट वादीको हक हिस्सासम्म जालसाजी ठहरी बदर हुने अवस्था भए पनि लिखतमा उल्लिखित बिगोलाई लिखत बदर

भएको भाग र मात्राअनुसार विभाजन गरी बिगो कायम गरी सजाय गर्न मिल्ने कित्ते कागजको महलको १० नं. को मनसाय नदेखिने।

कित्ते कागजको १० नं. व्यवस्थाबमोजिम जालसाजपूर्व खडा गरिएको लिखतमध्ये आंशिक लिखत जालसाज ठहर भए पनि प्रतिवादीलाई सजाय गर्ने कुराको बिगो कायम गर्दा लिखतमा उल्लिखित बिगोअनुसार नै सजाय हुने देखियो। यस अवस्थामा लिखतको दुई भागको एक भागसम्म जालसाजी ठहरी फैसला भएको आधारमा लिखत पारित गर्दा उल्लेख भएको रु.५,००,०००।- (पाँच लाख रुपैयाँ) को दुई भागको एक भाग रु.२,५०,०००।- (दुई लाख पचास हजार रुपैयाँ) लाई बिगो कायम गरी सोको २५ प्रतिशतले हुन आउने ६२,५००।- (बैसठ्ठी हजार पाँच सय रुपैयाँ) जनही जरिवाना गर्ने गरी भएको फैसला सो हदसम्म उल्टी भई लिखतमा उल्लिखित बिगो रु.५००,०००।- (पाँच लाख रुपैयाँ) लाई नै बिगो कायम गरी मुलुकी ऐन, कित्ते कागजको महल १० नं. अनुसार सोको २५ प्रतिशतले हुन जरिवाना हुने नै देखिने।

अतः उल्लिखित आधार कारण प्रमाणसमेतबाट वादी दाबीको लिखतको दुई भागको एक भाग लिखत जालसाजी ठहरी भएको पुनरावेदन अदालत, इलामको मिति २०६७।६।१० को फैसला सदर हुने ठहर्छ। सजायको हकमा लिखतको दुई भागको एक भागसम्म जालसाजी ठहरेको हुँदा बिगो रु.५,००,०००।- (पाँच लाख रुपैयाँ) को दुई भागको एक भाग रु.२,५०,०००।- (दुई लाख पचास हजार रुपैयाँ) को मुलुकी ऐन, कित्ते कागजको १० नं. बमोजिम बिगोको सयकडा २५ ले प्रतिवादीहरूलाई जनही रु.६२,५००।- (बैसठ्ठी हजार पाँच सय रुपैयाँ) जरिवाना हुने ठहरी भएको सजायको अङ्कको हदसम्म केही उल्टी भई विवादको लिखतमा उल्लेख भएको बिगो रु.५,००,०००।- (पाँच लाख रुपैयाँ) लाई नै

जालसाजी गरेको बिगो कायम गरी मुलुकी ऐन, किरिँ कागजका १० नं. बमोजिम सो बिगोको २५ प्रतिशतले हुन आउने रकम रु. १,२५,०००।- (एक लाख पच्चीस हजार रुपैयाँ) प्रतिवादीहरूलाई दामासाहीले हुन आउने रु. ६२,५००।- जनही जरिवाना हुने।

इजलास अधिकृत: मनकुमारी जि.एम.वि.

कम्प्युटर: पद्मा आचार्य

इति संवत् २०७३ साल मङ्सिर ७ गते रोज ३ शुभम्।

यसै लगाउको निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैअनुसार फैसला भएका छन्:

- ०६८-CR-००६७, जालसाज, शिव मादेन वि. गंगामाया मादेन
- ०६८-CR-००६९, जालसाज, शिव मादेन वि. गंगामाया मादेन

४

मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा. र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०७२-CR-१६६४, भ्रष्टाचार, नेपाल सरकार वि. खगेन्द्रप्रसाद भट्टराईसमेत

आवेदन शुल्क २०६५ सालमै लिइसकेको तथ्यलाई आरोपपत्रले समेत स्वीकार गरेको र एक पटक सम्बन्धन शुल्क लिइसकेको अवस्थामा सोही आवेदनका आधारमा सम्बन्धन दिँदा पुनः सम्बन्धन शुल्क लिनुपर्ने अनिवार्यता रहेको देखिन नआउने।

पोखरा विश्वविद्यालयजस्तो विभिन्न विषयमा कार्य गर्ने निकायले बदनियत नराखी विभिन्न संस्था, व्यक्तिलाई उपयुक्तताका आधारमा उपलब्ध गराएको आर्थिक सहयोगमा प्रतिवादीहरूको बदनियत गरी हिनामिना गरेको भन्ने नदेखिने।

अनुसन्धान केन्द्रको स्थापना गर्ने पोखरा विश्वविद्यालय ऐन, २०५२ तथा नियमावलीमा नै व्यवस्था भई सोहीअनुरूप स्थापना भएको तर विश्वविद्यालय सभाबाट पारित हुन बाँकी रहेको कार्यलाई भ्रष्टाचार भन्न नमिल्ने।

कर्मचारीलाई अतिरिक्त समय काममा

लगाउँदा अतिरिक्त आर्थिक सुविधा दिएको र अतिरिक्त पारिश्रमिक कार्यकारी परिषद्को निर्णयले दिएको देखिएको अवस्थामा विश्वविद्यालयलाई हानि नोक्सानी पुऱ्याएको नदेखिने।

उचित र पर्याप्त कारणको आधारमा हर्जाना नलिने गरी म्याद थप भएको देखिँदा हर्जाना कट्टा नगरेकोले भ्रष्टाचार गरेको भन्न नमिल्ने।

भवनहरू निर्माणको क्रममा उपलब्ध प्राविधिक परामर्श सेवाबापतको भुक्तानी रकम हिनामिना भएको भन्ने आरोपदाबी रहे पनि परामर्श सेवा सञ्चालन समितिको निर्णयानुसार भएका कार्यको मूल्याङ्कनका आधारमा भएको भुक्तानी अन्यथा मान्न नमिल्ने।

पोखरा विश्वविद्यालयको “अनुसन्धान तथा परामर्श सेवासम्बन्धी कार्यविधि, २०६७” स्वीकृत गरी लागू गरिएको र सोही कार्यविधिअनुसार नै परामर्श समिति गठन भई कार्य गरेको देखिन्छ, उक्त कार्यविधिले गठन गरेको समितिले विभिन्न कार्यादेशअनुसार कार्य गरेको देखिएबाट यसरी गरेको कामको भुक्तानीलाई भ्रष्टाचारजन्य कार्य भन्न नमिल्ने।

विश्वविद्यालयबाट सम्पादन गरिनु पर्ने विभिन्न कामको लागि सवारी साधन प्रयोग भएको अवस्थामा त्यस्तो प्रयोजनमा भएको इन्धन खर्च औचित्यपूर्ण रहेकै देखिने।

भ्रष्टाचारको अभियोग दाबी लिँदैमा बिनाप्रमाण भ्रष्टाचारजस्तो गम्भीर अपराधमा सजाय गर्न मिल्दैन। विधि र प्रक्रियाको अवलम्बन गरी सदनियतसाथ गरेका कामकारबाहीलाई भ्रष्टाचारजन्य कार्य भनी घोषित गर्ने हो भने सार्वजनिक संस्थामा रहेका वा राष्ट्र सेवक कर्मचारीले कानूनबमोजिम पाएको काम कर्तव्य र अधिकारको प्रयोग गर्न नसकी कार्य सञ्चालनमा नै बाधा पुग्न जाने।

भ्रष्टाचार निवारण ऐनको उद्देश्य पनि समाजमा सदाचार, आर्थिक अनुशासन र नैतिकता कायम राख्ने

हो । आफूलाई तोकेको जिम्मेवारी विधि र प्रक्रियाको अवलम्बन गरी सदनियतसाथ सम्पन्न गरेकोमा त्यस्ता कार्यलाई भ्रष्टाचारको कोटीभित्र राख्न नमिल्ने ।

तसर्थ उपर्युक्त विवेचित आधार कारणबाट प्रतिवादीहरू श्री खगेन्द्रप्रसाद भट्टराई, श्री मानबहादुर के.सी., श्री केशरजंग बराल, श्री ओमप्रकाश शर्मा, श्री यादव थापा, श्री हरिबहादुर खड्का, श्री गोबर्धन भट्टराई, श्री सुरेशप्रसाद बास्तोला, श्री चन्द्रमणि पौडेल, श्री रविन्द्रप्रसाद बराल, श्री विनोदप्रसाद ढकाल, श्री ईश्वरचन्द्र बानिया, श्री भवानीप्रसाद पाण्डे, श्री ईन्द्रप्रसाद तिवारी, श्री पदमबहादुर शाही, श्री दीपकराज पौडेल, श्री ज्ञानेश्वर शर्मा, श्री होमबहादुर थापा मगर, श्री पूर्णचन्द्र शर्मा, श्री बलराम भट्टराई, श्री ध्रुवप्रसाद अर्याल, श्री कर्णवीर पौडेल क्षेत्री, श्री रामेश्वर भण्डारी र श्री सुरेश बरालसमेतले आरोपित कसुरबाट सफाई पाउने ठहर्‍याई विशेष अदालत, काठमाडौँबाट मिति २०७२।४।१८ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : मुकुन्द आचार्य

कम्प्युटर: प्रेमबहादुर थापा

इति संवत् २०७४ साल जेठ २ गते रोज ३ शुभम् ।

५

मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा. र मा.न्या.श्री डम्बरबहादुर शाही, ०७२-WO- ०३१२, उत्प्रेषण, कर्णबहादुर कुँवर वि. गृह मन्त्रालय, सिंहदरबारसमेत

नेपालको संविधानको धारा १८ द्वारा प्रदत्त समानताको हकले कसैलाई पनि कानूनको समान संरक्षणबाट वञ्चित गरिने छैन भन्ने प्रस्ट गरेको छ । कानूनको समान संरक्षण भन्नाले कानूनको प्रयोग गर्दा समान स्थितिका व्यक्तिहरूमा असमान रूपमा प्रयोग गरिनु हुन्न भन्ने हो । कानूनको समान संरक्षण समान स्थितिका व्यक्तिलाई दिइनुपर्ने समान व्यवहार हो । समान व्यक्तिहरूका बीचमा भेदभाव गरिएको देखिएमा समानताको हक क्रियाशील हुने ।

उपर्युक्त विवेचित आधार प्रमाणबाट निवेदकउपर भेदभावपूर्ण तरिकाबाट कानूनको प्रयोग गरी निवेदकलाई नोकरीबाट बरखास्त गर्ने गरी भएको निर्णयलाई कानूनसम्मत भन्न नमिल्ने हुँदा सशस्त्र प्रहरी बल विन्ध्यवासिनी गण कपिलवस्तु चन्द्रौटाका सशस्त्र प्रहरी उपरीक्षकबाट मिति २०७०।१२।१७ मा सेवाबाट हटाउने गरी गरेको निर्णयलाई सदर गरेको पश्चिम क्षेत्रीय सशस्त्र प्रहरी बल मुख्यालय मुक्तिनाथ बाहिनी पोखराको मिति २०७२।४।१५ को निर्णय त्रुटिपूर्ण देखिँदा उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर हुने ।

अब निवेदक प्र.ह.कर्णबहादुर कुँवरलाई पनि प्र.स.नि.द्वारिका थारूको सरहको तत्कालीन सशस्त्र प्रहरी नियमावली, २०६० को नियम ८४(क) (५) बमोजिम तल्लो पदमा घट्टुवाको सजाय कायम गरी पुनर्बहाली गर्नु भन्ने विपक्षीहरूको नाउँमा परमादेशसमेत जारी हुने ।

इजलास अधिकृत: शिवहरी पौड्याल

कम्प्युटर: चन्दनकुमार मण्डल

इति संवत् २०७४ साल माघ २१ गते रोज १ शुभम् ।

इजलास नं. ६

१

मा.न्या.श्री जगदीश शर्मा पौडेल र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल, ०७१-CR-१२०६, कर्तव्य ज्यान र कुटपिट, कारसाङ वाइवा तामाङ वि. नेपाल सरकार

प्रतिवादी कारसाङ वाइवाले माइलीमाया वाइवा र जुमान सिंह घिसिडलाई कुटपिट गरेकोमा उपचारको क्रममा मकवानपुर अस्पतालमा जुमान सिंह घिसिडको मृत्यु भएको भन्ने जाहेरी दरखास्त तथा टाउकोको दायौँतर्फ फुटी भित्रको हड्डी देखिएको तथा दायौँ आँखासमेत फुटी रगतपच्छे भएको भन्ने जुमान सिंह घिसिडको लास जाँच मुचुल्का रहेको देखिन्छ । पीडित माइली माया वाइवाको घाउ जाँच

प्रतिवेदनबाट निजको दाहिने हातको नाडी भाँचिएको भन्ने देखिन्छ। टाउकोको चोटको कारण मृत्यु भएको भन्ने जुमान सिंह घिसिङको शव परीक्षण प्रतिवेदन रहेको, प्रतिवादीको अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष तथा अदालतको बयानलगायत बुझिएका व्यक्तिहरूको कागज र बकपत्रसमेतको आधारमा मृतक जुमान सिंह घिसिङको मृत्यु कर्तव्यबाट भएको तथा माइलीमाया वाइवाको हात भाँचिई अङ्गभङ्ग भएको भन्ने प्रस्तुत वारदातको तथ्य स्थापित हुन आउने।

मृतकको टाउको फुटेको, आँखा फुटी क्षतविक्षत भएको तथा नाकमा समेत घाउचोट लागेको भन्ने लास जाँच मुचुल्काबाट देखिएको छ। टाउकोको चोटको कारण मृत्यु भएको भन्ने शव परीक्षण प्रतिवेदनसमेतले देखाएको अवस्था छ। प्रतिवादीले अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष तथा अदालतमा बयान गर्दासमेत आफूले माइलीमाया र जुमान सिंहलाई लाठीसमेतले कुटपिट गरेको हो भनी वारदातमा साबित रही बयान गरेको देखिन्छ। निजको सो बयानलाई जाहेरी, लास जाँच मुचुल्का, घाउ जाँच प्रतिवेदन, शव परीक्षण प्रतिवेदनसमेतले पुष्टि गरिरहेको अवस्थासमेत देखिने।

प्रतिवादीले उक्त वारदात आत्मरक्षाको क्रममा घटेको हो भनी जिकिर लिएको छ। सो सम्बन्धमा हेर्दा निजले अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष बयान गर्दा तथा अदालतमा समेत बयान गर्दा उक्त कुराको जिकिर लिएको अवस्था देखिँदैन। पुनरावेदन गर्दाको अवस्थामा मात्र सो कुराको जिकिर लिएको अवस्था छ। प्रस्तुत वारदातको अवस्था हेर्दा पनि प्रतिवादीलाई मृतकले ज्यानै मार्नेसम्मको कार्य गरिसकेको र सो अवस्थामा भरमग्दुर कोसिस गर्दा पनि उक्त कार्यबाट बच्ने अन्य उपाय नरहेको स्थितिमा प्रतिवादीले प्रहार गर्दा वारदात घटेको भन्ने पनि नदेखिने।

आफ्नो श्रीमतीलाई कुटपिट गरिरहेको अवस्थामा जुमान सिंह घिसिङले बचाउन जाँदा

प्रस्तुत वारदात घटेको देखिन्छ। माइलीमाया प्रतिवादी कारसाङ वाइवाको श्रीमती भए पनि निजलाई यी प्रतिवादीले कुटपिट गरेको कार्य कानूनविपरीत भएकोले सोलाई रोक्न गएको अवस्थामा जुमान सिंह घिसिङलाई नै मरणासन्न हुने गरी कुटपिट गरेको र उपचारको क्रममा निजको मृत्यु भएको हुँदा निज प्रतिवादीले पुनरावेदन जिकिर लिएझैं आत्मरक्षाको क्रममा ज्यान मर्न गएको भन्न सकिने अवस्था पनि नदेखिने।

अब निज प्रतिवादी करसाङ वाइवा तामाङलाई हुन सक्ने सजायको सन्दर्भमा विचार गर्दा निज प्रतिवादीले आफ्नो श्रीमती माइलीमायालाई कुटपिट गरिरहेको अवस्थामा बचाउनको लागि आएका ससुरा जुमान सिंह घिसिङलाई समेत टाउको लगायतको संवेदनशील अङ्गमा पटकपटक प्रहार गरेको देखिन्छ। यसरी यी प्रतिवादीले आफूले गरिरहेको गैरकानूनी कामबाट रोक्न आएका मानिसलाई नै मरणासन्न हुने गरी कुटपिट गरेको देखिँदा निजलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने गरी भएको पुनरावेदन अदालतको फैसलालाई अन्यथा मान्न नमिल्ने।

अतः उल्लिखित तथ्य प्रमाणको आधारमा प्रतिवादी करसाङ वाइवा तामाङले जुमान सिंह घिसिङलाई कर्तव्य गरी मारेको र माइलीमायाको हात भाँची कुटपिटको २ र ६ नं. बमोजिम अङ्गभङ्ग कसुरसमेत गरेको भन्ने सप्रमाण पुष्टि हुन आएकोले निजलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद गर्ने गरी तथा सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय भएकोले ऐजान कुटपिटको ६ नं. बमोजिम दुई वर्ष कैद सजाय गरिरहन परेन भनी काभ्रेपलाञ्चोक जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालत, पाटनको मिति २०७०।८।१८ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर

हुने ।

इजलास अधिकृत: रामु शर्मा

कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

इति संवत् २०७३ साल पुस २७ गते रोज ४ शुभम् ।

२

मा.न्या.श्री जगदीश शर्मा पौडेल र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल, ०७१-CR-०९०७, कर्तव्य ज्यान, कालुराम भन्ने विरबहादुर तामाङ वि. नेपाल सरकार

पुनरावेदक / प्रतिवादीउपर किटानी जाहेरीमा परेको र अनुसन्धान अधिकारी तथा अदालतमा समेत यी पुनरावेदकले आफूले घरबाट चक्कु लिई गई ओरालो बाटोमा पछाडिबाट धकेली लडाई पटकपटक चक्कुले पेट र छातीमा प्रहार गरी मारेको हो भनी कसुरमा साबित भई बयान गरेको देखिन्छ । यी पुनरावेदकले मृतकलाई मार्न प्रयोग गरेको चक्कु र वारदातको अवस्थामा यी पुनरावेदकले लगाएको पाइन्टसमेत यिनको घरबाटै बरामद भएको, प्रहरीमा कागज गर्ने रामबहादुर तामाङ, पृथ्वी तामाङ, धनमाया तामाङलगायतले कागज गर्दा यी पुनरावेदकले नै मृतकलाई मारेको सुनेको भनी गरिदिएको कागज तथा सोही व्यवहारको किस्मत अधिकारीको घटना विवरण कागजसमेतबाट यी पुनरावेदकले नै मृतकलाई मारेको भन्ने देखिने ।

छातीको बीच भाग र पेटमा लामो घाउ देखिएको भन्ने बेहोराको लासजाँच मुचुल्का तथा मृत्युको कारण Multiple Sharpe force injured to the chest and abdomen भन्ने शव परीक्षण प्रतिवेदनको बेहोराको पुनरावेदक / प्रतिवादीले यस अदालतमा समेत गरेको बयानलाई समर्थन गरिदिएको देखिँदा पुनरावेदकको चक्कुको प्रहारले नै मृतकको मृत्यु भएको भन्ने नै देखिने ।

पुनरावेदकले सुरु अदालतमा बयान गर्दा आफू १६ वर्ष पुगी १७ वर्ष लागेको भनी बयान गरेको देखिन्छ भने मिति २०७०।८।३ मा वारदात भएको

देखियो । सुरु अदालतमा बयान गर्दा नै यी प्रतिवादीले आफू १७ वर्ष लागेको भनी बयान गर्नुका अतिरिक्त आफूले पुरानो रिसइवी भएका कारण बाटोमा बेलुकी एकलै हिँडिरहेको अवस्थामा मृतकलाई देखी यसलाई आज मारिदिन्छु भनी घरबाट चक्कु लिई गई बाटोमा पछाडिबाट धकेली लडाई चक्कुले पटकपटक छाती र पेटमा प्रहार गरी मारेको भनी बयान गरेकोसमेत देखिँदा निजले योजना बनाई मार्ने नै मनसाय बनाई मृतकलाई मारेको देखिने ।

आफू २०५४।११।२८ मा जन्मेको गा.वि.स. को अभिलेखबाट देखिएकाले सोही आधारमा उमेर गणना गरी बालबालिकासम्बन्धी ऐनको आधारमा सजायमा कम गरिपाउँ भनी पुनरावेदन जिकिर लिएको देखिए पनि निजले गा.वि.स. मा मिति २०७०।९।८ मा जन्म दर्ता गराएको देखियो । मिति २०७०।८।३ मा वारदात घटाएको र सो मितिभन्दा पछि मिति २०७०।९।८ मा जन्मदर्ता गराएको देखिएको तथा पुनरावेदक आफैँले सुरु अदालतमा बयान गर्दा आफू १६ वर्ष पूरा भई १७ वर्ष लागेको भनी लेखाएको अवस्था हुँदा गा.वि.स. मा मिति २०७०।९।८ मा गरिएको जन्मदर्तालाई विश्वसनीय मान्न मिल्ने नदेखिँदा यी पुनरावेदकलाई उमेर नपुगेको भनी बालबालिकासम्बन्धी ऐन, प्रयोग गरी सजाय गर्न मिल्ने देखिन नआउने ।

मृतकलाई पुरानो रिसइवी साँध्ने उद्देश्यले योजना बनाई एकलै बाटोमा हिँडिरहेको देखी घरबाट चक्कु लगी अँध्यारो बाटोमा लडाई चक्कुले पटकपटक छाती र पेटमा प्रहार गरी निर्ममतासाथ मृतकलाई मारेको देखिन्छ । यसरी योजना र मनसाय बनाई निर्ममतासाथ मृतकलाई मारेको स्पष्ट देखिएको अवस्था हुँदा यस्तो क्रूरतापूर्वक भएको अपराधमा अ.बं.१८८ नं. लगाई सजाय घटाउनसमेत मिल्ने देखिन नआउने ।

अतः उल्लिखित तथ्य, प्रमाण र कारणसमेतबाट प्रतिवादी कालुराम भन्ने विरबहादुर

तामाङलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १ नं. को कसुरमा ऐ. महलको १३(१) नं. बमोजिम सजाय गर्ने गरेको सुरु धादिङ जिल्ला अदालतको फैसला सदर हुने ठहर गरी पुनरावेदन अदालत, पाटनबाट मिति २०७१।१।२३ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: रामु शर्मा

कम्प्युटर: रमला पराजुली

इति संवत् २०७३ साल पुस २७ गते रोज ४ शुभम्।

३

मा.न्या.श्री जगदीश शर्मा पौडेल र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल, ०७१-CR-०९७३, कर्तव्य ज्यान, *दिलचन राना वि. नेपाल सरकार*

सहअभियुक्त भाइलाल चौधरीले यी प्रतिवादीलाई गरेको पोल अनुसन्धानको क्रममा कागज गर्ने व्यक्तिहरूको बेहोराबाट समेत समर्थित भएको देखिन्छ। प्रतिवादी दिलचन रानाको अदालतमा भएको बयानबाट निज वारदातस्थलमा उपस्थित रहेको देखिन्छ भने सो वारदातमा अर्का प्रतिवादी भाइलाल चौधरीको संलग्न यी प्रतिवादीको बयानबाट समेत देखिएको छैन। यसरी सहअभियुक्त आफू आरोपित कसुरमा इन्कार रही अन्य कसैलाई गरेको पोल मिसिल संलग्न अन्य प्रमाणबाट समर्थित हुन आएको खण्डमा त्यस्तो पोललाई प्रमाणको रूपमा ग्रहण गर्नु नपर्ने कुनै युक्तियुक्त कारण नदेखिने। वादीको साक्षीले प्रतिवादी दिलचन रानाले पुलिस चौधरीलाई कुटपिट गरी मारेको होइन भनी बकपत्र गरेको देखिए पनि निज साक्षी वारदातको प्रत्यक्षदर्शी होइनन्। यसका अतिरिक्त निज प्रतिवादीले अनुसन्धानका क्रममा निजलाई गढाउ गर्ने गरी कागज लेखाएका व्यक्तिहरू आफ्नो बेहोरा फरक पर्ने गरी बकपत्र गरेको देखिए पनि वारदात भएको लामो समयपश्चात् निजहरू अदालतमा उपस्थित भई बकपत्र गरेकोबाट निजको बेहोरा फरक पर्न सक्ने कुरालाई पनि इन्कार गर्न नमिल्ने।

प्रतिवादी दिलचन राना वारदातस्थलमा उपस्थित रहेको देखिएको र निज प्रतिवादी र मृतकबीच लेनदेनको विषयमा पहिलेदेखि नै रिसइवी रहेको, वारदातस्थलमा उपस्थित व्यक्तिहरूले प्रतिवादी दिलचन रानाले कुटपिट गरी छतबाट फालेको हो भनी गरेको कागजसमेतबाट निज प्रतिवादी दिलचन राना र मृतक पुलिस चौधरीसँग लेनदेनको विषयमा झगडा भई पहिलादेखि नै रहेको रिसइवी साँध्नको लागि मृतकलाई मार्ने मनसायले कुटपिट गरी ट्युबेलको क्वाटरको छतबाट फालिदिएका कारण पुलिस चौधरीको मृत्यु हुन गएको देखिएकोले निजलाई आरोपित कसुरमा सजाय गर्ने गरी भएको फैसलालाई अन्यथा भन्न मिलेन। प्रतिवादीले आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउनुपर्दछ भनी निजको पुनरावेदन जिकिर र निजको तर्फबाट उपस्थित विद्वान् वैतनिक अधिवक्ताको बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

तसर्थ, विवेचित आधार कारणबाट प्रतिवादी दिलचन रानालाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १ नं. विपरीतको अपराधमा ऐ.महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद हुने ठहर्‍याई कैलाली जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला सदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत, दिपायलबाट मिति २०७१।८।२३ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: रामु शर्मा

कम्प्युटर: रमला पराजुली

इति संवत् २०७३ साल पुस २७ गते रोज ४ शुभम्।

इजलास नं. ७

१

मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री मीरा खड्का, ०६८-CR-०७७४, कर्तव्य ज्यान, *नेपाल सरकार वि. कर्णबहादुर वि.क.समेत*

कर्तव्य ज्यानजस्तो संगीन मुद्दामा कसैउपर

अभियोग लगाउनु मात्र पर्याप्त हुँदैन अभियोगबमोजिमको कार्य प्रतिवादीबाट भयो भएन भनी अभियोजन पक्षले शंकारहित तवरबाट प्रमाणित गर्न सक्नुपर्ने न्यायिक मूल्य मान्यता, एवम् स्थापित नजिर सिद्धान्तसमेतबाट प्रतिवादी सुनिलकुमार मास्वाउपरको वादी दाबी मिसिल संलग्न कागजात, सबुद प्रमाणबाट वस्तुनिष्ठ तवरले पुष्टि हुन नसकेको प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादी सुनिलकुमार मास्वालाई आरोपित कसुरमा सफाइ दिने गरी भएको पुनरावेदन अदालत, इलामको फैसला निजको हकमा मिलेकै देखिन आउने ।

प्रतिवादीहरू कर्णबहादुर वि.क, निडतेम्बा शेर्पा, काजीमान बनेम लिम्बुको कसुरजन्य कार्यमा सहभागिता रहेको बारेमा स्वीकारी बयान गरेको स्थिति, ज्यान मरेको अवस्था तर निज प्रतिवादीहरूको मृतकलाई मारुनुपर्नेसम्मको कारण, रिसइवी एवम् स्थितिहरू नदेखिएको अवस्था यद्यपि निजहरूसमेत वारदातस्थलमा उपस्थित भई ज्यान मर्न नदिन केही प्रयत्न बचावटका उपाय अवलम्बन गरेको भन्ने नदेखिँदा ज्यान मरेको देखिएको स्थितिमा निजहरूको कसुरजन्य कार्यमा संलग्नताको मात्रा र सोको गाम्भीर्य एवम् परिणामसमेतको आधारमा निज प्रतिवादीहरूलाई जनही १ वर्ष ६ महिना कैद सजाय गर्ने गरी भएको पुनरावेदन अदालत, इलामको फैसला निजहरूको हकमा समेत अन्यथा नदेखिने ।

प्रतिवादीहरू वारदातस्थलमा मौजुद रहेको अवस्था देखिए तापनि मुख्य रूपमा ज्यान मार्ने कार्यका निमित्त निजहरू नै जिम्मेवार रहे भएको भन्ने तथ्य मिसिल संलग्न प्रमाण कागजातबाट खुल्न नआएको अवस्था एवम् सोतर्फको वादी दाबी अभियोजन पक्षले सबुद प्रमाणबाट पुष्टि गर्न नसकेको अवस्थामा प्रतिवादीहरूको कसुरजन्य कार्यमा रहेको भूमिकालाई विश्लेषण गरी मात्र सजाय कायम गर्नुपर्ने न्यायिक मूल्य मान्यता रहेको अवस्थामा प्रतिवादीहरूलाई अभियोग दाबीबमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने

वादी नेपाल सरकारको तर्फबाट उपस्थित विद्वान् उपन्यायाधिवक्ताको बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

अतः उपर्युक्त विवेचित आधार, प्रमाण तथा कारणबाट प्रतिवादी अविरल भन्ने सुनिल मास्वा लिम्बुलाई आरोपित कसुरबाट सफाइ दिने गरी र अन्य प्रतिवादीहरू कर्णबहादुर वि.क, निडतेम्बा शेर्पा, काजीमान बनेम लिम्बुलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १७(३) बमोजिम १ वर्ष ६ महिना कैद सजाय हुने ठहर गरी भएको सुरु ताप्लेजुङ जिल्ला अदालत र सोही फैसलालाई सदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत, इलामबाट मिति २०६८।३।५ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृतः कमलकान्त जोशी

कम्प्युटरः मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७५ साल जेठ ७ गते रोज २ शुभम् ।

२

मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री मीरा खड्का, ०६८-CR-०४३५, जबरजस्ती करणी र डाँका, नेपाल सरकार वि. उस्मान मियाँसमेत

जबरजस्ती करणी र डाँका जस्तो संगीन अपराधमा पीडित जाहेरवाली र चस्मदिद गवाह भनिएकी जाहेरवालाकी छोरी स्वयम्ले अदालतमा आई गरिदिएको बकपत्रमा प्रतिवादीहरू उस्मान मियाँ, मुस्लिम मियाँ र सराज मियाँको आरोपित कसुरजन्य कार्यमा संलग्नता रहेकोबारे भन्न सकेको पाइँदैन । वस्तुस्थिति मुचुल्काका व्यक्ति सुरेन्द्र दाहालले समेत अदालतमा आई वारदातको भोलिपल्ट घटनाबारे थाहा पाएको हो, को कसले डाँका र जबरजस्ती करणी गरेका हुन् थाहा भएन (स.ज ५ मा) र प्रहरीमा भएको आफ्नो कागज प्रहरीले नै तयार गरेको र सो आफूलाई नसुनाई सहिछाप मात्र गर्न लगाएको हो भनी गरिदिएको बकपत्रबाट निज प्रतिवादीहरू उस्मान मियाँ, मुस्लिम मियाँ र सराज मियाँको आरोपित कसुरमा संलग्नता

रहेको कुरा सबुद प्रमाणका आधारमा पुष्टि भएको नदेखिने।

निज प्रतिवादीहरूउपर जाहेरवाली, निजकी छोरी एवम् वस्तुस्थिति मुचुल्काका व्यक्ति एवम् सहप्रतिवादीहरूसमेतको कसुरमा संलग्नता रहेको भन्ने अदालतसमक्षको निजहरूको बकपत्रमा पोलसमेत रहेको नदेखिएको, प्रतिवादीहरूका साक्षीहरूले अदालतमा निज प्रतिवादीहरूले आरोपित कसुर नगरेको भन्ने बेहोराको बकपत्र गरिदिएकोसमेत आधारबाट केवल जाहेरी दरखास्तलाई मात्र आधार मानी प्रतिवादीहरू उस्मान मियाँ, मुस्लिम मियाँ र सराज मियाँलाई डाँका तथा जबरजस्ती करणीको कसुरमा दोषी मुकरर गर्नु न्यायका मान्य सिद्धान्तविपरीत हुने हुँदा निज प्रतिवादीहरूलाई आरोपित कसुरमा सफाइ दिने गरी भएको सुरु फैसलालाई सो हदसम्म सदर गरेको पुनरावेदन अदालत, विराटनगरको फैसला निज प्रतिवादीहरूको हकमा अन्यथा नदेखिने।

पीडित जाहेरवालीको अनुहार तथा शरीरमा घाउ खत लागेको भन्ने निजको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदन र चस्मदिद गवाहका रूपमा देखिएकी जाहेरवालाकी छोरी र जाहेरवाली स्वयम्ले अदालतमा बकपत्र गर्दा डाँका वारदात र जबरजस्ती करणी गरेको भनी यी प्रतिवादीउपर पोल गरी बकपत्र गरेको पाइयो। निजहरूले आफूउपर गरेको सो पोल गर्नुपर्ने कारण के परेको हो ? प्रतिवादीले भन्न सकेको देखिँदैन। मौकामा आरोपित कसुरमा साबित रहेका प्रतिवादी जवार मियाँले आफ्नो मौकाको बयानलाई अन्यथा हो वा आफ्नो इच्छा विरुद्धको हो भन्ने वस्तुनिष्ठ सबुद प्रमाणबाट समर्थन गराउन सकेको अवस्था देखिँदैन। यसरी मिसिल संलग्न प्रतिवादीउपरको किटानी जाहेरी, घटनास्थल प्रकृति मुचुल्काको बेहोरा, कोशी अञ्चल अस्पतालबाट भएको जाहेरवालीको घा जाँच केस फाराममा उल्लेख

भएको बेहोरा र पीडित जाहेरवालीको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदनसमेतबाट प्रतिवादी जवार मियाँको अभियोग दाबीबमोजिम डाँकासहितको जबरजस्ती करणीको वारदातमा संलग्नता रहेको देखिने।

मुलुकी ऐन, चोरीको महलको १४(४) मा, “डाँका गर्नेलाई बिगोको डेढी बढाई जरिवाना गरी पहिलो पटकलाई ६ वर्ष कैद गर्नुपर्छ” भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको छ। यस कानूनी व्यवस्थाका आधारमा निज प्रतिवादीलाई अभियोग दाबीबमोजिम डाँकाको कसुरमा चोरीको १४(४) नं. बमोजिम ६ वर्ष कैद र बिगो रु. १,०३,०००।- र सोको डेढीसमेत गरी हुन आउने रु. १,५४,०००।- जरिवाना हुने र निज प्रतिवादीले पीडित जाहेरवालीलाई जबरजस्ती करणीसमेत गरेको स्थापित भएको देखिँदा मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको ३(५) नं. मा रहेको “बीस वर्ष वा सोभन्दा बढी उमेरकी महिलालाई जबरजस्ती करणी गर्नेलाई पाँचदेखि सात वर्षसम्म कैद सजाय हुन्छ” भन्ने कानूनी व्यवस्थाका आधारमा निजलाई ५ वर्ष कैद सजाय हुने, साथै दण्ड सजायको १० नं. बमोजिम ठूलो खतको सजाय हुने तथा सानो खतको सजाय नखापिने हुँदा सोहीबमोजिम ६ वर्ष कैद र जरिवाना हुने ठहरी पुनरावेदन अदालत, विराटनगरबाट भएको फैसला निजको हकमा सो हदसम्म मिलेकै देखिने।

पीडित जाहेरवालीउपर प्रतिवादी जवार मियाँले जबरजस्ती करणीको वारदात गरेको देखिएको र पुनरावेदन अदालत, विराटनगरबाट निजलाई जबरजस्ती करणीतर्फ समेत सजाय हुने ठहर गरी फैसला गरेको देखिएको अवस्थामा प्रतिवादी जवार मियाँबाट पीडितलाई क्षतिपूर्तिसमेत भराई दिनुपर्नेमा सो सम्बन्धमा केही नबोली भएको पुनरावेदन अदालत, विराटनगरको मिति २०६७।११।१२ को फैसला प्रतिवादी जवार मियाँबाट क्षतिपूर्ति नभराएको हदसम्म केही उल्टी भई निज जाहेरवालीले प्रतिवादी जवार

मियाँबाट क्षतिपूर्तिबापत रु. २५,०००।- भराई पाउने ।
इजलास अधिकृत: कमलकान्त जोशी
कम्प्युटर: अभिषेककुमार राय
इति संवत् २०७५ साल जेठ ७ गते रोज २ शुभम् ।

३

मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी., ०७०-CR-१६७१, हातहतियार खरखजाना, नेपाल सरकार वि. खुसीराम चौधरी

प्रतिवादी खुसीराम चौधरीले अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष बयान गर्दा मैले बटैयामा कमाएको यज्ञराज भट्टको मसुर बारीमा फालेको अवस्थामा २०६३ साल चैत्र महिनामा पाई मैले हालसम्म उक्त हतियार बारूद आफ्नै घरमा लुकाई राखेको अवस्थामा मिति २०६८।१२।१२ गते उक्त भरुवा बन्दुक लोड गरी साथमा बोकी आफ्नै भाइ विन्दु चौधरीको घर भेटघाट गर्न गएको अवस्थामा निज भाइको घर नजिकैको बाटोमा अचानक पटकन गई फायर भएपछि प्रहरीले मलाई फेला पारी पक्राउ गरी ल्याएका हुन् । मसँग हातहतियार राख्ने अनुमति छैन । बरामद भएको भरुवा बन्दुक र १०० ग्राम बारूद मबाट बरामद भएको हो भन्ने खुलाइदिएको पाइन्छ भने सोही बेहोरालाई समर्थन हुने गरी निज प्रतिवादी स्वयम्ले जिल्ला प्रशासन कार्यालय, कैलालीमा बयान गरेको पाइन्छ । साथै उल्लिखित बेहोरालाई समर्थन गर्दै यी प्रतिवादीसँग मिति २०६८।१२।१२ गते बेलुकी २०:३० बजेको समयमा गस्ती प्रहरीले प्रतिवादी खुसीराम चौधरीबाट भरुवा बन्दुक एकथान र बारूद १०० ग्राम मालाखेती गा.वि.स. वडा नं. २ मा बरामद गरेको ठीक साँचो हो भनी सर्जमिन मुचुल्काका व्यक्तिहरू पूर्णबहादुर मल्ल र मानबहादुर मडैले जिल्ला प्रशासन कार्यालय, कैलालीमा बकपत्र गरेको पाइन्छ । प्रतिवादी खुसीराम चौधरीको साथबाट भरुवा बन्दुक थान-१ र १०० ग्राम बारूदको डिब्बा थान-१ बरामद भएको भन्ने बरामदी मुचुल्का रहेको पाइन्छ ।

उल्लिखित तथ्यहरूबाट प्रतिवादी खुसीराम चौधरीले विना इजाजतको भरुवा बन्दुक र त्यसमा प्रयोग हुने बारूदसमेत आफूसामथ राखेको प्रस्ट हुन आएको हुँदा निज प्रतिवादीले अभियोग माग दाबीबमोजिम कसुर गरेको स्वतः पुष्टि हुन आउने ।

प्रतिवादी खुसीराम चौधरीबाट केवल १०० ग्राम बारूद बरामद भएको अवस्थामा निजले बोकेको भरुवा बन्दुकमा बारूदलगायतका चिजवस्तु राखेपछि मात्र त्यसले हातहतियारको स्वरूप निर्धारण हुने हो । बारूद विनाको त्यसरी बन्दुक राखेको अवस्थाको कुनै अर्थ राख्दैन । यस्तो अवस्थामा बरामद भएको खरखजानाको प्रयोग वा सन्दर्भ विचारणीय हुन्छ । जुन सन्दर्भ कहाँकतैबाट खुल्दैन । प्रतिवादी खुशीराम चौधरीको अनुसन्धान अधिकारीसमक्षको बयान तथा अदालतको बयान, प्रहरी प्रतिवेदन र मौकामा कागज गर्ने व्यक्तिहरूसमेतको बयानबाट बरामद भएको १०० ग्राम बारूद प्रतिवादीले बोकेको भरुवा बन्दुकमा प्रयोग गर्नेसम्मको मात्र प्रयोजनका लागि साथमा राखेको भन्ने खुल्न आउँछ । सोबाहेकको अन्यथा प्रयोजन खुलेको देखिएन । तसर्थ बरामद भएको १०० ग्राम बारूदलाई मात्र आधार लिई तथा दफा २०(३)(क) बमोजिमको अवस्था विद्यमान नहुँदा नहुँदै पनि छुट्टै खरखजानासम्बन्धी कसुर मानेर सजाय गर्न नमिल्ने देखिँदा प्रस्तुत पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

तसर्थ, प्रतिवादी खुसीराम चौधरीलाई हातहतियार खरखजाना ऐन, २०१९ को (दोस्रो संशोधन, २०६४ सहित) दफा ३(२) को कसुर गरेको पुष्टि भई निजलाई सोही ऐनको दफा २०(२) बमोजिम रु.६०,०००।- (साठी हजार) जरिवाना तथा बरामद भएको भरुवा बन्दुक, ऐ. मा प्रयोग हुने बारूदसमेत ऐनको दफा १६ बमोजिम जफत हुने ठहर्‍याई जिल्ला प्रशासन कार्यालय, कैलालीबाट मिति २०६९।१२।१८ मा भएको फैसला मनासिब हुने ठहरी पुनरावेदन

अदालत, दिपायलबाट मिति २०७०।०४।२१मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: दिपेन्द्र तिवारी

कम्प्युटर: पद्मा आचार्य

इति संवत् २०७४ साल असोज ४ गते रोज ४ शुभम्।

४

मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी., ०७१-CI-००९९, अंश चलन, नरेन्द्रेश्वरी श्रेष्ठसमेत वि. प्रदिपकुमार श्रेष्ठ

वादीले आफ्नी आमाउपर अंशको दाबी गरी प्रस्तुत मुद्दा दायर गरेपश्चात् आमाको मृत्यु भएकोले यी वादी र निजकी आमासमेतले वादी भई मिति २०६०।५।१ मा दायर गरी मिति २०६४।३।११ मा तामेलीमा रहेको मुद्दामा यिनै वादीले सो मुद्दाकी वादीमध्येकी स्व. आमाको हकमा मुद्दा सकार गरी उक्त मुद्दामा मिति २०६७।२।१९ मा गरेको मिलापत्रलाई कहींकतैबाट चुनौती दिएको नदेखिएकोले सो मिलापत्रको अस्तित्वसमेत जीवन्त रहिरहेको देखिने।

वादीले प्रस्तुत मुद्दाको फिराद दायर गरेपश्चात् आमाले आफ्नो जीवनकालमा मिति २०६५।९।२ गरिदिएको लिखतका आधारमा वादीले आफ्नो अंश हकको दाबी गर्न पाउने उक्त नैसर्गिक हकलाई एकातिर कुण्ठित गर्न मिल्ने देखिँदैन भने अर्कोतिर कुनै अंशियाराको मृत्यु भइसकेपश्चात् कुनै पनि कृत्रिम लिखतले सोही मृत अंशियारलाई जिवन्तता प्रदान गर्ने गरी अर्को कुनै अंशियाराको जन्म दिनसक्छ भनी मान्न मिल्नेसमेत नहुने।

वादीको एक मात्र अंशियाराको रूपमा रहेकी निजकी आमा राजेश्वरी श्रेष्ठको मृत्युपश्चात् वादीको हकमा स्वतः अंशियाराको संख्या नै घटेको देखिएकोले यस्तो अवस्थामा सो स्व.आमाले आफ्नो जीवनकालमा गरिदिएको कुनै लिखतलाई टेकेर स्व. आमाको तर्फबाट मुद्दामा प्रतिवाद गर्नेसम्मको अधिकार प्रदान गरिदिएकै आधारमा मात्र अंशियाराको संख्या पूर्ववत् रूपमा नै

जीवन्त कायम रहिरहन सक्छ भनी कुनै कानूनले परिकल्पना गरेकोसमेत नदेखिने।

वादीको आमा राजेश्वरी श्रेष्ठ जीवित छँदाका अवस्थामा वादी र निजकी आमाबाहेकका अन्य अंशियार कोही नरहेकोले यी वादीको हकमा निजकी आमा नै मूली भई वादीले निज आमाबाट अंश पाउने अंशियारको रूपमा रहेको अवस्था देखिएकोले वादीको आमाको नाउँमा रहेको सम्पत्ति जुनसुकै बेहोराले प्राप्त हुन आएको देखिए तापनि छोरा वादीको लागि सो सम्पत्ति पैतृक सम्पत्तिसरह देखिन आउने।

वादीले फिराद दायर गर्दाका अवस्थामा तत्काल कायम रहेको अंशियाराको जीवित उपस्थितिका आधारमा नै आफ्नी आमा राजेश्वरी श्रेष्ठलाई अंशियार संख्या देखाई फिराद दायर गरेको र उक्त अंशियाराको भौतिक जीवन प्राकृतिक रूपमा नै समाप्त हुँदाका अवस्थामा सोबमोजिमको अंशियाराको संख्यासमेत सोहीबमोजिम समाप्त भएको पुष्टि हुँदाहुँदै पनि यी वादीको हकमा उक्त सम्पत्तिमा २ भागको १ भाग अंश हक कायम गरिदिने गरी सुरु जिल्ला अदालतले गरेको उक्त त्रुटिपूर्ण फैसलालाई उल्टी गरी वादीको एकलौटी हक हुने गरी पुनरावेदन अदालत, पाटनबाट मिति २०७०।१२।२३ मा भएको फैसला मिलेकै देखिन आउने।

तसर्थ विवेचित आधार कारणसमेतबाट वादीले राजेश्वरी श्रेष्ठको सम्पत्तिबाट दुई भागको एक भाग अंश पाउने ठहर्‍याई सुरु काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट मिति २०६८।८।२० मा भएको फैसला उल्टी गरी वादीको एकलौटी हक कायम गरिदिने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, पाटनबाट भएको मिति २०७०।१२।२३ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: सुरथप्रसाद तिमल्सेना

कम्प्युटर: मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७४ साल असोज ४ गते रोज ४ शुभम्।

यसै लगाउको निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैअनुसार फैसला भएका छन्:

- ०७२-CI-१६३७, हालैको बकस लिखत बद्र, प्रदिपकुमार श्रेष्ठ वि. नरेन्द्रेश्वरी श्रेष्ठसमेत
- ०७२-CR-१७४३, जालसाजी, प्रदिपकुमार श्रेष्ठ वि. नरेन्द्रेश्वरी श्रेष्ठसमेत

५

मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी., ०७१-WO-०३७६, उत्प्रेषण / परमादेश, हुसेन मियाँ वि. भूमिसुधार कार्यालय, मोरङ, विराटनगरसमेत

कि.नं. १८३ को जग्गाका सम्बन्धमा एकै परिवारको मोही लगत कट्टा गरिपाउँ भनी सन्तोषप्रसाद रौनियारले निवेदकका पिताको जीवनकालमा नै पिता अर्थात् मोही जैनुद्धिन मियाका विरुद्धमा भूमिसुधार कार्यालय, मोरङमा निवेदन दिई सोउपर कारबाही चल्दै जाँदा निवेदन दाबीबमोजिम मोही लगत कट्टा गर्ने गरी भूमिसुधार कार्यालय, मोरङबाट मिति २०५६।६।१९ मा निर्णय भएको देखिन्छ। सो निर्णयउपर यी निवेदकले यस सर्वोच्च अदालतसमक्ष उत्प्रेषण रिट दायर गरेकोमा रिट निवेदकले तारेख गुजारेको हुँदा मिति २०५८।७।२८ मा उक्त रिट तामेली रहन गएको मिसिल संलग्न प्रतिलिपिबाट देखिन्छ। दाबीको कि.नं. १८३ को जग्गाको मोही यिनै निवेदकका बाबु जैनुद्धिन मियाको नाउँको लगत कट्टा गर्ने गरी मिति २०५६।६।१९ मा निर्णय भई सो निर्णयउपर यी निवेदकको पुनरावेदन अदालत, विराटनगरमा पुनरावेदन परी भूमिसुधार कार्यालयको निर्णय सदर भई अन्तिम भई बसेको अवस्थामा कानूनतः यी निवेदकका नाउँमा मोही नामसारी हुन सक्ने अवस्था नदेखिने।

तसर्थ, एकै परिवारका व्यक्ति जग्गाधनी र मोही भएको देखिएको भन्नेसमेतका आधारमा मिति ०५६।६।१९ मा मोही लगत कट्टा गर्ने गरी भूमिसुधार

कार्यालयबाट भएको निर्णयउपर यस अदालतमा निवेदकका दाजु नविन हुसेन मियाँको तर्फबाट उत्प्रेषण रिट दायर भई तोकिएको तारेखसमेत गुजारी बसेका कारण उक्त रिट निवेदनमा अन्तिम फैसला भएको देखिएको, मिति २०५६।६।१९ को निर्णयले मोही लगत कट्टा भइसकेको हुँदा वादी दाबी नपुग्ने ठहर गरी सुरु भूमिसुधार कार्यालय, मोरङबाट मिति २०६९।१२।२६ मा भएको फैसलाउपर पुनरावेदन परी पुनरावेदन अदालत, विराटनगरबाट मिति २०७१।२।६ मा भूमिसुधार कार्यालयको फैसला सदर गरी उक्त मोहीसम्बन्धी विवाद अन्तिम भइसकेको हुँदा हाल २०७१ सालमा मात्र निवेदकले विलम्ब गरी रिट निवेदन गर्न आएको देखिँदा पुनः उक्त विषयमा प्रवेश गरी निर्णय गर्न विलम्बको सिद्धान्तले समेत मिल्ने नदेखिँदा निवेदन मागबमोजिमको आदेश जारी गर्न परेन। प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृतः कोशलेश्वर ज्ञवाली

कम्प्युटरः अभिषेककुमार राय

इति संवत् २०७४ साल मङ्सिर ६ गते रोज ४ शुभम्।

६

मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी., ०७१-WO-०२८०, उत्प्रेषण / परमादेश, ओमकुमार दाहाल वि. नेपाल राष्ट्र बैंक, बालुवाटारसमेत

सामान्यतः सुनको प्रयोग गहनाको रूपमा हुने हो। व्यक्तिले सुन खरिद गरे पनि बिक्री गर्न, गरगहना बनाउन सुन व्यापारीकोमा नै जानुपर्ने हुन्छ। व्यक्तिले काँचो सुन लगाएर हिँड्ने पनि होइन। त्यसैले विधायिकाले निर्माण गरेको ऐनबमोजिम नेपाल राष्ट्र बैंकलाई अधिकार दिई विदेशी विनिमय अपचलन नहोस् भनेर केन्द्रीय बैंक आफैँले सुन खरिद गरी सुन चाँदी व्यवसायीलाई बिक्री गरेकोलाई अन्यथा भन्न नमिल्ने।

नेपाल राष्ट्र बैंकले सुनको कारोबारलाई समेत

व्यवस्थित गर्न, सुन आयात गर्ने सम्बन्धमा नियमन, नियन्त्रण एवम् व्यवस्थापन गर्न नसक्ने भन्ने पनि हुँदैन । सुनको कारोबारमा केही नियन्त्रण गर्न तथा आयातमा परिणात्मक बन्देज लगाउन आवश्यकतानुसार कार्यविधि बनाई हेरफेर र संशोधन गर्नसक्ने नै हुँदा यसलाई सम्पत्तिको अधिकारको रूपमा संवैधानिक अधिकारको हनन भएको भन्न नमिल्ने ।

तसर्थ, विदेशी विनिमय (नियमित गर्ने) ऐन, २०१९ को दफा १२ ले दिएको अधिकार प्रयोग गरी सुन आयात तथा बिक्री वितरणसम्बन्धी कार्यविधि, २०६८ जारी गरी नेपाल राष्ट्र बैंकले मिति २०६९।२।२ मा इ.प्र. परिपत्र सङ्ख्या ५७४ जारी गरी सुन आयात तथा बिक्री वितरण कार्यविधि, २०६८ मा संशोधन गरी बुँदा नं.४ अनुसारको मात्रामा नेपाल सुनचाँदी व्यवसायी सङ्घलाई ५० प्रतिशत, नेपाल रत्न तथा आभूषण सङ्घलाई ३० प्रतिशत, नेपाल सुनचाँदी कला व्यवसायी सङ्घलाई १० प्रतिशत र नेपाल हस्तकला महासङ्घलाई १० प्रतिशत बिक्री गर्नुपर्ने कोटा तय गरी आयातित शतप्रतिशत सुन व्यवसायीलाई मात्र बिक्री गर्नुपर्ने गरी नेपाल राष्ट्र बैंकले गरेको व्यवस्था एवम् सोहीबमोजिम गरेको परिपत्र कानूनबमोजिम नै गरेको देखियो । यसबाट रिट निवेदकको कुनै संवैधानिक वा कानूनी हक हनन भएको अवस्था विद्यमान नदेखिँदा निवेदकको मागबमोजिमको आदेश जारी गर्नु परेन । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: कोशलेश्वर ज्ञवाली
इति संवत् २०७४ साल मङ्सिर ६ गते रोज ४ शुभम् ।

७

मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी., ०७१-CR-०००७, कर्तव्य ज्यान र चोरी, नेपाल सरकार वि. अनु भन्ने अमर कार्कीसमेत

मृतकको मृत्यु कर्तव्यबाट भएकोमा विवाद नरहे तापनि निजलाई कर्तव्य गरी मार्नमा

यी प्रतिवादीहरूको संलग्नता रहेको भन्ने कुराको वस्तुनिष्ठ प्रमाण वादी पक्षबाट पेस हुन सकेको देखिँदैन । मृतकको घरमा डेरामा बसेको कारणले मात्र मृतकलाई यी प्रतिवादीहरूले कर्तव्य गरी मारेका होलान् भनी शंका र अनुमानको भरमा मात्र निष्कर्षमा पुग्नु फौजदारी न्यायको सिद्धान्तको प्रतिकूल हुन जाने र शंका, अनुमान र विश्वासको भरमा कर्तव्य ज्यान जस्तो गम्भीर फौजदारी अपराधमा प्रत्यक्षदर्शीको अभावमा घटना वारदातसँग सम्बद्ध युक्तियुक्त अन्य परिस्थितिजन्य प्रमाणबाट कसुर स्थापित हुनसक्नु पर्नेमा सोअनुसारको स्वतन्त्र प्रमाणहरूबाट परिस्थितिजन्य आधार प्रमाणहरू स्थापित हुन आएको नपाइएबाट प्रतिवादीहरूलाई अभियोग दाबीबाट सफाइ प्रदान गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत, महेन्द्रनगरबाट मिति २०७०।५।१७ मा भएको फैसला मिलेकै देखिन आउने ।

तसर्थ उल्लिखित विवेचित आधार प्रमाणहरूबाट प्रतिवादीहरूलाई अभियोग माग दाबीबाट पूर्णरूपमा सफाइ दिनु पर्नेमा प्रतिवादी अनु भन्ने अमर कार्की र करनबहादुर क्षेत्रीउपरको चोरीतर्फको दाबी नपुग्ने र दुवैजना प्रतिवादीहरूलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १ नं. को कसुरमा सोही महलको १३ (३) नं. बमोजिम जन्म कैदको सजाय हुने ठहर्‍याई सुरु कञ्चनपुर जिल्ला अदालतबाट मिति २०६८।२।१२ भएको फैसला केही उल्टी भई प्रतिवादी अनु भन्ने अमर कार्की र करनबहादुर क्षेत्रीले अभियोग माग दाबीबाट सफाइ पाउने ठहरी पुनरावेदन अदालत, महेन्द्रनगरबाट मिति २०७०।५।१७ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: सुरथप्रसाद तिमल्सेना
इति संवत् २०७४ साल आश्विन ४ गते रोज ४ शुभम् ।

८

मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी., ०७२-CR-०५९५, लागु औषध

(अफिम), रतनबहादुर शाही वि. नेपाल सरकार

९

प्रतिवादीले प्रहरीमा बयान गर्दा भारतका कालु खान नाम गरेको व्यक्तिले आफूलाई उक्त लागु औषध (अफिम) आफ्नो घरसम्म लैजानको लागि रु.२०,०००/- दिन सहमत भएकोमा रु.२,०००/- तत्काल प्राप्त गराएको भन्ने बेहोराबाट प्रस्ट रूपमा निज प्रतिवादीले आर्थिक लाभका लागि लागु औषध (अफिम) ओसारेकोमा कुनै शंका रहेन । जो कोही अपरिचित व्यक्तिले ठूलो परिमाणको १ किलो ३०० ग्राम लागु औषध (अफिम) प्लाष्टिकको बन्दी झोलामा राखी आफ्नो घरसम्म पुऱ्याई दिनु भनी दिँदा चिन्दै नचिनेको मान्छेले के कुन सामान लैजानको लागि भनेको हो भनी यकिन नै नगरी सहज रूपमा स्वीकार गर्न सक्दैन । निजकै भनाइलाई मान्ने हो भने पनि त्यस्तो लापरवाहीको कारण भएको गल्तीबाट थाहा भएन भनी उन्मुक्ति पाउन सक्ने किनभने कानूनको अज्ञानता क्षम्य हुँदैन । अझ प्रतिवादीले लागु औषध (अफिम) ओसारेको बापत रु.२०,०००/- प्राप्त गर्ने भनी पहिले नै राजी भएकोमा रु.२,०००/- प्राप्त गरिसकेको अवस्थामा आरोपित कसुर उपर अदालतमा इन्कारी रहेकै भरमा कोही पनि बेकसुर साबित नहुने ।

तसर्थ, पुनरावेदन अदालत, नेपालगञ्जबाट मिति २०७२।२।२४ मा बर्दिया जिल्ला अदालतबाट मिति २०७१।८।२५ मा पुनरावेदक प्रतिवादी रतनबहादुर शाहीलाई लागु औषध नियन्त्रण ऐन, २०३३ को दफा ४ को खण्ड (घ) (ङ) र (च) को कसुरमा सोही ऐनको दफा १४(१) को खण्ड (छ) को देहाय (२) बमोजिम वर्ष १५।- (पन्ध्र वर्ष) कैद र रु.५,०००००।- पाँच लाख जरिवाना हुने ठहऱ्याई भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: हिरा डंगोल

कम्प्युटर: मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७४ साल कात्तिक २० गते रोज २ शुभम् ।

मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी., ०७२-CR-०३८७, मानव अपहरण तथा शरीर बन्धक, नेपाल सरकार वि. नवराज पराजुलीसमेत

जाहेरवालालाई अपहरण गरिएको भनिएको उक्त घटना वारदातमा जाहेरवालाको भाइका साला नाता पर्ने व्यक्ति प्रतिवादीमध्येका नवराज पराजुलीको मोटरसाइकलमा सँगै बसी निज जाहेरवाला बनेपातर्फ आउँदै गरेको भन्ने तथ्य स्थापित भएको देखिएको छ । उक्त घटना वारदातमा प्रतिवादीहरूले निज जाहेरवालालाई हातहतियार देखाई ज्यान मार्नेसम्मको वा कुनै गम्भीर हानि नोक्सानी पुऱ्याउने, धम्की डर, त्रास देखाई जाहेरवालालाई कुनै अज्ञातस्थलमा लगेर गरेको वा जाहेरवाला प्रतिवादीहरूबाट भाग्न उम्कन सक्ने अवस्था नरहेको, प्रहरी कार्यालयअगाडि आइपुग्दासम्म पनि जाहेरवाला आफैँ प्रहरीको संरक्षणमा आएको र संरक्षण मागेको, स्वेच्छाले आफ्नो भाइको साला प्रतिवादी नवराज पराजुलीको मोटरसाइकलमा बसी धुसेनीदेखि बनेपासम्मको लामो बाटोमा जान तयार नभएको जस्ता अपहरण भएको हो भन्ने पुष्टि हुने तत्त्वहरू प्रस्तुत मुद्दाको मिसिलबाट पुष्टि हुन सकेको नदेखिने ।

उल्लिखित तथ्य र प्रमाणको विवेचनाबाट प्रतिवादीहरूले जाहेरवालालाई अपहरण र शरीर बन्धक बनाई कसुर गरेका रहेछन् भनी मान्न सकिने अवस्था विद्यमान रहेको नदेखिएबाट वादी पक्षले आफ्नो अभियोजनलाई तथ्यपरक र वस्तुनिष्ठ प्रमाणसमेतका आधारमा पुष्टि प्रमाणित गराउनु पर्ने दायित्व प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ ले वादी पक्षको रहेकोमा सो गर्न नसकेको अवस्थामा प्रतिवादीहरूलाई अभियोग दाबीबमोजिम सजाय गर्नु कानून तथा न्यायसङ्गत नहुने हुँदा दाबीबमोजिम

सजाय गरेको सुरु काभ्रेपलाञ्चोक जिल्ला अदालतको मिति २०७०।२।३० को फैसलालाई उल्टी गरी प्रस्तुत मुद्दाको प्रकृतिसमेतबाट बुझिएसम्मका मिसिल संलग्न प्रमाणका आधारमा प्रतिवादीहरूलाई अभियोग दाबीबाट सफाइ प्रदान गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत, पाटनबाट मिति २०७१।३।१० मा भएको फैसला मिलेकै देखिन आउने।

तसर्थ, विवेचित आधार प्रमाणसमेतबाट सुरु काभ्रेपलाञ्चोक जिल्ला अदालतले मिति २०७०।२।३० मा प्रतिवादीहरू अनिल भण्डारी, सन्तोष लामा तामाङ, प्रतिवादी सरोज खड्का, प्रतिवादी दुर्गाबहादुर सुनुवार, प्रतिवादी रोशन तामाङ, प्रतिवादी विजय लामा, प्रतिवादी नवराज पराजुली र प्रतिवादी राजु शिवभक्ति भुजेललाई अभियोग दाबीबमोजिम सजाय हुने गरी गरेको फैसला उल्टी गरी उपर्युक्त प्रतिवादीहरूलाई अभियोग दाबीको कसुरबाट सफाइ हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, पाटनबाट मिति २०७१।३।१० मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: सुरथप्रसाद तिमल्सेना

कम्प्युटर: अभिषेककुमार राय

इति संवत् २०७४ साल भदौ १ गते रोज ५ शुभम्।

१०

मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी., ०७३-CI-०७९७, स्ववासी जग्गा दर्ता, दिनेश नेपाली वि. मालपोत कार्यालय, कलंकीसमेत

पुनरावेदक वादीले साबिकदेखि नै घर बनाई भोगचलन गरी आएको उक्त स्ववासी घरजग्गा दर्ता गरिपाउँ भनी परेको निवेदनमा नापीको क्षेत्रीय दर्ता किताबसमेतबाट पुनरावेदक वादीको घर बसोबास रहेको देखिएको अवस्थामा सोतर्फ कुनै विवेचना नगरी केवल उक्त दाबीको जग्गा “सरकारको नाउँमा दर्ता भएको” भन्ने आधारमा निवेदन मागबमोजिम दर्ता

नामसारी गर्न नसकिने भनी पुनरावेदक वादीको सुरु निवेदनसाथ पेस दाखिला भएका सबुद प्रमाण तथा उक्त निवेदन दाबीका सन्दर्भमा संकलित हुन आएका सबुद प्रमाणहरूको मूल्याङ्कनको आधारमा ठहर निर्णय गरिएको नदेखिएकोले यस अदालतबाट प्रकाशित बुलेटिन वर्ष ११, अङ्क ६, पृष्ठ १० नन्दिकेश्वर गौतम विरुद्ध नेपाल सरकार मन्त्रिपरिषद्समेत भएको २०५५ सालको रिट नं.३५६४ मिति २०५७।३।१९ मा यस अदालतबाट भएको फैसलाको विपरीत रहेको देखिन आएको हुँदा सुरु मालपोत कार्यालयको उक्त त्रुटिपूर्ण निर्णयलाई सदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत, पाटनबाट मिति २०६८।०६।०२ मा भएको फैसला मिलेको देखिन नआउने।

तसर्थ, उक्त दाबीको जग्गा सरकारको नाममा दर्ता भइसकेको देखिएको हुँदा निवेदन मागबमोजिम दर्ता नामसारी गर्न नसकिने भनी सुरु मालपोत कार्यालय, कलंकीबाट भएको मिति २०६६।१२।१८ को निर्णय तथा सो निर्णयलाई सदर गरेको पुनरावेदन अदालत, पाटनबाट मिति २०६८।६।२ मा भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा बदर गरिदिएको छ। दाबीको जग्गाको जो जे सबुद प्रमाण बुझ्नु पर्ने हो बुझी वादीको नाममा दाबीको जग्गा दर्ता हुने नहुने सम्बन्धमा सबुद प्रमाणको मूल्याङ्कन गरी ठहर निर्णय गर्नु भनी मुद्दाको पक्षलाई सुरु मालपोत कार्यालय, कलंकीमा हाजिर हुन जानु भनी तारिख तोकी सुरु मिसिलसमेत मालपोत कार्यालय, कलंकीमा पठाई दिने।

इजलास अधिकृत: सुरथप्रसाद तिमल्सेना

इति संवत् २०७४ साल कात्तिक २६ गते रोज १ शुभम्।

इजलास नं. ८

१

मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे र मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत, ०७१-CR-१५३१, कर्तव्य

ज्यान, कुलवीर भन्ने कुलबहादुर राना मगर वि. नेपाल सरकार

मार्नुपर्ने पूर्वरिसड्वी केही नभएको स्थितिमा मानिस मर्ने अवस्थाको विद्यमानताको अभावमा भएको कार्यबाट मानिस मर्न गएमा त्यस्तो घटना भवितव्यको वारदात कायम हुने देखिन्छ । अर्थात् भवितव्यको वारदात कायम हुनलाई घटना हुनुपूर्व वा तत्काल मार्ने मनसाय नरहेको र आफूले गरेको कार्यबाट मानिस मर्ने सम्भावना नरहेको अवस्थामा भएको घटनाबाट मानिस मर्न गएको हुनुपर्ने ।

वारदातमा मृतक र पुनरावेदक प्रतिवादीका बीच भैलो खेल्ने क्रममा कविन राना मगरको घरमा नै आपसी झगडा भएको देखिन्छ । सोपश्चात् प्रतिवादीकै घरमा पुनः झगडा कुटपिट भएको र सो झगडा कुटपिटपश्चात् मृतक, मानबहादुर थापासँगै प्रतिवादीको घरबाट गएकोमा पुनः तेस्रो पटक प्रतिवादीकै घरमा प्रतिवादीबाट भएको कुटपिटका कारण मृतकको मृत्यु भएको अवस्था प्रतिवादीकै बयानबाट देखिइरहेको छ । मृतकलाई यी प्रतिवादीले पटकपटक डाडुलगायत घुँडाले प्रहार गरेको तथ्य लास प्रकृति मुचुल्काबाट मृतकको शरीरमा परेको घाउचोटको अवस्थाबाट देखिएको छ । आफ्नो कुटपिटका कारणले मृतक मरिसकेपछि खोल्सामा लगी फालेको भन्ने अवस्था देखिँदा प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादीले पुनरावेदनमा जिकिर लिएको जस्तो ज्यानसम्बन्धीको ६ नं. आकर्षित हुने भवितव्यको वारदात देखिन आउँदैन । तसर्थ प्रतिवादी पुनरावेदक कुलबहादुर राना मगरले ज्यानसम्बन्धीको ६ नं. बमोजिमको कसुर कायम हुनुपर्ने भनी लिएको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

अतः पुनरावेदक प्रतिवादीको पटकपटकको कुटपिट झगडाका कारण मृतकको मृत्यु भएको भन्ने माथि विवेचित आधार, कारण र प्रमाणहरू समेतबाट पुष्टि भएकोले अभियोग दाबीबमोजिम मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको १ र १३(३) नं. बमोजिमको वारदात

कायम गरी पुनरावेदक प्रतिवादीलाई सर्वस्वसहित जन्मकैद हुने ठहर्‍याई दैलेख जिल्ला अदालतबाट मिति २०७०।१।१२२ मा भएको फैसला सदर हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, सुर्खेतबाट मिति २०७१।१।१८ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

अ.बं.१८८ नं. अन्तर्गत सजाय कम गर्ने अवस्था वारदातको प्रकृति, वारदातमा प्रयोग भएको हातहतियार, मृतक र प्रतिवादीका बीचको वारदातका अवस्थामा र सोपूर्व भएको क्रियाकलाप एवम् सम्बन्ध, प्रतिवादीको पारिवारिक स्थितिसमेतलाई विचार गर्नुपर्ने हुन्छ । प्रस्तुत वारदातको सन्दर्भमा माथि उल्लेख भएको वारदातको परिस्थिति एवम् मृतक र प्रतिवादीका बीचको आपसी सम्बन्धसमेतलाई विचार गर्दा सुरु जिल्ला अदालतले प्रतिवादीलाई कैद वर्ष १० (दश) हुन व्यक्त गरेको राय सदर गरेको तत्कालीन पुनरावेदन अदालत, सुर्खेतको राय मनासिब देखिएकोले सो राय सदर भई पुनरावेदक प्रतिवादी कुलबहादुर राना मगरलाई कैद वर्ष १० (दश) मात्र सजाय हुने ।

इजलास अधिकृत: लोकबहादुर हमाल
इति संवत् २०७४ साल जेठ ७ गते रोज १ शुभम् ।

२

मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे र मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत, ०७१-CR-१०४३, कर्तव्य ज्यान, कालेनी भन्ने शर्मिला पुनमगर वि. नेपाल सरकार

प्रतिवादी कालेनी भन्ने शर्मिला पुनमगरले अबोध नाबालिका ज्योतीमाया पुनमगरलाई भात पकाउने फलामको पन्चुले २/३ पटक टाउकोमा र शरीरको ढाडमा १ पटक प्रहार गरी घाइते बनाई सोही चोटको कारण निज ज्योतीमायाको मृत्यु भएको हो भनी अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष रसुरू अदालतमा आरोपित कसुरमा साबित भई बयान गरेको पाइन्छ । मौकामा बुझिएका लालमाया पुनमगरसमेतका मानिसहरूले नाबालिका मृतक ज्योतीमाया पुनमगरलाई प्रतिवादी

कालेनी भन्ने शर्मिला पुनमगरले टाउको तथा ढाडमा फलामको पन्थुले पटकपटक प्रहार गरी मृत्यु भएको हो भनी घटना विवरण कागज गरी सो कागजलाई समर्थन गरी सुरु अदालतमा बकपत्र गरिदिएको देखिन्छ । तसर्थ, किटानी जाहेरी दरखास्त, घटनास्थल प्रकृति मुचुल्का, लासजाँच प्रकृति मुचुल्का, मृतकको शव परीक्षण प्रतिवेदन, मौकामा बुझिएका मानिसहरूको कथन तथा प्रतिवादी शर्मिला पुनमगरले अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष तथा सुरु अदालतमा गरेको साबिती बयानसमेतबाट यी प्रतिवादी कालेनी भन्ने शर्मिला पुनमगरले मृतक नाबालिका ज्योतीमाया पुन मगरलाई कर्तव्य गरी मारेको पुष्टि हुन आएकोले मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १ नं. विपरीत सोही महलको १३(३) नं. बमोजिम आरोपित कसुर अपराध गरेको देखिन आउने ।

अतः पुनरावेदक / प्रतिवादी कालेनी भन्ने शर्मिला पुनमगरलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १ नं. विपरीत सोही महलको १३(३) नं. बमोजिम आरोपित कसुरमा सोही महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद हुने ठहर्‍याई सुरु रोल्पा जिल्ला अदालतबाट मिति २०७१।३।१८ मा भएको फैसला सदर हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, तुलसीपुर, दाङबाट मिति २०७१।७।१४ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

प्रतिवादीको उमेर ३० वर्षको देखिन्छ । मृतक ५ वर्षको नाबालिका देखिन्छ । निज बालिकालाई यी प्रतिवादीको मारुनु पर्नेसम्मको पूर्वरिसइवी केही देखिँदैन । मृतक बालिका र प्रतिवादीका छोराछोरी आपसमा झगडा गरेको अवस्थामा मृतकले प्रतिवादीलाई अपशब्द व्यक्त गरेको र आफ्ना छोराछोरीप्रतिको र्स्नेह भावले तत्काल आवेशमा आई सोही ठाउँमा (चुल्हो) रहेको पन्थुले मृतकलाई कुटपिट गरेको देखिएको छ । प्रतिवादीले आफूले गरेको कसुर स्वीकार गरी अनुसन्धानका क्रममा र अदालतमा

समेत बयान गरी न्याय सम्पादनमा सहयोग पुऱ्याएको अवस्था छ । निज प्रतिवादीका आश्रित छोराछोरीसमेत रहेको र लामो समयसम्म प्रतिवादी कैदमा रहनु पर्दा आश्रित छोराछोरीहरूको लालन पालन शिक्षा दिक्षा एवं मनोविज्ञानमा असर पर्न सक्ने देखिएकोले निज प्रतिवादीलाई कैद वर्ष १० (दश) मात्र गरे पनि ऐनको मकसद (उद्देश्य) पूरा हुने हुँदा यी पुनरावेदक / प्रतिवादी कालेनी भन्ने शर्मिला पुनमगरलाई मुलुकी ऐन, अ.बं. १८८ नं. बमोजिम कैद वर्ष १०(दश) मात्र हुने ।

इजलास अधिकृत: लोकबहादुर हमाल

कम्प्युटर: सिजन रेग्मी

इति संवत् २०७४ साल जेठ ७ गते रोज १ शुभम् ।

इजलास नं. ९

१

मा.न्या.श्री सारदाप्रसाद घिमिरे र मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा, ०६८-CR-०३८१, कर्तव्य ज्यान, डम्बरबहादुर खड्का वि. नेपाल सरकार

देख्ने भनिएका व्यक्तिमध्ये मृतकको आफ्नी भान्जी नाता पर्ने पार्वती खत्रीसमेतले ज्यानजस्तो गम्भीर घटनाका बारेमा जाहेरवालालाई जाहेरी दरखास्त दर्ता गराउँदासम्म कुनै कुराको जानकारी गराएको देखिँदैन । पछि आएर मात्र (After thought) केही व्यक्तिले आफूलाई प्रत्यक्षदर्शीको रूपमा प्रस्तुत गर्न खोजेको देखिन्छ । घटना वारदातका प्रत्यक्षदर्शी साक्षी कोही पनि रहेको देखिँदैन । मौकामा कागज गर्ने व्यक्तिहरू मृतकका बुबा डिलबहादुर विष्ट देख्ने भनिएका प्रितमबहादुर खत्री, पार्वती खत्री सुन्ने भनिएका प्रेमबहादुर खड्का, पुष्पा खड्कासमेतका मानिसहरूले यी प्रतिवादीहरूले नै कर्तव्य गरी मारेको हुन भनी खुलाउन नसकी मृत्यु हुनुभन्दा अगाडिका मृतकका घरायसी झगडाका कुराहरूका आधारमा कर्तव्य गरी मारेको भनी अनुमान, शंका र विश्वाससम्म

व्यक्त गरेको देखिन्छ। शंका र विश्वासलाई प्रमाण मान्न नमिल्ने।

भौतिक र वैज्ञानिक प्रमाणले झुण्डिएको तथ्य स्थापित भएको अवस्थामा सो प्रमाणविपरीत आत्मगत ढंगले गरिएको केही मानिसको आशंकालाई निर्णयाधार बनाउन मनासिब हुँदैन। यस अदालतबाट पदमबहादुर गजुराती विरुद्ध नेपाल सरकार (ने.का.प. २०६८, अङ्क २, नि.नं. ८५६८) अनुमान, आशंका र सम्भावना अनिश्चित तत्त्व भएकाले ज्यान मारेको पुष्टि गर्ने प्रमाणको स्थान ग्रहण गर्न नसक्ने भनी प्रतिपादन गरिएको सिद्धान्त सान्दर्भिक देखिने।

प्रतिवादीहरूले अनुसन्धान अधिकारी र अदालतसमक्ष कसुर गरेकोमा पूर्ण इन्कार रही बयान गरेको देखिन्छ। प्रतिवादीहरूका साक्षीहरूले मृतक सीता खड्का आफैँ झुण्डिई मरेकी हुन्, प्रतिवादीहरूको कर्तव्यबाट मरेकी होइनन् भनी लेखाई दिएको अवस्था छ। प्रतिवादी डम्बर खड्काले आफ्नी श्रीमतीलाई मार्नुपर्नेसम्मको कारण देखिँदैन। अन्य प्रतिवादीहरूले मृतकलाई मार्नमा संलग्न हुनुपर्ने कारण खुल्न आएको पाइएन। केही मानिसहरूको शंका र विश्वासमा आधारित बनाइबाहेक अरू कुनै तथ्ययुक्त प्रमाण देखिँदैन। बुझिएका मानिसको भनाई र पोष्टमार्टम रिपोर्टबीचको तादम्यता नदेखिने।

वादी पक्षका कुनै पनि साक्षीहरूले कसुरमा प्रतिवादी डम्बरबहादुर खड्काको संलग्नता रहे भएको भनी तथ्ययुक्त रूपमा खुलाउन सकेको अवस्था छैन। प्रतिवादी डम्बर खड्काउपर शंका र अनुमानकै भरमा जाहेरी दिएको देखिन्छ। लास प्रकृति मुचुल्का, Autopsy Report, प्रतिवादीहरूको प्रहरीसमक्ष भएको बयानलगायत घटनाक्रम परिस्थितिबाट सीता खड्काको मृत्यु झुण्डिएर आत्महत्या गरेको कारणबाट भएको तथ्य समर्थित भएको देखिन्छ। प्रतिवादीहरूको आपराधिक कार्यको परिणामस्वरूप सीता खड्काको मृत्यु भएको भनी मान्न सकिने कुनै

पनि भरपर्दो र विश्वसनीय प्रमाण प्रस्तुत हुन आएको देखिँदैन। यस अवस्थामा मृतक सीता खड्का र प्रतिवादी डम्बरबहादुर खड्काबीच केही असमझदारी र मनोमालिन्य रहेकोसम्मकै आधारमा शंकाको भरमा दोषी ठहर गर्नु फौजदारी न्यायको सिद्धान्त प्रतिकूल हुन जाने।

मिसिल कागजातबाट पतिपत्नीबीचको सम्बन्धमा केही समस्या देखा परेको, घर सल्लाह केही कुरामा नमिलेको र घरेलु हिंसापूर्ण व्यवहारबाट प्रताडित भएको परिणामस्वरूप सीता खड्काले आत्महत्या गरेको देखिएको छ। यसलाई नै ज्यानसम्बन्धी महलको १३ नं. बमोजिमको कसुर ठहर हुने आधारको रूपमा ग्रहण गर्न मिल्ने नदेखिने।

अतः सीता खड्काको मृत्यु प्रतिवादी डम्बरबहादुर खड्कासमेतको कर्तव्यबाट भएको भन्ने देखिने भरपर्दो तथा वस्तुनिष्ठ आधार प्रमाणको अभाव रहेको, निज सीता खड्काको मृत्यु झुण्डिएर आत्महत्या प्रकृतिको देखिएको हुँदा केवल शंका, अनुमान वा केही मानिसको विश्वासको आधारमा मृतक सीता खड्काको मृत्यु कर्तव्यबाट भएको भनी ठहर गर्न मिल्ने। तसर्थ प्रतिवादी डम्बरबहादुर खड्कालाई कसुरदार ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत, सुर्खेतको मिति २०६८।१।२९ को फैसला मिलेको नदेखिँदा उल्टी भई निजले आरोपित कसुरको अभियोग दाबीबाट सफाई पाउने।

सीता खड्काको मृत्यु कर्तव्यबाट भएको नभई आत्महत्या प्रकृतिको देखिएको कारणबाट प्रतिवादी डम्बरबहादुर खड्काले सफाई पाउने ठहर भएको परिणामस्वरूप वारदात नै स्थापित नभएको हुँदा प्रतिवादीहरू विष्णु खड्का र रामबहादुर गोदारसमेतलाई ज्यानसम्बन्धीको १७ नं. बमोजिम कसुरदार ठहर गरेको फैसलासमेत अ.बं.२०५ नं. मा व्यवस्थित प्रावधानका आधारमा उल्टी गर्नुपर्ने देखियो। तसर्थ निजहरू विष्णु खड्का र रामबहादुर

गोदारलाई ज्यानसम्बन्धीको १७(३) नं. बमोजिम सजाय हुने ठहर गरेको फैसलासमेत उल्टी भई निजहरूले अभियोग दाबीबाट सफाई पाउने।

इजलास अधिकृत: डिल्लीराम प्रसाई

कम्प्युटर: संजय जैसवाल

इति संवत् २०७४ साल माघ ८ गते रोज २ शुभम्।

२

मा.न्या.श्री सारदाप्रसाद घिमिरे र मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा, ०७१-सी-०६०२, ०७१-सी-०६०३ र ०७१-सी-०६०४, अंश दर्ता, मिनादेवी कुर्मीसमेत वि. संगीता कुमारी, जंगी राउत कुर्मी वि. संगीता कुमारी र संजय राउत कुर्मी वि. संगीता कुर्मी

वादीले आफू अविवाहित रहेको कुरा उल्लेख गरी अंश माग गरी फिराद दायर गरेको देखिन्छ। वादीको विवाह भइसकेको छ भन्नेतर्फ प्रतिवादीहरूबाट कुनै विश्वसनीय प्रमाण पेस हुन सकेको छैन। सर्जमिन मुचुल्काका व्यक्तिहरूले समेत विवाह भइसकेको कुरा एकमतले व्यक्त गरेको देखिँदैन। सर्जमिनको विवादास्पद बनाइलाई प्रमाणमा लिई विवाह भएको हो भनी मान्न मिल्ने अवस्था देखिँदैन। प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २८ अनुसार वादी संगीता कुमारीको विवाह भइसकेको तथ्य प्रतिवादी पक्षबाट प्रमाणित हुन आएको पाइएन। वादी संगीता कुमारीको विवाह भइसकेको भन्ने प्रतिवादीको जिकिर सो कुराको वास्तविकता सम्बन्धमा अदालतलाई विश्वास दिलाउन चाहने व्यक्ति प्रतिवादी जंगी राउतसमेतमा रहने देखिन्छ। प्रतिवादीले सो अनुसार प्रमाणको भार पूरा गरेको नदेखिएको अवस्थामा आफू अविवाहित छु भनी वादीले गरेको दाबीअनुसार कानूनी परिणाम निर्धारण गर्नु स्वाभाविक देखिने।

वादी प्रतिवादीहरू जंगी राउत कुर्मीको दुईजना श्रीमतीमा जेठी रेखादेवीबाट एक छोरा संजय राउत कुर्मी र एक छोरी वादी संगीता कुमारी र कान्छी

श्रीमती मीनादेवीतर्फबाट एक छोरा धनन्जय पटेलसमेत कूल ६ जना अंशियार रहेको देखिएको छ। वादी संगीता कुमारीकी आमा रेखादेवीले २०५१।१२।२९ को पुनरावेदन अदालत, हेटौँडाको फैसलाअनुसार अंशबन्डा गरी लिन पाउने ठहर भएको देखिए तापनि सोबमोजिम बन्डा छुट्याउने कार्य भएको पाइएन। यस अवस्थामा सबै ६ जना व्यक्तिहरू अंशियार कायम हुने भई फिरादपत्र परेको अधिल्लो दिनलाई मानो छुट्टिएको मिति कायम गरी भाग शान्तिले अंशबन्डा लगाउनु पर्ने देखिन आउने।

प्रतिवादी जंगी राउत कुर्मीले पेस गरेको तायदाती फाँटवारीमा देखाएको ऋणको हकमा पछि साहुको नालेस परेका बखत ठहरेबमोजिम हुने नै हुँदा सोबारेमा अहिले केही बोलिरहन परेन। निजले नै पेस गरेको तायदाती फाँटवारीबमोजिम प्रतिवादी जंगी राउत कुर्मीका दाजु अम्बिका राउतका नाममा ऐलानी रहेको भनिएको पर्सा जिल्ला हरिहरपुर गा.वि.स. वडा नं. ४ कि.नं. २७१ र २७४ को जग्गा प्रतिवादी जंगी राउतको नाउँमा दर्ता भई स्वेस्ता पुर्जा तयार भएमा सोही अवस्थामा उल्लिखित जग्गाहरूबाट वादीले ६ भागको १ भाग अंश पाउने नै हुँदा हाल दर्ता नै नभएको सो जग्गा अहिले नै बन्डा लगाउन मिलेन। सोबाहेक तायदाती फाँटवारीमा उल्लेख भएका अन्य सम्पत्ति अंश भाग बन्डा लाग्ने प्रकृतिको देखिन आउने।

तसर्थ उल्लिखित आधार प्रमाणहरूबाट पुनरावेदक प्रतिवादी जंगी राउतको वादी संगीता कुमारी छोरी हुन् भन्ने कुरामा विवाद नभएको, वादी संगीताकुमारीको विवाह भएको तथ्य प्रमाणित हुन नआएको र अंशबन्डा गर्न बाँकी रहेको अवस्था देखिँदा पुनरावेदन अदालत, हेटौँडाबाट मिति २०७१।३।२३ मा वादीलाई अंशियार कायम गरी वादी प्रतिवादीहरूबाट पेस भएको तायदाती फाँटवारीबमोजिम ६ भागको १ भाग अंश वादीले पाउने ठहर गरी भएको फैसला

मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: डिल्लीराम प्रसाईं

कम्प्युटर: संजय जैसवाल

इति संवत् २०७४ साल भाद्र ७ गते रोज ४ शुभम् ।

३

मा.न्या.श्री सारदाप्रसाद घिमिरे र मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत, ०७२-CR-१८१७ ०७२-CR-१९०३, कर्तव्य ज्यान, यादव चन्द्र राई वि. नेपाल सरकार र नेपाल सरका वि. यादव चन्द्र राई

मृतकले जन्डिसको औषधी खान छोडी रक्सी खान थालेकोले प्रतिवादीले मृतकलाई बाँसको भाटाले कुटपिट गरेको कुरामा प्रतिवादी साबित रहेबाट मृतकलाई प्रतिवादीले कुटपिट गरेको कुरामा विवाद देखिँदैन । तर मृतक र प्रतिवादी श्रीमान् श्रीमती भएको र निजहरू बीच मारुपनेसम्मको कुनै विवाद वा कारणसमेत भएको मिसिल संलग्न प्रमाणबाट देखिँदैन । साथै जाहेरवालाले पनि प्रतिवादीले मृतकलाई मारुपनेसम्मको युक्तियुक्त कारणसमेत उल्लेख गर्न सकेको देखिँदैन । प्रतिवादी दिनभरी काम गरेर थाकेर आएको अवस्थामा बिरामी भई औषधी खानुपने श्रीमती जाँड खाएर बसेको देख्दा तत्काल रिस उठी बाँसको भाटाले प्रतिवादीले मृतकलाई कुटपिट गरेको र सोही कुटपिटको चोटपीरले मृतकको मृत्यु भएको देखिन्छ । यसरी प्रतिवादीले आफ्नी श्रीमतीलाई मारुपनेसम्मको कुनै कारण नहुनुका साथै कुनै योजना बनाई मार्ने मनसाय राखी कुटपिट गरेकोसमेत नदेखिँदा तत्काल उठेको रिस थाम्न नसकी बाँसको भाटाले हानेको तथा कुटपिट गरी सोही चोटको कारणले ज्यान मरेको अवस्थामा सुरु भोजपुर जिल्ला अदालतले प्रतिवादी यादव चन्द्र राईलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १४ नं. बमोजिम दश वर्ष कैद सजाय गर्ने गरी भएको फैसलालाई सदर गरेको पुनरावेदन अदालत, धनकुटाको फैसलालाई अन्यथा भन्न नमिल्ने ।

श्रीमतीलाई मार्ने भन्ने कल्पनासमेत नभएको, ज्यान लिने इविलाग वा मनसाय पनि नभएको अवस्थामा मृतकको भवितव्य भई मरेको अवस्थामा ज्यानसम्बन्धी महलको ६(४)नं. अनुसार मात्र सजाय हुनुपर्ने भनी प्रतिवादीले लिएको पुनरावेदन जिकिर तथा प्रतिवादीले मौकामा तथा अदालतमा बयान गर्दा आफूले मृतकलाई हिकारिएको भनी स्वीकार गरेको, लास प्रकृति मुचुल्कामा मृतकको शरीरमा घाउचोट देखिएका, प्रतिवादी विरुद्ध किटानी जाहेरी परी बकपत्रबाट समेत समर्थित भएको तथा शव परीक्षण प्रतिवेदनमा मृत्युको कारण Head injury भनी उल्लेख भएको अवस्थामा ज्यानसम्बन्धी महलको १४ नं. को कसुर ठहर गरेको फैसला त्रुटिपूर्ण हुँदा अभियोग माग दाबीबमोजिम सजाय गरिपाउँ भनी वादी नेपाल सरकारले लिएको पुनरावेदन जिकिरसमेत मिसिल संलग्न वारदातको अवस्था, प्रतिवादीको बयान तथा शव परीक्षण प्रतिवेदनसमेतका आधार कारणबाट पुग्न सक्ने नदेखिने ।

तसर्थ, विवेचना गरिएका तथ्य, आधार र कारणहरू समेतबाट सुरु भोजपुर जिल्ला अदालतबाट उसै मौकामा उठेको रिस थाम्न नसकी बाँसको भाटा आदिले मृतकलाई प्रहार गरी घाइते बनाई सोही चोटको पिरले मृतकको मृत्यु भएको पुष्टि भएकाले प्रतिवादी यादव चन्द्र राईलाई ज्यानसम्बन्धी महलको १४ नं. बमोजिम दश वर्ष कैद सजाय हुने ठहर्‍याई मिति २०७२।२।७ मा भएको फैसलालाई सदर गरेको पुनरावेदन अदालत, धनकुटाको मिति २०७२।९।२६ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: तारादेवी महर्जन

कम्प्युटर: संजय जैसवाल

इति संवत् २०७४ साल माघ २८ गते रोज १ शुभम् ।

इजलास नं. १०

१

मा.न्या.श्री मीरा खड्का र मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की, ०७२-CI-०४५४, उत्प्रेषण, *गगनदेव राय यादव वि. रामऔतार महारा चमारसमेत*

मोही र जग्गाधनीलाई पक्ष विपक्ष कायम गरी सुनुवाइको मौका दिई दोहोरो सुनुवाइ गर्दै मुद्दाको किनारा गरेको अवस्था भएको भए मात्र प्रस्तुत रिट निवेदकले भूमिसुधार कार्यालय, बाराको निर्णयलाई पुनरावेदनको माध्यमबाट चुनौती दिनुपर्ने अवस्था रहने हुन्छ। तर आफू पक्ष विपक्षमा नरहेको रिट निवेदकले पुनरावेदनको माध्यमबाट भूमिसुधार कार्यालयको निर्णयउपर चुनौती दिन सक्ने अवस्था नरहेबाट रिट क्षेत्रमा प्रवेश गरेको देखिँदा वैकल्पिक उपचारको बाटो हुँदाहुँदै रिट क्षेत्रमा प्रवेश गरेकोले रिट निवेदन खारेज हुनुपर्दछ भन्ने पुनरावेदन जिकिर मनासिब नदेखिने।

निवेदकको पिताको नाम मोही लगतमा कायम रहेको अवस्थामा मोहीको लगत कट्टा गर्ने निर्णय गर्दा प्राकृतिक न्यायको सिद्धान्तअनुसार मोही तथा मोहीको हकवालालाई प्रतिवादको मौका दिनुपर्नेमा सो मौका भूमिसुधार कार्यालय, बाराले दिएको देखिएन। भूमिसुधार कार्यालय, बाराले सुनुवाइको मौका नै नदिई मिति २०६९।१०।२१ मा मोही लगत कट्टा गर्ने गरी भएको निर्णयको जानकारी रिट निवेदकले सो कार्यालयबाट मिति २०७१।२।२३ मा उक्त निर्णयको नक्कल लिएपछि प्राप्त गरेको मिसिलबाट देखिन्छ। यसरी निर्णयको जानकारी पाएपश्चात् समयमै मिति २०७१।३।६ मा रिट निवेदन पर्न आएको देखिँदा विलम्ब गरी रिट निवेदन पर्न आएको भन्ने पुनरावेदकको जिकिरसँग सहमत हुन सकिएन। रिट निवेदकले समयमा नै मोही नामसारी नगराएको भन्ने पुनरावेदन जिकिरको हकमा हेर्दा प्रचलित भूमिसम्बन्धी

कानूनमा मोही नामसारी गर्ने सम्बन्धमा हदम्यादको व्यवस्था भएकोसमेत नदेखिएकोले समयमै मोही नामसारी नगराएको भन्ने उक्त पुनरावेदन जिकिर पनि कानूनसम्मत नदेखिने।

उपर्युक्त विवेचित आधार कारणबाट रिट निवेदकको पिता फौदार महारा चमारको नाममा मोही लगत कायम भइरहेकोमा मोही वा निजको हकवालालाई बुझ्दै नबुझी मोही लगत कट्टा गर्ने गरी भूमिसुधार कार्यालय, बाराबाट भएको मिति २०६९।१०।२१ को निर्णय प्राकृतिक न्यायको सिद्धान्तविपरीत भएको देखिन आयो। तसर्थ मिति २०६९।१०।२१ को भूमिसुधार कार्यालय, बाराको निर्णय कायम राखी राख्न न्यायसङ्गत नदेखिँदा उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, हेटौँडाले मिति २०७०।९।१६ गरेको आदेश मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: शिवप्रसाद पराजुली

कम्प्युटर: उत्तरमान राई

इति संवत् २०७४ साल मङ्सिर ३ गते रोज १ शुभम्।

२

मा.न्या.श्री मीरा खड्का र मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा, ०७३-CR-०१९२, ठगी, *नेपाल सरकार वि. वीरेन्द्रबहादुर थापासमेत*

दुई पक्षबीच आपसी लेनदेनको व्यवहार भएकोमा सर्तबमोजिम रकम चुक्ता नगरेको कुरालाई ठगी भन्न मिल्ने देखिन नआउने।

सरकारी मुद्दासम्बन्धी ऐन, २०४९ अन्तर्गत सरकारवादी भई दर्ता हुन आएको मुद्दामा एउटा ऐनअन्तर्गतको अभियोग दाबी रहेकोमा सो ऐनअन्तर्गतको कसुर नदेखिई दुनियाँवादी भई चलने अर्को ऐन, आकर्षित हुने अवस्थाको कार्य भन्ने देखिएमा अदालतले सरकारी मुद्दासम्बन्धी ऐन, २०४९ को दफा २७ बमोजिमको प्रक्रिया अपनाउनु पर्ने।

सुरु जिल्ला अदालतले यी प्रतिवादीहरूले

मुलुकी ऐन, ठगीको महलको १ र ४ नं. अन्तर्गत ठगीको कसुर गरेको भन्नेतर्फको अभियोग दाबी पुग्न नसक्ने ठहर गरेपछि विनिमेय अधिकारपत्र ऐन, २०३४ आकर्षित हुने भनी ठहर गर्नुपूर्व सरोकारवाला व्यक्तिलाई झिकाई निजले सकार गरेमा वादी पक्ष कायम गरी सोही मुद्दाको मिसिलबाट प्रचलित कानूनबमोजिम कारबाही किनारा गर्नुपर्नेमा सोबमोजिम नगरी सोही मुद्दाबाट ऐन नै परिवर्तन गरी प्रतिवादीमध्येका वीरेन्द्रबहादुर थापालाई विनिमय अधिकारपत्र ऐन, २०३४ अनुसार सजाय गरेको देखिन आयो । यसरी सुरु काठमाडौं जिल्ला अदालतले प्रचलित कानूनले तोकेको उचित प्रक्रिया अवलम्बन नगरी सरकारवादी भई चलेको ठगी मुद्दामा नै विनिमेय अधिकारपत्र ऐन, २०३४ बमोजिमको कसुर ठहर गरी फैसला गरेकोमा सो फैसलालाई नै सदर गरेको पुनरावेदन अदालत, पाटनको मिति २०७०।५।४ को फैसला त्रुटिपूर्ण देखिन आउने ।

अतः विवेचित आधार र कारणबाट काठमाडौं जिल्ला अदालतको फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालत, पाटनको मिति २०७०।५।४ को फैसला ठगीको कसुर कायम नहुने ठहर गरेको हदसम्म मनासिब देखिएको र दुनियाँवादी मुद्दामा परिणत गर्ने प्रक्रिया नअपनाएको हदसम्म त्रुटिपूर्ण हुँदा उल्टी हुने ठहर्छ । अब सरकारी मुद्दासम्बन्धी ऐन, २०४९ को दफा २७ बमोजिमको प्रक्रिया अपनाई सरोकारवालाले सकार गरेमा वादी पक्ष कायम गरी कानूनबमोजिम कारबाही किनारा गरी दिने ठहर्छ । प्रतिवादीहरूलाई अभियोग माग दाबीबमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर पुग्न सक्दैन । सोबमोजिम कारबाही र किनाराको लागि प्रस्तुत मुद्दाको मिसिल सुरु काठमाडौं जिल्ला अदालतमा पठाई दिने ।

इजलास अधिकृत : शिवप्रसाद पराजुली
इति संवत् २०७४ साल मङ्सिर ६ गते रोज ४ शुभम् ।

३

मा.न्या.श्री मीरा खड्का र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०७२-CI-१८७७, हक कायम रैकर परिणत दर्तासमेत, *सानुभाई महर्जन वि. रामलाल महर्जन*

सुरु जिल्ला अदालतले फैसला गर्दा विवादको जग्गा रैकर वा बिर्ता के हो, वास्तविक मोही को हो, कसको हक कायम हुने हो भन्ने सम्बन्धमा प्रमाण बुझी त्यसको मूल्याङ्कन गरी निर्णय गरेको देखिएन । न्याय प्रशासन ऐन, २०४८ को दफा १४(ग) ले “मुद्दामा इन्साफ गर्नुपर्ने प्रश्नहरूसँग सम्बद्ध प्रमाणहरू तल्लो अदालत, निकाय वा अधिकारीले बुझ्न छुटाएको रहेछ भने आफैँले बुझ्ने वा मुद्दाको लगत कायमै राखी ती प्रमाणहरू बुझ्नका लागि मिसिल तल्लो अदालत, निकाय वा अधिकारीकहाँ पठाउने” वा दफा १४(घ) ले “तल्लो अदालत, निकाय वा अधिकारीले मुद्दामा निर्णय गर्नुपर्ने प्रश्नहरूमध्ये केहीमा निर्णय गरी वा केहीमा निर्णय नगरी फैसला गरेको रहेछ भने मनासिब माफिकको समय तोकी बाँकी प्रश्नहरूको समेत निर्णय गरी मुद्दा किनारा गर्नु भनी मिसिल तल्लो अदालत, निकाय वा अधिकारीकहाँ पठाउने” भन्ने कानूनी व्यवस्था गरेको छ । सो कानूनी व्यवस्थाको रोहमा प्रस्तुत मुद्दामा पुनरावेदन अदालत, पाटनको फैसलाअनुसार मालपोत कार्यालय, ललितपुरले हक कायममा जानु भनी सुनाएअनुसार दुवै पक्षले ललितपुर जिल्ला अदालतमा हक कायम गरिपाउँ भनी फिराद गर्न गएकोमा दुवै पक्षको दाबी नपुग्ने ठहर्‍याएकोले सुरु फैसला नै बदर गरी पुनरावेदन अदालत, पाटनले प्रमाणको आधारमा विवादित जग्गामा कसको हक पुग्ने हो निर्णय गर्न पक्षहरूलाई सुरु जिल्ला अदालतमा तारेख तोकी पठाएबाट न्याय प्रशासन ऐन, २०४८ को दफा १४(ग) र १४(घ) को अवस्था रहे भएकाले पुनरावेदन अदालत, पाटनले लगत कट्टा गरेको मिलेकै देखिन आउने ।

तल्लो निकायबाट सबुद प्रमाण नै नबुझी

इन्साफ हुन गएमा पुनः निर्णयार्थ जिल्ला अदालत, पठाउँदा अनाहक मुद्दामा ढिलाई भई पक्ष विपक्षलाई अनावश्यक हैरानी नहोस् भन्ने उद्देश्यले पुनरावेदन अदालतबाट सबुद प्रमाण बुझी इन्साफ हुन सक्ने अवस्था पनि आउन सक्छ । तर जिल्ला अदालतबाट दुवै पक्षको सम्बद्ध प्रमाण नै नबुझी दाबी नपुग्ने फैसला भएकोमा पुनरावेदन अदालतबाट प्रमाण बुझी ठहर फैसला हुँदा पक्षहरूको एक तह पुनरावेदन गर्न पाउने हक कुपिठत हुने अवस्था रहन जान्छ । सुरुबाट सम्बद्ध प्रमाण नबुझी दुवै पक्षको दाबी नपुग्ने गरी फैसला भएकोमा सबुद प्रमाण बुझी निर्णयार्थ सुरु तहमा पठाउन कानूनले कुनै बाधा गरेको नदेखिने ।

तसर्थ, सुरु ललितपुर जिल्ला अदालतको मिति २०७०।१०।२२ को फैसला बदर गरी अब जे जो बुझ्नुपर्ने हो बुझी पुनः निर्णय गर्नु भनी मिसिल ललितपुर जिल्ला अदालतमा पठाई दिने ठहर्छ भन्ने पुनरावेदन अदालत, पाटनको मिति २०७२।२।१८ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : सुदिपकुमार भट्टराई

कम्प्युटर: उत्तरमान राई

इति संवत् २०७४ साल चैत १३ गते रोज ३ शुभम् ।

४

मा.न्या.श्री मीरा खड्का र मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत, ०७१-CI-०८१२, करारबमोजिम गरिपाउँ, *विष्णुप्रसाद पौडेल वि. ताराप्रसाद भट्टराई*

संस्थाको हितको लागि भएको करार सम्झौता विपक्षीबाट उल्लङ्घन भएको भनी सोउपर कानूनी उपचारको लागि अदालत, जानका लागि संस्थाकै कोषाध्यक्ष महेश्वर तिमिल्सनालाई अख्तियारनामा दिने निर्णय भएको र सोही निर्णयबमोजिम संस्थाकै लेटरप्याडमा महेश्वर तिमिल्सेनालाई च.नं.०५ मिति २०६४।५।३० को पत्रबाट अख्तियारनामा दिएको मिसिलबाट देखिन आएबाट वादी काबेली बहुउद्देश्यीय सहकारी संस्थाको तर्फबाट महेश्वर तिमिल्सेनालाई

फिराद गर्ने हकद्वैया नै छैन भन्न मिल्ने देखिन नआउने ।

मिति २०६३।३।३२ को सम्झौता कागजबाट नै यी प्रत्यर्थी प्रतिवादीले पुनरावेदक वादीलाई मिति २०६२।२।२७ मा भएको सुरु करार सम्झौताअनुसारको रकम नबुझाएको भन्ने तथ्य प्रस्ट देखिइरहेको अवस्थामा मिति २०६२।२।२७ मा भएको करार सम्झौताअनुसारको भाडा रकम पाउँ भनी मुद्दा गर्नुपर्ने कारण मिति २०६३।३।३२ पछि मात्र सुरु भएको देखिन आयो । यसरी मुद्दा गर्नुपर्ने कारण मिति २०६३।३।३२ पछि सुरु भएकोमा करार ऐनको दफा ८९ बमोजिम दुई वर्षको हदम्यादभित्र मिति २०६४।६।६ मा वादीको फिरादपत्र पर्न आएको देखिँदा उक्त फिरादपत्र हदम्याद नाघी दायर भएको भन्न नमिल्ने ।

मुद्दा गर्नुपर्ने कारण परेको मिति २०६३।३।३२ करार ऐनको दफा ८९ बमोजिम दुई वर्षको हदम्यादभित्र मिति २०६४।०६।०६ मा प्रस्तुत मुद्दामा वादीको फिरादपत्र पर्न आएको अवस्थामा यसतर्फ कुनै विवेचना नै नगरी मिति २०६२।२।२७ मा भएको सम्झौताको मितिबाटै करार ऐनको दफा ८९ बमोजिम दुई वर्षको हदम्यादभित्र फिराद नपरी हदम्याद नाघेको आधारमा मिति २०६४।६।६ मा दायर भएको फिराद खारेज गर्ने गरेको सुरुको फैसला सदर गर्ने पुनरावेदन अदालतको मिति २०६७।०१।१५ को फैसला त्रुटिपूर्ण देखिन आयो । यस्तो स्थितिमा पुनरावेदन अदालत, इलामको मिति २०६७।१।१५ को फैसला बदर गरी हक इन्साफ पाउँ भन्ने पुनरावेदन जिकिरलाई अन्यथा भन्न मिल्ने देखिन नआउने ।

तसर्थ, विवेचना आधार एवम् प्रमाणबाट पुनरावेदक वादी प्रत्यर्थी प्रतिवादीबीच मिति २०६२।२।२७ मा भएको करार सम्झौतामा भएको सर्तअनुसार नै दुवै पक्षको आपसी सहमतिमा मिति २०६३।३।३२ मा पूरक सम्झौता भएको देखिएबाट

मिति २०६२।२।२७ मा मुद्दा गर्नुपर्ने कारण सिर्जना नभई मिति २०६३।३।३२ बाट मुद्दा गर्नुपर्ने कारण सिर्जना भएको देखिएको अवस्थामा करार ऐनको दफा ८९ को २ वर्षको हदम्यादभित्रै फिरादपत्र परेको अवस्थामा सुरु पाँचथर जिल्ला अदालतले बुझ्नुपर्ने प्रमाणहरू बुझी संकलित प्रमाणहरूको उचित मूल्याङ्कन गरी फैसला गर्नुपर्नेमा करार ऐनको दफा ८९ को हदम्यादभित्र फिराद नपरी हदम्याद नाघेको आधारमा फिराद खारेज गर्ने गरेकोमा सो सुरु फैसला सदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत, इलामबाट मिति २०६७।१।१५ मा भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा बदर गरिदिएको छ। पुनरावेदक वादीले सुरु पाँचथर जिल्ला अदालतमा दिएको मिति २०६४।१।२० को फिराद यी पुनरावेदक वादी र प्रत्यर्थी प्रतिवादीबीच मिति २०६३।३।३२ मा भएको पछिल्लो सम्झौताको मितिबाट करार ऐन, २०५६ को दफा ८९ को हदम्यादभित्र परेको देखिँदा अब प्रस्तुत मुद्दामा पुनः जे जो बुझ्नुपर्ने हो बुझी इन्साफ गर्नु भनी उच्च अदालत, इलाममा पठाई दिने।

इजलास अधिभूतः शिवप्रसाद पराजुली

कम्प्युटरः उत्तरमान राई

इति संवत् २०७४ साल मङ्सिर ७ गते रोज ५ शुभम्।

५

मा.न्या.श्री मीरा खड्का र मा.न्या.श्री टंकबहादुर मोक्तान, ०७१-CR-११४०, कर्तव्य ज्यान, हरेन्द्र सहनी वि. नेपाल सरकार

प्रतिवादी हरेन्द्र सहनीलाई अभियोग दाबीबमोजिम सजाय गरेको सुरु पर्सा जिल्ला अदालतको फैसला सदर हुने गरी पुनरावेदन अदालत, हेटौँडाबाट मिति २०७१।८।१६ को फैसला मिलेको छ वा छैन भन्नेतर्फ विचार गर्दा मृतकको टाउको अगाडिदेखि पछाडिसम्म र दायाँ कानदेखि टाउकोको बीचसम्म धारिलो हतियारले काटिएजस्तो घाउचोट

लागि टाँका लगाई सिलाएको देखिएको भन्नेसमेत बेहोराको लासजाँच मुचुल्का रहेको देखिन्छ। शव परीक्षण प्रतिवेदनमा मृतकको मृत्युको कारण “Blunt Force Trauma to the Head” भनी उल्लेख भएको पाइन्छ। उल्लिखित तथ्य जाहेरी दरखास्त, लास जाँच मुचुल्का, शव परीक्षण प्रतिवेदन र जाहेरवालासमेतको बकपत्रबाट मृतक लालमतीदेवीको मृत्यु कर्तव्यबाट भएको तथ्य स्पष्ट रूपमा स्थापित हुन आएको देखिने।

मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. मा “लाठा ढुंगा र साधारण सानातिना हातहतियारले कुटी, हानी, रोपी, घोची वा अरु ज्यान मर्ने गैह कुरा गरी ज्यान मरेमा एकै जनाले मात्र सो काम गरी ज्यान मरेमा सोही एक जना र धेरै जनाको हुल भई मारेमा यसैले मारेको वा यसको चोटले मरेको भन्ने प्रमाणबाट देखिन ठहर्न आएमा सोही मानिस मुख्य ज्यानमारा ठहर्छ। त्यस्तालाई सर्वस्वसहित जन्मकैद गर्नुपर्छ। सोबाहेक अरुलाई र यसैले मारेको वा यसैको चोटले मरेको भन्ने कुरा सो हातहतियार छाड्ने कसैउपर कुनै प्रमाणबाट देखिने ठहर्न नआएमा सबैलाई जन्मकैद गर्नुपर्छ” भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको देखिन्छ। प्रस्तुत मुद्दामा माथि उल्लेख गरिएबमोजिम प्रतिवादीसमेतले लालमती देवीलाई वारदातमा कुटपिट गरेको तथ्य वस्तुस्थिति मुचुल्काका बुझिएका मानिसहरूको बकपत्रसमेतबाट तथ्य स्थापित भएको र सोही कुटपिटको कारणबाट लालमती देवीको मृत्यु भएको शंकाहित तवरबाट पुष्टि भइरहेको हुँदा प्रतिवादी हरेन्द्र सहनीको हकमा मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १३(३) नं. को कानूनी व्यवस्था आकर्षित हुने।

मृतकले मृत्यु हुनुपूर्व मृत्युकालीन घोषणा (Dying Declaration) गरेको अवस्थामा सो मृत्युकालीन घोषणा प्रमाणमा लिने वा नलिने प्रश्न आउने हुन्छ। मृतकले त्यस्तो घोषणा नै नगरेको अवस्थामा सो नगरेकै आधारमा अन्य माथि उल्लिखित प्रत्यक्ष

एवम् परिस्थितिजन्य प्रमाणले प्रतिवादीको कर्तव्यबाट मृत्यु भइरहको पुष्टि एवम् प्रमाणित भइरहेको अवस्थामा पुनरावेदक प्रतिवादीको जिकिरअनुसार मृतकले मृत्युकालीन घोषणा नगरेकै आधारमा प्रतिवादीलाई कसुर अपराधबाट उन्मुक्ति प्रदान गर्न मिल्ने नदेखिने।

अतः विवेचित आधार प्रमाणसमेतबाट सुरु फैसला सदर भई प्रतिवादी हरेन्द्र सहनीलाई ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. अनुसार जन्मकैदको सजाय हुने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत, हेटौँडाको मिति २०७१।८।१६ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: नन्दकिशोर प्रसाद यादव

कम्प्युटर: उत्तरमान राई

इति संवत् २०७४ साल फागुन ९ गते रोज ४ शुभम्।

इजलास नं. ११

१

मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ, ०७०-CI-०६३०, घर भत्काई खिचोला मेटाई चलन, सदाम हुसेन अन्सारी वि. अमरोदिन मियाँसमेत

हक छाडी लिने दिने गरी घरसारमा लिखत भएको भए पनि सो हक छाडी लिएकोलाई कानूनबमोजिम भएको मान्न तथा सोले वैधानिकता पाउन अड्डामा गई रजिस्ट्रेशन गर्नुपर्ने अनिवार्य व्यवस्था रजिस्ट्रेशनको महलले गरेको हुँदा रजिस्ट्रेशन नभएको अवस्थामा घरसारमा भएको लिखतको आधारमा मात्र हक छाडी लिएको भनी मान्यता दिन सकिने देखिन नआउने।

पुनरावेदक / वादीले हालैको बकसपत्रबाट हक छाडी लिएको लिखत भने मालपोत कार्यालय, पर्साबाट २०६५।०९।०८ मा रजिस्ट्रेशन पारित भएको देखिएको छ। सो पारित लिखत कानूनबमोजिम बदर

भएको पनि देखिँदैन। सो लिखतबाट हक छाडिदिएको जग्गामा यी प्रत्यर्थी / प्रतिवादीहरूको कुनै प्रकारले हक रहेको भएमा निजहरूले सो रजिस्ट्रेशन पारित भएको लिखतलाई कानूनबमोजिमको म्यादभित्र निवेदन दिई वा दाबी विरोध गरी बदर गराउन सक्नुपर्नेमा यसरी बदर गराउन सकेकोसमेत पाइएन। यसबाट विवादित जग्गामा प्रत्यर्थी / प्रतिवादीहरूको हक रहेको भन्न नसकिने।

प्रतिवादीहरूले २०४२ सालमा नै आफूहरूले उक्त जग्गा प्राप्त गरी भोगचलन गर्दै आएको भनी जिकिर लिएको देखिए पनि भोग गरेकै आधारमा सम्पत्तिमा व्यक्तिको स्वामित्व कायम हुन सक्दैन। भोग स्वामित्वको प्राथमिक आधार भए पनि भोगको आधारमा मात्र स्वामित्व कायम हुन सक्दैन। स्वामित्व कायम भएको प्रमाणबाट देखिएको अवस्थामा भोगाधिकारले स्वामित्वको आधारको रूपमा काम गर्न सक्दैन। उक्त जग्गामा पुनरावेदक / वादी जरबन अन्सारीले कानूनबमोजिम रजिस्ट्रेशन भएको हालैको बकसपत्रबाट विधिवत् स्वामित्व प्राप्त गरेको देखिएकोले उक्त जग्गामा निजको नै हक स्वामित्व रहे भएको देखिन आउने।

पुनरावेदक / वादीको नाममा कि.नं. १ को जग्गामा एउटा घर रहेको देखिएको हाल सो जग्गामा २ वटा घर रहेको र सो जग्गा र घरहरूमा प्रत्यर्थी प्रतिवादीहरूको भोगचलन रहेको देखिएबाट पुनरावेदक / वादीको जिकिरअनुसार नै प्रतिवादीहरूले २०६६ साल आषाढ २७ गते अर्को फुसको घर बनाई चलन गर्दै आएको भन्ने स्पष्ट हुन जान्छ। सो घर बनाएकोमा मुलुकी ऐन, घर बनाउनेको महलको ११ नं. को हदम्यादभित्रै मिति २०६६।०४।२८ मा वादीले फिराद समेत दर्ता गराएको पाइएको छ। यसरी उक्त जग्गा र सोमा भएको फुसको घरमा यी पुनरावेदक/वादीको हक कायम हुने देखिएको अवस्थामा उक्त जग्गामा फुसको अर्को घर बनाई हाल प्रत्यर्थी / प्रतिवादीहरूको

भोगचलन रहेको देखिनुलाई प्रतिवादीहरूले खिचोला गरेको नै मान्नुपर्ने।

जग्गामा नै हक स्वामित्व कायम नरहेको अवस्थामा सो जग्गामा प्रत्यर्थी / प्रतिवादीहरूले घर बनाएको वा सो जग्गामा बनेका घरको भोगचलन गरेको भए पनि निजहरूको हक स्थापित हुन सक्दैन। यसरी एउटाको नाममा विधिवत् कायम भएको जग्गामा अरूले घर बनाएमा वा सो जग्गामा रहे भएका घरमा बसोबास गरेमा खिचोला गरेको नै ठहर्छ र हक हुनेले चलन चलाई पाउने हुन्छ। प्रस्तुत विवादको सन्दर्भमा पनि पुनरावेदक / वादीको हक देखिएको घर जग्गामा प्रतिवादीहरूले खिचोला गरेको अवस्थामा यी पुनरावेदक / वादीले खिचोला मेटाई चलनसमेत चलाई पाउने हुन्छ। त्यसैले पुनरावेदन जिकिरअनुसार उक्त जग्गामा यी पुनरावेदक / वादीले घर भत्काई खिचोला मेटाई चलनसमेत पाउने देखिन आएकोले उक्त जग्गामा हक कायम हुने ठहर्‍याएको हदसम्म सुरु फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालतको फैसला मिलेकै देखिएको र घर भत्काई खिचोला मेटाई चलनसमेत चलाई पाउनेतर्फ केही नबोलेको हदसम्म सुरु फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालतको फैसला सो हदसम्म मिलेको नदेखिएकोले सो फैसला केही उल्टी हुने देखिन आउने।

अतः विवेचित आधार प्रमाणहरूबाट उल्लिखित दाबीको कि.नं. १ को जग्गामा यी पुनरावेदक / वादीको हक कायम हुने ठहर्‍याई र सो जग्गा र सोमा बनेका घरहरूमा पुनरावेदक / वादीले खिचोला मेटाई चलन चलाई पाउनेतर्फ केही नबोली भएको पर्सा जिल्ला अदालतको मिति २०६८।१।२६ को फैसला प्रतिवादीले खिचोला गरेको भन्ने मान्न नमिल्ने भनी सदर हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, हेटौँडाबाट मिति २०७०।२।१३ मा भएको फैसला खिचोला गरेको नठहर्‍याई खिचोला मेटाई चलन चलाई पाउनेतर्फ केही नबोलेको हदसम्म मिलेको नदेखिएकोले केही उल्टी

भई उक्त जग्गा र सोमा बनेका घरहरू भत्काई खिचोला मेटाई चलनसमेत चलाई पाउने।

इजलास अधिकृत: यदुराज शर्मा

इति संवत् २०७४ साल मङ्सिर ११ गते रोज २ शुभम्।

२

मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ, ०७०-RC-००६९, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. अमितकुमार देव

प्रतिवादीको अनुसन्धान र अदालतसमक्ष भएको बयान, घटनास्थल प्रकृति, लास जाँच मुचुल्का, किटानी जाहेरी दरखास्त, मौकामा कागज गर्ने मानिसहरूको कागज बेहोरा, मृतकको पोस्टमार्टम रिपोर्टसमेतबाट प्रतिवादी अमितकुमार देवले लागु औषध खान आमासँग पैसा माग्दा नदिएको निहुँमा आमासँग विवाद पर्दा छुट्याउन आएका बाबु श्यामनारायण देवलाई लखेटी लखेटी फलामको जि.आई. पाइप र काठको पीराले टाउकोलगायतका शरीरका विभिन्न भागमा प्रहार गरी कर्तव्य गरी मारेको पुष्टि हुन आएकोले यी प्रतिवादी अमितकुमार देवलाई ज्यानसम्बन्धी महलको नं.१३(३) बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद हुने ठहर गरी भएको सुरु सप्तरी जिल्ला अदालतको फैसलालाई सदर हुने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत, राजविराजको फैसलालाई अन्यथा मान्नु पर्ने नदेखिने।

तसर्थ विवेचित आधार प्रमाणसमेतबाट लागु औषध खान आमासँग पैसा माग्दा नदिएको निहुँमा आमासँग विवाद पर्दा छुट्याउन आएका बाबु श्यामनारायण देवलाई लखेटी लखेटी फलामको जि.आई. पाइप र काठको पीराले टाउकोलगायतका शरीरका विभिन्न भागमा प्रहार गरी कर्तव्य गरी मारेको पुष्टि हुन आएकोले यी प्रतिवादी अमितकुमार देवलाई ज्यानसम्बन्धी महलको नं.१३(३) बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद हुने ठहर गरी भएको सुरु सप्तरी जिल्ला अदालतको फैसलालाई सदर हुने

ठहर्न्याएको पुनरावेदन अदालत, राजविराजको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

प्रतिवादी अमितकुमार देवको मिति २०६९।६।८ गते मृत्यु भएको भन्ने कारागार कार्यालय, काभ्रेपालाञ्चोकको मिति २०७५।२।२० च.नं. १६६९ को पत्रबाट देखिएकाले मुलुकी ऐन, दण्ड सजायको महलको ३ नं. बमोजिम बाँकी सजाय माफ हुने हुँदा निज प्रतिवादीका नामको बाँकी कैदको लगत कट्टा गर्नु भनी सुरु सप्तरी जिल्ला अदालतमा लेखी पठाई दिने ।

उपरजिस्ट्रार: शिवलाल पाण्डेय

कम्प्युटर: सिजन रेग्मी

इति संवत् २०७५ साल जेठ २१ गते रोज २ शुभम् ।

३

मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा, ०७१-CI-०१४२, निषेधाज्ञा, शत्रुधनप्रसाद ठाकुरसमेत वि. जीवनारायण साह

निवेदकले सार्वजनिक पोखरी भनी उल्लेख गरेको र पुनरावेदक / प्रत्यर्थीहरूले यो आफ्नो निजी भनेकोमा उक्त पोखरी सार्वजनिक हो या निजी हो भनी प्रमाण मूल्याङ्कन गरी निषेधाज्ञाको रोहबाट बोल्न नमिल्ने हुँदा पुनरावेदन अदालत, राजविराजबाट मिति २०७०।७।३ मा उक्त कि.नं. ४८० को जग्गामा रहेको पोखरीलाई सरकारी वा सर्वजनिक भनी प्रवेश गर्न र आवतजावत गर्न रोक नलगाउनु, कुनै किसिमको भौतिक निर्माण कार्य नगर्नु भनी विपक्षीहरूका नाममा निषेधाज्ञाको आदेश जारी हुने ठहर्न्याई भएको आदेशमा सो जग्गा र सोमा रहेको पोखरीलाई सरकारी वा सार्वजनिक भनेको हदसम्म उक्त आदेश मिलेको देखिन नआउने ।

कि.नं.४८० को जग्गा र सोमा रहेको पोखरी हाल सरकारी वा सार्वजनिक हो वा पुनरावेदक / प्रत्यर्थीहरूको निजी हो भन्ने निरूपण नभई विवादित नै रहेको देखिएकोले सो विवादको निरूपण नभएसम्म सो

पोखरीमा अरु व्यक्तिहरूलाई प्रवेश गर्न र आवतजावत गर्न रोक लगाउन नमिल्ने र कुनै व्यक्तिले भौतिक निर्माण कार्य पनि गर्न नपाइने हुँदा सो जग्गा र पोखरीमा आवतजावत गर्न रोक नलगाउनु, कुनै किसिमको भौतिक निर्माण कार्य नगर्नु भनी विपक्षीहरूका नाममा पुनरावेदन अदालत, राजविराजबाट निषेधाज्ञाको आदेश जारी गरेको हदसम्म मिलेको देखिँदा सो हदसम्म उक्त आदेश सदर हुने ।

अतः विवेचित आधार, कारण तथा प्रमाणहरूसमेतबाट निवेदकले सार्वजनिक पोखरी भनी निवेदन दाबीमा उल्लेख गरेको र पुनरावेदक / प्रत्यर्थीहरूले उक्त पोखरी निजी हो भनी भनेकोमा उक्त पोखरी सार्वजनिक हो या निजी हो भन्ने प्रमाण मूल्याङ्कन गरी निषेधाज्ञाको रोहबाट बोल्न नमिल्ने हुँदा कि.नं. ४८० को पोखरीलाई सार्वजनिक भनी नामाकरण गरेको हदसम्म पुनरावेदन अदालत, राजविराजबाट मिति २०७०।७।३ मा भएको आदेश मिलेको नदेखिँदा केही उल्टी हुने ठहर्छ । उक्त पोखरी सार्वजनिक उपभोगमा रहेको पोखरी डिललाई सार्वजनिक निकासको रूपमा प्रयोग गरी आएकोमा रोक लगाएको भन्ने हदसम्ममा प्रवेश गर्न र आवतजावत गर्नमा रोक नलगाउनु र कुनै किसिमको भौतिक निर्माण कार्य नगर्नु भन्ने हदसम्म तत्कालीन पुनरावेदन अदालत, राजविराजबाट मिति २०७०।७।३ मा भएको आदेश मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: लोकबहादुर हमाल

कम्प्युटर: सिजन रेग्मी

इति संवत् २०७४ साल भदौ २९ गते रोज ५ शुभम् ।

४

मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा, ०६९-WO-०७३१, उत्प्रेषण, सीतेश्वर सिंह वि. निजामती किताबखाना, हरिहरभवनसमेत

निवेदक सितेश्वर सिंहले सेवा प्रवेश गर्दा भरेको वैयक्तिक नोकरी विवरण (सिटरोल) मा तथा

निजको शैक्षिक प्रमाण पत्रमा लेखिएको जन्मदिन मिति वि.सं.२००७।०५।२९ (इ.सं. १९५०।०९।०५) उल्लेख भएको देखिन्छ। स्वास्थ्य सेवा ऐन, २०५३ को दफा ४५ को उपदफा ४(क) ले व्यवस्था गरेअनुसार, सेवा प्रवेश गर्दा निजले पेस गरेको शिक्षण संस्थाको प्रमाणपत्रमा किटिएको जन्मदिन वा वर्षबाट हुन आएको उमेरबाट अनिवार्य अवकाश दिने व्यवस्था रहेको पाइन्छ। निवेदकको नोकरी विवरणमा रहेको शैक्षिक प्रमाणपत्रमा किटिएको जन्ममिति वि.सं. २००७।५।२९ (इ.सं. १९५०।९।५) उल्लेख भएकोले निजको ६० वर्ष पूरा हुने मिति २०६७।५।२० मा देखिन आउँछ। तसर्थ निवेदकले सेवा प्रवेश गर्दा नोकरी विवरणसाथ पेस गरेको शैक्षिक प्रमाणपत्रमा उल्लेख भएको जन्ममितिको आधारमा निज निवेदक सीतेश्वर सिंह मिति २०६७।०५।२९ गतेदेखि लागू हुने गरी अनिवार्य अवकाश हुने देखिन आउने।

निवेदकका उमेर सम्बन्धमा वैयक्तिक विवरण फारामलगायतका अभिलेखमा कुनै विवाद नदेखिएको अवस्थामा नियममा भएको व्यवस्थानुसार अनिवार्य अवकाश दिने कार्य र तत्सम्बन्धी सूचना सम्प्रेषण समयमा गर्ने दायित्व सम्बन्धित निकायको भएकोमा सोअनुसार आफ्ना कामकारबाही आफूले समयमा नै नगरेबाट बढी समयावधिसम्म काम गरेको देखिन्छ। बढी समय काम गर्न निवेदकले कुनै गलत लिखत पेस गरेको वा तत्सम्बन्धमा कुनै छलकपट गरेको लिखित जवाफबाट समेत देखिएको पाइँदैन। निवेदकलाई अवकाश दिने निकाय एवम् काममा लगाउने निकायले मिति २०६७।५।२९ मा नै अवकाश हुन कुनै पनि पूर्वसूचना सम्प्रेषण नगरी काममा लगाइरहेको अवस्थामा सो काम गरिसकेको अवधिबाटको पारिश्रमिक नपाउने भनी निवेदकलाई पारिश्रमिक पाउनबाट वञ्चित गर्नु न्याय र कानूनको दृष्टिकोणबाट युक्तिसङ्गत देखिन नआउने।

निजामती सेवा नियमावली, २०५० को

नियम १२९(क)४ मा कुनै कर्मचारीले आफ्नो छलकपट तथा षड्यन्त्रको माध्यमले अवकाश हुने अवधिभन्दा बढी सेवामा रही तलब भत्ता भुक्तानी लिएको अवस्थामा लागू हुने हो। कुनै पनि कर्मचारीलाई निजको अवकाश मितिको बारेमा निज र निज कार्यरत रहेको कार्यालयलाई सूचना दिने दायित्व विपक्षी प्रत्यर्थीहरूको हो भन्ने कुरालाई बाहेक गरेर उक्त नियम १२९(क)४ को प्रयोग हुन नसक्ने।

निवेदकले मिति २०७१।३।३ देखि मिति २०७३।६।७ सम्म १ वर्ष ४ महिना ८ दिन बढी समय कार्यरत रही रु.३,१४,५०९।- बढी भुक्तानी लिएको रकम निजको निवृत्तिभरणबाट असुलउपर गरी दिनु भई यस कार्यालयलाई जानकारी पठाइदिनु हुन भन्ने जिल्ला स्वास्थ्य कार्यालय, मलङ्गवा सर्लाहीको च.नं.५९१ मिति २०६९।७।२३ को पत्र निजामती सेवा ऐन, तथा नियमावलीमा भएका कानूनी व्यवस्था प्रतिपादित सिद्धान्त र श्रमसम्बन्धी विधिशास्त्रीय दृष्टिकोणबाट समेत न्यायसङ्गत देखिन नआउने।

अतः निवेदकले उल्लेख गरेअनुसार सेवा प्रवेश गर्दा भरेको नोकरी विवरण (निवृत्तिभरण अधिकारपत्र)मा उल्लेख भएको जन्ममितिका आधारमा कायम हुने जन्ममितिसमेतको आधारमा निवेदकले अनिवार्य अवकाश पाउने अवस्था भइसकेको देखिँदा निजलाई अवकाश दिएको हदसम्म भएको निर्णय र पत्राचार बदर गरिरहन परेन। अवकाशपत्र दिएको मितिसम्म निवेदकले आफ्नो पदमा रही कार्य गरेको अवधिको नियमानुसार पाउने तलब, भत्तालगायतका सुविधाहरूको रकम भुक्तानी लिएको देखिँदा निज निवेदकबाट रु.३,१४,५०९।- (तीन लाख चौध हजार पाँच सय नौ रुपैयाँ) रकम फिर्ता दाखिला गराउने गरी भएको जिल्ला स्वास्थ्य कार्यालय, मलङ्गवा सर्लाहीको मिति २०६९।७।२३ को निर्णयसहितको निजामती किताबखानालाई लेखिएको पत्र एवम् सोबमोजिम गरिएका पत्राचारसमेतका काम कारबाही

उत्प्रेषणको आदेशले बदर हुने ठहर्छ । अतः निवेदकले मिति २०६७।५।२९ देखि मिति २०६८।९।२९ सम्म काम गरेबापत खाईपाई आएको तलब भत्ताको रकम कट्टा नगरी नियमानुसार पाउने सम्पूर्ण रकम भुक्तानी दिनु भनी विपक्षीहरूका नाममा परमादेशको आदेशसमेत जारी हुने ।

इजलास अधिकृतः लोकबहादुर हमाल

कम्प्युटरः सिजन रेग्मी

इति संवत् २०७४ साल पुस २८ गते रोज ६ शुभम् ।

इजलास नं. १२

१

मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा, ०६६-CI-११७०, जग्गा खिचोला मेटाई हक कायम गरिपाउँ, मिनराज ढुङ्गाना वि. काशीप्रसाद जोशीसमेत

तत्कालीन श्री ५ को सरकारद्वारा मालपोत ऐन, २०३४ को दफा ७ (१क) ले दिएको अधिकार प्रयोग गरी गठित समितिले राजपत्रमा प्रकाशित सूचनाबमोजिमको अधिकार क्षेत्रभित्र रही तोकिएको क्षेत्रमा बसी आएका व्यक्तिहरूको निवेदन लिने, सूचना प्रकाशित गर्ने, सरजमिन गर्ने, साँध साँधियार बुझ्नेलगायतका कार्यविधि अपनाई आवश्यक किताकाटसमेत गराई वास्तविक भोगवालाको यकिन गरी सम्बन्धित व्यक्तिका नाउँमा जग्गा दर्ता गरिदिएको मिसिल संलग्न कागजातबाट देखिन्छ । यसरी उक्त समितिले जग्गा दर्ता गर्ने गरेको काम कारबाही उसलाई तोकिएको क्षेत्राधिकारभित्र रही तोकिएको कार्यविधि पूरा गरी गरेको देखिएको र सो सम्बन्धमा वादीसमेतले अन्यथा भन्न र पुष्टि गराउन सकेको नदेखिँदा समितिको क्षेत्राधिकार सम्बन्धमा पुनरावेदक वादीले लिएको दाबीसँग सहमत हुन सकिने अवस्था नरहने ।

समितिले तोकिएका कार्यविधि अपनाई

वास्तविक भोगवाला यकिन गरी वादी दाबीका जग्गालगायत अन्य जग्गाहरूसमेत दर्ता हुने गरी निर्णय गरेको देखिन आयो । साथै वादीको फिराद दाबी एवम् पुनरावेदन जिकिर हेर्दासमेत निज स्वयम्ले दाबीका जग्गाहरूको दर्ता स्वेस्ता आफ्नो नाउँमा नभइसकेको अवस्था रहेको भन्ने कुरा स्वीकार गरेको पाइन्छ । वादीले प्रमाण पेस गरेको ०२९ सालको हदमुनिको राजीनामा भित्रकै जग्गा नापीमा कि.नं. २३७ र २७५ कायम भएको भन्ने पुष्टि हुने आधार देखिँदैन । वस्तुतः विवादित जग्गा पुनरावेदक वादीको साबिक दर्ता र भोगअन्तर्गत रहेको भन्ने प्रमाणित हुन सक्ने नदेखिने ।

उक्त जग्गा दर्ता समस्या समाधान समितिबाट भोग, सरजमिन आदि प्रमाणहरूको आधारमा यी पुनरावेदक वादीको नाउँमा समेत विभिन्न किता जग्गाहरू दर्ता गरिदिने गरी भएको निर्णयलाई निज वादीले अन्यथा नभनी समितिले गरेको निर्णय सो हदसम्म स्वीकार गरेको देखिन्छ । समितिले आफ्नो नाउँमा दर्ता गर्ने गरेको निर्णय क्षेत्राधिकारअन्तर्गत रहेको भनी भोगका आधारमा लिइएको निर्णयलाई ठीक हो भनी मान्ने तर विपक्षीको नाउँमा सोही भोगलाई आधार मानी भएको निर्णय मिलेन भन्नु उचित नहुने ।

सुरु अदालतबाट भई आएको नक्सा मुचुल्काबाट समेत उक्त जग्गा विपक्षीहरूले भोगचलन गरिरहेको भन्ने नक्सा मुचुल्कामा उल्लेख भएको देखिन्छ । यसरी दाबीको कि.नं. २३७ र २७५ को जग्गामा पुनरावेदक वादीको साबिक हदबन्दीको लिखतभित्रको जग्गा हो भन्ने यकिन रूपमा प्रमाणित हुन नआएको तथा निजको नाउँमा दर्ता कायम भइ नसकेको र सो जग्गामा विभिन्न व्यक्तिहरूको भोग बसोबास रहेको अवस्थामा जग्गाको वास्तविक भोगवाला यकिन गरी सम्बन्धित व्यक्तिका नाउँमा दर्ता गरिदिन सक्ने क्षेत्राधिकार भएको समितिले तोकिएको कार्यविधि पूरा गरी भएको जग्गा दर्ता गर्ने निर्णयलाई

अन्यथा भन्न मिल्ने नदेखिने ।

पुनरावेदन अदालत, पोखराको फैसलामा निर्णय बदरतर्फ दाबी नपरेको भनी उल्लेख भएको पाइए तापनि वादी दाबीको जग्गामा वादीको हकभोग दर्ता पुष्टि हुन नसकेको तथा नक्सा मुचुल्काबाट देखिएको भोग प्रमाणको आधारलाई समेत विवेचना गरी अरु बुँदा प्रमाणहरूबाट निष्कर्षमा पुगी फैसला गरेको देखिँदा सो निर्णय बदरको दाबी नभएको भन्ने उल्लेखलाई मात्र आधार लिएको भन्ने देखिन आएन । अतः पुनरावेदक वादीको पुनरावेदन जिकिरसँग समेत सहमत हुन नसकिने ।

तसर्थ, जग्गा दर्ता समस्या समाधान समितिले आफ्नो क्षेत्राधिकारभित्र रही तोकिएको कार्यविधि पूरा गरी वास्तविक भोगवाला यकिन गरी सोही प्रमाणसमेतका आधारमा विपक्षीका नाउँमा जग्गा दर्ता गरिदिएको र प्रतिवादीहरूका नाउँमा दर्ता हुने गरी समितिले निर्णय गरी प्रतिवादीहरूको नाउँमा दर्ता भएको देखिँदा निर्णय बदर गरी जग्गा खिचोला मेटाई हक कायम गरिपाउँ भन्ने वादीको दाबी नपुग्ने गरी भएको सुरु तनहुँ जिल्ला अदालतको फैसलालाई सदर हुने ठहर्‍याई भएको पुनरावेदन अदालत, पोखराको मिति २०६५।१०।१२ को फैसला सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: कल्याण खड्का

कम्प्युटर: विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७४ साल फागुन २८ गते रोज २ शुभम् ।

- यस लगाउको ०६६-CI-११७१, जग्गा खिचोला मेटाई हक कायम गरिपाउँ, *मिनराज ढुङ्गाना वि. सीता गुरुडसमेत* भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार फैसला भएको छ ।

२

मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा, ०७१-WO-०३३३, उत्प्रेषण, गणेशप्रसाद साहसमेत वि. पुनरावेदन अदालत, राजविराजसमेत

अदालतमा मुद्दा चल्दाचल्दै वा अन्तिम फैसला भइसकेपछि अचल सम्पत्तिको हक हस्तान्तरण हुन गएमा सो मुद्दाको अन्तिम फैसलाबाट जे परिणाम हुन्छ पछि भएका कार्यहरूमा पनि सोही परिणामले स्वतः प्रभाव पार्ने ।

दण्ड सजायको ४४ नं. मा “जतिकै वर्ष” भन्ने शब्दावली उल्लेख भएबाट हदम्याद नाघी दा.खा. को निवेदन परेको भन्ने लिखित जवाफ तथा बहसको क्रममा विद्वान् कानून व्यवसायीहरूले उठाउनु भएको बहस जिकिरसँग सहमत हुन सकिएन । तसर्थ जिल्ला अदालतको मिति २०७०।६।१३ को आदेशलाई बदर गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालतको मिति २०७१।२।१९ को आदेश उक्त कानूनअनुकूलको पनि देखिन नआउने ।

वस्तुतः अन्तिम फैसला भइसकेपछि निवेदन दाबीको जग्गा अन्यत्र हक हस्तान्तरण भएको देखियो । जिल्ला अदालत नियमावली, २०५२ को नियम ७८(क) बमोजिम पछि हक हस्तान्तरण गरेको लिखतहरूको सम्बन्धमा निवेदकहरूलाई बुझी सो लिखत बदर गर्ने गरी भएको जिल्ला अदालतको आदेश कानूनबमोजिम रहेकोमा सो जिल्ला अदालतको आदेश बदर गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालत, राजविराजको मिति २०७१।२।१९ को आदेश उल्लिखित आधार कारणबाट त्रुटिपूर्ण देखिएकोले उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर हुने ।

इजलास अधिकृत: केदारनाथ पौडेल

कम्प्युटर: विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७४ साल पुस १३ गते रोज ५ शुभम् ।

३

मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई, ०७०-CR-०९२७, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. जयप्रताप थापासमेत प्रतिवादीहरू जयप्रताप थापा, भोजबहादुर परियार र विष्णुबहादुर परियारसमेतले अदालतसमक्षको

बयानमा मादक पदार्थ सेवन गरेको उल्लेख गरेपनि कसुरमा इन्कार रही बयान गरेको देखिन्छ। अनुसन्धान तहकिकातको क्रममा मौकामा कागज गर्ने मानिसहरूले आफूले वारदात भएको नदेखेको, सुनी थाहा पाएको भनी अदालतमा ज्ञानबहादुर नेपाली, लोकबहादुर थापा, विष्णुबहादुर जि.सी.समेतले बकपत्र गरेको देखिन्छ। मृतक र प्रतिवादीबीच पूर्वरिसइवी रहेको भनी जाहेरवाला कृष्णबहादुर थापा, मृतक चन्द्रबहादुर थापाको पत्नी माया थापासमेतले अदालतसमक्षको बकपत्रमा उल्लेख गरेपनि सो तथ्य पुष्टि हुन सकेको देखिँदैन। उल्लिखित आधार प्रमाणबाट मृतक चन्द्रबहादुर थापाको मृत्यु प्रतिवादीहरूको कार्यबाट भएको हो भनी गडाउ गर्न मिल्ने कुनै प्रत्यक्ष दशी प्रमाण तथा चश्मदिद गवाहसमेत रहेको अवस्था देखिन नआउने।

प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ बमोजिम फौजदारी मुद्दामा प्रतिवादीउपरको अभियोग दाबीलाई प्रमाणित गर्ने प्रमाणको भार वादीमा निहित रहेको हुन्छ। वादी नेपाल सरकारले आफ्नो दाबीलाई शंकारहित तवरले वस्तुनिष्ठ एवम् निश्चयात्मक सबुत प्रमाण पेश गरी पुष्टि गर्नुपर्ने हुन्छ। प्रस्तुत मुद्दामा वादी नेपाल सरकारको तर्फबाट प्रमाणको भारसमेत यथेष्ट रूपमा पुऱ्याउन सकेको पाइँदैन। फौजदारी न्याय प्रणालीमा शंकाको सुविधा अभियुक्तले पाउने नै हुन्छ। केवल शंकाको भरमा अभियुक्तलाई कसुरदार करार गर्न मिल्ने नदेखिने।

मादक पदार्थ सेवन गर्दा मृतक र प्रतिवादीहरूको बीच कुनै झैझगडा वादविवाद भएको भन्ने देखिँदैन। प्रतिवादीहरूले मृतकलाई मार्नु पर्नेसम्मको पूर्वरिसइवी रहेको भन्ने पनि देखिँदैन। मृतक घर जाँदा भीरको बाटो हुँदै जानुपर्ने स्थिति रहेको छ। मादक पदार्थ सेवन गरी रातको समयमा भीरको बाटो हुँदै एकलै मृतक अरुभन्दा अघि घर हिँडेको भन्ने तथ्य छ। यसमा विना ठोस सबुतको अभावमा प्रतिवादीले

नै मृतकलाई भीरबाट खसाली मारेको भनी अनुमान र शंका गर्न फौजदारी न्यायको सिद्धान्तले मिल्दैन। तसर्थ, सुरु गुल्मी जिल्ला अदालतबाट प्रतिवादी जयप्रताप थापालाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद र प्रतिवादीहरू भोजबहादुर दमाई तथा विष्णुबहादुर परियारलाई सोही महलको १७(३) नं. बमोजिम जनही एक वर्ष कैद सजाय हुने ठहर गरी भएको फैसला उल्टी गरी अभियोग दाबीबाट प्रतिवादीहरूले सफाइ पाउने ठहऱ्याई पुनरावेदन अदालत, बुटवलबाट भएको फैसला मनासिब नै देखिने।

अतः प्रतिवादीहरू जयप्रताप थापा, भोजबहादुर दमाई र विष्णुबहादुर परियारलाई अभियोग दाबीबाट सफाइ दिने ठहर गरी पुनरावेदन अदालत, बुटवलबाट मिति २०७०।१।८ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : कालिबहादुर साम्यु लिम्बू
इति संवत् २०७४ साल फागुन २२ गते रोज ३ शुभम्।

४

मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल, ०७४-RC-००५४, कर्तव्य ज्यान (साधक), नेपाल सरकार वि. गोविन्दप्रसाद नेम्वाङ

अभियुक्त गोविन्दप्रसाद नेम्वाङका विरुद्ध निजका बाबु दिलबहादुर नेम्वाङले किटानी जाहेरी दिएको पाइन्छ। मृतक भिमबहादुर नेम्वाङलाई निजको घरमा गई अभियुक्त गोविन्दप्रसाद नेम्वाङले छुरी प्रहार गरी कर्तव्य गरी मारेको भनी आफ्नै बाबुले छोराको विरुद्ध विना कारण किटानी जाहेरी दिनुपर्ने अवस्था रहँदैन। मृतकसँग गई बिक्रीको विषयमा वादविवाद भएकोमा सोही रिसइवीको कारण प्रतिवादीले छुरा प्रहार गरी कर्तव्य गरी मारेको भन्ने मृतककी पत्नीले मौकामा कागज गरेको पाइन्छ। यी प्रतिवादी गोविन्दप्रसाद नेम्वाङ वारदात घटेपछि फरार रहेको स्थितिमा निज प्रतिवादी निर्दोष रहेका छन् भनी मान्न सकिने अवस्था

रहेन । यसप्रकार प्रतिवादी गोविन्दप्रसाद नेम्वाङले मृतक भिमबहादुर नेम्वाङलाई पेटमा धारिलो हतियार प्रहार गरी कर्तव्य गरी मारेको कुरालाई मिसिल संलग्न मृतकको लास जाँच तथा पोष्टमार्टम रिपोर्टमा उल्लिखित घा चोटको प्रकृतिलगायतका तथ्यगत प्रमाणहरू तथा परिस्थितिजन्य प्रमाणहरूबाट पुष्टि भइरहेको देखिन आएकोले उच्च अदालतबाट निज प्रतिवादीलाई अभियोग माग वादीबमोजिमको कसुरमा सजाय गर्ने गरेको फैसलालाई अन्यथा भन्नुपर्ने अवस्था नरहने ।

अतः विवेचित आधार प्रमाणबाट प्रतिवादी गोविन्दप्रसाद नेम्वाङलाई आरोपित कसुरबाट सफाइ दिने गरी भएको सुरु पाँचथर जिल्ला अदालतबाट मिति २०७१।१२।२९ मा भएको फैसलालाई उल्टी गरी प्रतिवादी गोविन्दप्रसाद नेम्वाङलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(१) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय गर्ने गरी भएको उच्च अदालत, विराटनगर, इलाम इजलासको मिति २०७४।२।३ को फैसला मिलेकै देखिँदा साधक सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: कल्याण खड्का

कम्प्युटर: विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७५ साल वैशाख २३ गते रोज १ शुभम् ।

५

मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल, ०७४-RC-००७३, कर्तव्य ज्यान (साधक), नेपाल सरकार वि. पवन परियार

प्रतिवादीले अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष र अदालतमा समेत मृतकलाई बञ्चरो प्रहार गरी कर्तव्य गरी मारेको कुरामा साबिती रहेको पाइन्छ । सो साबिती बयान प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा ९(१) बमोजिम प्रमाणमा लिन मिल्ने नै देखिन्छ । अपराधमा प्रयोग भएको बञ्चरो वारदातस्थलबाट बरामद भएको र सो बञ्चरोमा रातो रगत लागेको भन्ने उल्लेख छ ।

वस्तुतः प्रतिवादीले गरेको साबिती बयान, घटनास्थल तथा बरामदी मुचुल्का तथा मृतकको लास जाँच मुचुल्का, पोष्टमार्टम रिपोर्टमा उल्लिखित बेहोराबाट समर्थित भएको पाइयो । मृतक दिपक वि.क. को मृत्यु प्रतिवादीले बञ्चरोजस्तो जोखिमी हतियारले अनुहार एवम् टाउकोलगायतका अङ्गमा प्रहार गरी भएको तथ्य पुष्टि हुन आयो । यसप्रकार यी प्रतिवादी पवन परियारको वञ्चरो प्रहारबाटै मृतकको मृत्यु भएको पुष्टि हुन आएकोले निज प्रतिवादीलाई अभियोग दाबीबमोजिमको कसुरमा मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम सजाय गर्ने गरेको सुरु उदयपुर जिल्ला अदालत एवम् पुनरावेदन अदालत, राजविराजको फैसलालाई अन्यथा भन्नुपर्ने अवस्था नरहने ।

अतः विवेचित आधार प्रमाणबाट प्रतिवादी पवन परियारले अभियोग माग दाबीको कसुर गरेको प्रमाणित भएकोले निज प्रतिवादीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय गर्ने गरी भएको सुरु उदयपुर जिल्ला अदालतको मिति २०७१।१।२४ को फैसलालाई सदर गर्ने गरी भएको पुनरावेदन अदालत, राजविराजको मिति २०७३।५।२९ को फैसला मिलेकै देखिँदा साधक सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: कल्याण खड्का

कम्प्युटर: विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७५ साल वैशाख २३ गते रोज १ शुभम् ।

६

मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ, ०६९-CI-०१८१, जग्गा दर्ता, प्रचण्डकुमार बस्नेत वि. पन्नादेवी भट्ट

मालपोत कार्यालयले सबुत प्रमाण बुझी विवादित जग्गामा कसको हक पुग्ने भनी न्यायिक निर्णय गर्ने अधिकार मालपोत कार्यालयलाई कुनै कानूनले अख्तियार दिएको नदेखिने ।

तसर्थ, मालपोत कार्यालय, डिल्लीबजारबाट वादी दाबीबमोजिम वादीको नाउँमा दाबीको जग्गा दर्ता नामसारी हुने ठहर गरी भएको निर्णय क्षेत्राधिकारको अभावमा बदर हुने ठहर्‍याई दुवै वादी प्रतिवादीले हकबेहकमा नालिस गरी आफ्नो हक कायम गराई ल्याउनु भनी पुनरावेदन अदालत, पाटनबाट भएको फैसला मनासिब नै देखिने।

अतः पुनरावेदक वादी प्रचण्डकुमार बस्नेतको नाउँमा दाबीको कि.नं.१८४ को जग्गा र.प. नामसारी हुने गरी मालपोत कार्यालय, डिल्लीबजारले गरेको निर्णय बदर गरी पक्षहरूलाई हक बेहकतर्फ नालिस गरी हक कायम गरी ल्याउनु, सुनाई दिनु भनी पुनरावेदन अदालत, पाटनबाट मिति २०६८।१०।१९ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: कालिबहादुर साम्यु लिम्बू

कम्प्युटर: विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७४ साल फागुन १६ गते रोज ४ शुभम्।

७

मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ, ०७०-WO-०९५२, उत्प्रेषण / परमादेश, विपिन हाडा वि. काठमाडौं जिल्ला अदालत, बबरमहलसमेत

एक पटक बैंकको हकमा रोक्का राखिएको र त्यसकै आधारमा ऋण प्रवाह भएको सम्पत्तिलाई फेरी अरू कुनै निकायका पत्र वा आदेशबाट पुनः रोक्का रहने हो भने ऋण असुलीको प्रक्रिया नै अवरुद्ध हुन गई बैंकिङ कारोबारमा विश्वसनियता रहन नसक्ने।

निवेदक बैंकले विपक्षी पुरुषोत्तम दाहालको नाउँको जग्गा धितो लिई ऋण प्रवाह गर्नुपूर्व उक्त धितो लिएको जग्गा रोक्का राख्नका लागि मालपोत कार्यालय, कलंकीमा लेखी पठाई सोहीबमोजिम मालपोत कार्यालय, कलंकीले रोक्का राखेपछि ऋण प्रवाह गरेको देखिएकोले रोक्का राखिएको उक्त सम्पत्तिको प्रयोजन समाप्त नभई अर्का प्रयोजनका

लागि पुनः रोक्का राख्दा पहिले रोक्का राखिएको प्रयोजन नै निरर्थक वा प्रयोजनहीन हुने गरी दोहोरो रोक्का राख्न कानूनसङ्गत नदेखिने।

पटकपटक अदालतले दोहोरो रोक्का सम्बन्धमा नजिर कायम गर्दै जाने र मालपोत कार्यालयजस्तो जिम्मेवार निकायले दोहोरो रोक्कालाई निरन्तरता दिई निवेदक बैंक जस्ता संस्थालाई कानूनबमोजिम ऋण असुलीमा बाधा सिर्जना गर्ने हो भने कानून तथा नजिरको उद्देश्य र मनसाय पूरा नभई कानूनी शासनको उपहाससमेत हुन जाने।

धितो सुरक्षणमा राखी बैंकले ऋणप्रवाह गरेपछि ऋणीले बक्यौता फछ्यौट नगरेको अवस्थामा बैंक तथा वित्तीय संस्थासम्बन्धी ऐन, २०६३ को दफा ५७ (१) बमोजिम बैंकले रीतपूर्वक लिलाम गरी वा अन्य कुनै व्यवस्था गरी आफ्नो साँवा ब्याज असुलउपर गर्न सक्ने अधिकारलाई कार्यान्वयन गर्ने कार्यमा मालपोत कार्यालयलगायत अन्य निकायको समेत सहयोग अपेक्षित हुने।

मिति २०६१।४।२९ को मालपोत कार्यालय, कलंकीको पत्रबाट बैंक तथा वित्तीय संस्थासम्बन्धी ऐन, २०६३ को दफा ५६ (३), (४) तथा मालपोत ऐन, २०३४ को दफा ८ख बमोजिम रोक्का रहेको धितोको सम्पत्ति जुन प्रयोजनको लागि रोक्का राखिएको हो, सो प्रयोजन समाप्त नभएसम्म दोहोरो रोक्का राख्न नमिल्ने अवस्थामा मालपोत कार्यालय, कलंकीले जिल्ला प्रहरी कार्यालय, काठमाडौंको मिति २०६६।८।१० को पत्र एवम् काठमाडौं जिल्ला अदालतको मिति २०७०।१।२५ का पत्रहरूलाई आधार बनाई ती पत्रहरूको आधारमा समेत रोक्का राखेकोले उक्त निकायबाट फुकुवा भई आएपछि मात्र निवेदक बैंकको नाममा नामसारी गर्ने भनी बैंकको नामसारीसम्बन्धी निवेदनलाई तामेलीमा राख्ने गरी मिति २०७१।२।२५ मा भएको निर्णय कानूनसङ्गत नदेखिने।

काठमाडौं जिल्ला अदालतको लिखित जवाफ हेर्दा अंश चलन मुद्दाका प्रतिवादी पुरुषोत्तम दाहालका नाउँका कित्ता जग्गाहरू रोक्का गरिपाउँ भनी निवेदन परेकोमा कि.नं. ४९२ समेतका दुई कित्ता जग्गा हिमालयन बैंकबाट रोक्का रहेका भन्ने जवाफ प्राप्त भएको देखिँदा उक्त रोक्काको प्रयोजन समाप्त भई जग्गाधनीको नाउँमा जग्गा कायम रही रोक्का फुकुवा भई जाने अवस्था भएका बखत उक्त कित्ता रोक्का राख्नु भनी मालपोत कार्यालय, कलंकीलाई पत्र गएको हो भन्ने बेहोरा उल्लेख भएको देखिँदा सो शर्तपरक रोक्का कार्यले बैंकको ऋण असुलीमा बाधा दिएको देखिन नआउने।

अघि रोक्का रहेको सम्पत्ति पुनः रोक्काका लागि लेखी आउन सक्छ, यसको अर्थ कानूनबमोजिमको पहिलो रोक्कालाई निष्क्रिय वा प्रभावहीन तुल्याउन खोजेको भन्ने होइन। पूर्वरोक्काको जानकारीको अभावमा वा अन्य विभिन्न परिस्थितिमा मुद्दा मामिलाको सिलसिलामा अदालतहरूले समेत कुनै सम्पत्ति रोक्का राख्न आदेश दिएमा सो सम्पत्ति अघि नै कानूनबमोजिम रोक्का छ र पुनःरोक्का राख्न मिल्दैन भनी जानकारी यथाशीघ्र अदालत वा सम्बन्धित निकायलाई दिनु वाञ्छनीय हुन्छ। त्यस्तो भएमा अड्डा अदालतबाट वा सम्बन्धित पक्षले समेत समयमा नै वैकल्पिक उपायहरू अपनाउन सक्ने भई न्यायिक वा अनुसन्धान प्रक्रियाहरूमा समेत सहयोग पुग्ने।

बैंकबाट धितोको सम्पत्ति लिलामी गरिएको वा आफैँले सकार गरेको अवस्थामा सो प्रयोजनको लागि नामसारी गरिदिने कर्तव्य मालपोत कार्यालयको हुने हुँदा कुनै कारणवश बैंकले उपर्युक्त नामसारी दाखिल खारेज प्रयोजनका लागि बाहेक ऋण चुक्ता भएको आदि कारणबाट पूर्णरूपमा आफ्नो हकमा भएको रोक्का फुकुवा गर्न लेखी पठाएमा मात्र पछिल्ला रोक्का आदेश कार्यान्वयन हुन सक्ने।

उल्लिखित विवेचित आधार कारणबाट ऋणी पुरुषोत्तम दाहालले लिएको कर्जा भाखाभित्र नतिरेकोले बैंक तथा वित्तीय संस्थासम्बन्धी ऐन, २०६३ को दफा ५७ बमोजिम लिलाम बिक्री गर्दा लिलाम बिक्री हुन नसकी बैंक आफैँले कानूनअनुसार नै धितो सकार गरी आफ्नो नाउँमा दाखिल खारेज गर्न मालपोत कार्यालय, कलंकीमा पठाएकोमा विपक्षी जिल्ला प्रहरी कार्यालय, काठमाडौं र काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट समेत रोक्का रहेको भनी बैंकको नाउँमा दाखिल खारेज गर्न इन्कार गरेको मालपोत कार्यालय, कलंकीको काम कारबाही कानूनअनुकूल नदेखिएको समेतका आधार कारणहरूबाट र दोहोरो रोक्का राख्न पठाउने विपक्षी जिल्ला प्रहरी कार्यालयलाई व्यक्तिको जग्गा कुनै पनि आधार कारणबाट रोक्का राख्न कानूनले अख्तियारी प्रदान नगरेकोबाट गैरकानूनी देखिँदा प्रहरी कार्यालय, काठमाडौंको मिति २०६६।८।१० को गैरकानूनी रोक्का आदेश उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर गरिदिएको छ। काठमाडौं जिल्ला अदालतको रोक्का आदेश बेहोराले बैंकको ऋण असुलीलाई असर पार्ने नदेखिए पनि रोक्का राख्ने निकायबाट फुकुवा भई आएपछि कारबाही चलाउने गरी मिसिल तामेलीमा राख्ने विपक्षी मालपोत कार्यालय, कलंकीको मिति २०७१।०२।२५ को आदेश कानूनबमोजिमको नदेखिँदा सोसँग सम्बन्धित आदेश, निर्णय, काम कारबाहीसमेत उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर हुने।

अतः पहिलो रोक्का राख्ने निवेदक बैंकको पत्रानुसार रोक्का रहेको घर जग्गा सकार गर्ने निवेदक बैंकको नाउँमा दाखिल खारेज नामसारी गर्न लेखी पठाएको कामकारबाहीको सम्बन्धमा कानूनबमोजिम तोकिएको कार्य गरी कानूनी कर्तव्य पालना गर्नु भनी विपक्षी मालपोत कार्यालय, कलंकीका नाउँमा परमादेशको आदेशसमेत जारी हुने।

इजलास अधिकृतः टेकराज जोशी

इति संवत् २०७५ साल जेठ ७ गते रोज २ शुभम्।

८

मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ, ०७२-CR-२०२२, लागु औषध, नेपाल सरकार वि. कमल घिमिरेसमेत

प्रतिवादीहरू कमल घिमिरे र गगन घिमिरेको घर खानतलासी गर्दा प्रमाणमा लाग्ने कुनै दशी प्रमाण फेला नपरेको भन्ने बेहोराको खानतलासी मुचुल्का रहेको पाइन्छ। प्रतिवादी कमल घिमिरेले आफूले लागु औषध सेवन नगर्ने र बिक्री वितरण गर्दिन भनी कसुरमा इन्कार रही अदालतमा बयान गरेको भए तापनि अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष बयान गर्दा टोपबहादुर महतरा मेरो घरनजिकका चिनजानका मानिस हुन्, निजले सेवन गर्ने हुँदा मसँग वैशाखको अन्तिमतिर रु.१,०००।- मा २ पुरिया ब्राउनसुगर खरिद गरी लगेका थिए भनी उल्लेख गरेका छन्। अर्का प्रतिवादी गगन घिमिरेले आफूले लागु औषध सेवन नगर्ने र बिक्री वितरणसमेत गर्दिन भनी कसुरमा इन्कार रही अदालतमा बयान गरेको भए तापनि टोपबहादुर महतरा क्षेत्रीले वैशाख महिनाको अन्तिमतिर रु.१,०००।- मा मबाट २ पुरिया ब्राउनसुगर खरिद गरी लगेका थिए, म पनि ब्राउनसुगर सेवन गर्दछु, मैले बिक्री गर्ने ब्राउनसुगर भारतको बहराइजस्थित जिल्ला नानपारा बस्ने कुबेर खानसँग खरिद गरी ल्याएको हुँ भन्ने बेहोराको बयान अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष गरेको पाइन्छ। यी प्रतिवादीद्वय कमल घिमिरे र गगन घिमिरेको सँगसाथबाट प्रमाणमा लाग्न सक्ने कुनै दशी प्रमाण बरामद हुन सकेको तथ्य मिसिल संलग्न कागजातबाट देखिन आएको नपाइने।

वादी नेपाल सरकारको तर्फबाट प्रतिवादीहरूको कार्य लागु औषधको बिक्री वितरण, खरिद, सञ्चय तथा ओसारपसार गर्ने भन्ने अभियोग दाबी वस्तुनिष्ठ, शंकारहित एवम् निश्चयात्मक ठोस

प्रमाणबाट पुष्टि गर्नुपर्नेमा निज प्रतिवादीद्वयबाट लागु औषध बरामद नभएको र सहअभियुक्तको मौकामा भएको बयानमा गरेको पोलबाहेक मिसिल संलग्न अन्य प्रमाणहरूबाट अभियोग दाबी पुष्टि हुन सकेको नदेखिने।

प्रतिवादीहरू उपर प्र.ह.धर्मराज शाहीको जाहेरीले नेपाल सरकार विरुद्ध गगन घिमिरे भएको लागु औषध मुद्दा र प्र.ना.नि.दुर्गाबहादुर बुढाको जाहेरीले नेपाल सरकार विरुद्ध प्रतिवादी नरेन्द्र नेपालीसमेत भएको लागु औषध ब्राउनसुगर मुद्दासमेतमा प्रतिवादी भई सो मुद्दा तहतहको अदालतमा सुनुवाइ भई विचाराधीन अवस्थामा रहेको देखिन आएको छ। माथि विवेचित आधारबाट प्रतिवादीहरू कमल घिमिरे र गगन घिमिरे लागु औषध दुर्व्यसनी भएको देखियो। तसर्थ, प्रतिवादीद्वय कमल घिमिरे र गगन घिमिरेलाई पुनरावेदन अदालत, सुर्खेतबाट जनही लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १४(१) (ड) बमोजिम ६ महिना कैद र रु.१,०००।- जरिवाना एवम् ऐ.को दफा १६ बमोजिम थप ६ महिना कैद र रु.१,०००।- जरिवाना हुने गरी भएको फैसला मनासिब नै देखिने।

अतः प्रतिवादीहरू कमल घिमिरे र गगन घिमिरेलाई सेवनतर्फसम्म सजाय गर्ने गरी र पटकेमा समेत सजाय गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालतको मिति २०७२।८।२८ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।
इजलास अधिकृत : कालिबहादुर साम्यु लिम्बू
कम्प्युटर: विष्णुदेवी श्रेष्ठ
इति संवत् २०७४ साल फागुन १६ गते रोज ४ शुभम्।

९

मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ, ०७३-WO-०९७५, उत्प्रेषण, रविता पोखरेल वि. उच्च अदालत, पोखरासमेत

निवेदकले साधारण अधिकार क्षेत्रअन्तर्गत तहतह हुँदै आएको आदेशहरू बदर गरी पाउन असाधारण अधिकारक्षेत्र प्रयोग गरेको देखिएको छ । अदालतले सदैव फैसला कार्यान्वयनको पक्षलाई समेत हेर्नुपर्ने हुन्छ । फैसला कार्यान्वयनले नै न्यायको अनुभूति पक्षलाई हुने हुँदा कार्यान्वयन पक्ष कमजोर भयो र फैसलाबाट निकलेको परिणामलाई पक्षले आत्मसात् गर्नबाट अनावश्यक समस्यालाई झेल्नु पर्‍यो भने न्याय गरेर मात्र हुँदैन न्याय परेको देखिनु पर्छ भन्ने मान्यताको प्रतिकूल हुन्छ । त्यसैले सामान्य अवस्थामा फैसलाको कार्यान्वयनको सन्दर्भमा भएको साधारण अधिकार क्षेत्रअन्तर्गतको विषयमा असाधारण क्षेत्रको ग्रहण गर्नसमेत मनासिब नहुने भई मिल्ने नदेखिने ।

कुनै व्यक्तिको संविधान तथा कानून प्रदत्त हकको अतिक्रमण भएको र त्यसको उपचारको व्यवस्था नभएको वा भए पनि प्रभावकारी नभएको स्थिति र अवस्थामा मात्र असाधारण अधिकारक्षेत्र आकर्षित भई रिट क्षेत्र ग्राह्य हुने हो । त्यसको लागि प्रथमदृष्टिभै हक अधिकारमा अतिक्रमण भएको देखिनु अनिवार्य हुन्छ । केवल आत्मगत तवरले हक अधिकारको हनन भयो भन्दैमा रिट क्षेत्रबाट उपचार प्राप्त हुन नसक्ने ।

निवेदक छुट्टी भिन्न हुनुअगावै अर्थात् निवेदकसमेतले बन्डा लिई छुट्टी भिन्न हुनुभन्दा अगावै सगोलमा रहँदा बस्दा लिएर खाएको ऋण सगोलकै दायित्वभित्र पर्ने भएकोले ऋण खाँदा सगोलमा रहेका सबै पारिवारिक सदस्यले बेहोर्नुपर्ने हुन्छ । जुन कुरा लेनदेनको ८ नं. मा "... यस्ता मुख्यले गरेको व्यवहार वा एकाघर उमेर पुगेका अरूले गरेकोमा मुख्य जानकारको पनि सहिछाप वा लिखत भएको बेहोरा मात्र गोश्वारा धनबाट चलछ" भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको पाइयो । यस्तो कानूनी व्यवस्थाबाट नै उपर्युक्त

ऋण सगोलकै दायित्वभित्र पर्ने स्पष्ट नै देखिन्छ । कानूनी व्यवस्थाअनुसार भए गरेको काम कारबाहीलाई सामान्य अवस्थामा अन्यथा भन्नुपर्ने नदेखिने ।

मेरो अरू सम्पत्ति पनि रहेकोमा यही कि.नं. ३४१७ कै घर जग्गा लिलाम गर्ने कार्य भयो भन्ने निवेदकको भनाईबाट नै पहिलो कुरा त निवेदकको हक अधिकारमा गैरकानूनी तवरले अतिक्रमण भयो आघात पर्‍यो भन्ने कुरा स्थापित भएको देखिँदैन । दोस्रो कुन सम्पत्तिबाट बिगो असुल गर्ने हो सोतर्फ बिगो असुल गरी लिने साहुको इच्छालाई नै प्राथमिकतामा राख्दा न्यायोचित हुन जाने र सो कुरामा साहुलाई नियन्त्रण गर्दा अस्वाभाविक हुन जाने ।

तसर्थ, उल्लिखित आधार कारणबाट कि.नं. ३४१७ को घर जग्गाबाट बिगो भरिभराउको कार्य स्थगित गर्न नमिल्ने भनी भएको कास्की जिल्ला अदालतको मिति २०७३।९।८ को आदेश र सो आदेश सदर गर्ने गरी भएको उच्च अदालत, पोखराको मिति २०७३।१।१२ को आदेश त्रुटिपूर्ण नदेखिँदा प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: केदारनाथ पौडेल

कम्प्युटर: विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७४ साल कात्तिक १७ गते रोज ६ शुभम् ।

१०

मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री टंकबहादुर मोक्तान, ०७०-WO-०६१०, उत्प्रेषण / परमादेश, गजेन्द्रकुमार श्रेष्ठसमेत वि. पुनरावेदन अदालत, पाटनसमेत

मुलुकी ऐन, अ.बं.११० नं. बमोजिमको प्रक्रियाबाट म्याद तामेल हुन नसकेको अवस्थामा सार्वजनिक सूचना जारी गरेर प्रतिवादीको नामको म्याद तामेल गर्न नमिल्ने भन्ने हो भने कतिपय अवस्थामा प्रतिवादीका नाममा म्याद सूचना तामेल हुन नसकी

अदालतमा विचाराधीन रहेका मुद्दाको अनन्तकालसम्म न्याय निरूपण नभई सम्पूर्ण न्यायिक प्रक्रिया नै अन्योलग्रस्त हुन जान्छ। आफैँले उल्लेख गरेको ठेगाना गलत हो भनी भन्न मिल्ने अवस्था नरहने हुँदा रिट निवेदकहरूले जग्गा राजीनामा गरी लिएको लिखतमा उल्लिखित वतनमा नै रीतपूर्वक इतलायनामा म्यादको सूचना जारी भएको अवस्थामा गलत वतन फरकमा म्याद तामेल भएको भन्ने निवेदकहरूको भनाइसँग सहमत हुन सकिने। साथै रीतपूर्वक म्याद तामेल भई फैसला भएको सन्दर्भमा मुलुकी ऐन, अ.बं. २०८ नं. को कानूनी प्रावधान आकर्षित हुन सक्ने अवस्था नरहँदा पुनः प्रतिवादीहरूको प्रतिउत्तरपत्र लिई फैसला गर्नुपर्ने गरी आदेश जारी गरिपाउँ भन्ने निवेदन दाबीको समेत औचित्य नदेखिने।

प्रतिवादी नाउँको म्याद तामेल नै हुन नसकेको अवस्थामा राष्ट्रिय दैनिक पत्रिकामा प्रकाशित गरी म्याद तामेल भएको देखिन्छ। सो तामेलीलाई इजलासबाट समेत मान्यता दिई फैसलासमेत भइसकेको हुँदा अधिकारक्षेत्रको प्रश्न सान्दर्भिक नदेखिने।

उल्लिखित आधार कारणबाट भक्तपुर जिल्ला अदालतमा निवेदकहरू समेतलाई प्रतिवादी बनाई दायर भएको दूषित लिखत दर्ता बदरसमेत मुद्दामा निजहरूको नाउँको ३० दिने इतलायनामाको म्याद बेपर्ते तामेल भएको कारण जिल्ला अदालत, नियमावली, २०५२ को नियम २२क(१)(ख) बमोजिम निज निवेदकहरूले लेखाएको राजीनामाको लिखतमा उल्लिखित ठेगानामा नै गोरखापत्रमा राष्ट्रिय दैनिक पत्रिकामा सार्वजनिक रूपमा सूचना प्रकाशित गरी म्याद तामेल भई फैसला भएको देखिँदा उक्त मिति २०६९।२।१७ को गोरखापत्रमा प्रकाशित म्याद सूचना, सोही आधारमा भक्तपुर जिल्ला अदालतबाट मिति २०६९।१।२० मा भएको फैसला र सोबमोजिम

भए गरेका अन्य कामकारबाही कानूनविपरीत रहेको भन्ने नदेखिँदा निवेदन मागबमोजिमको आदेश जारी गरिरहनु पर्ने देखिएन। तसर्थ प्रस्तुत निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत: कल्याण खड्का

इति संवत् २०७५ साल वैशाख २४ गते रोज २ शुभम्।

११

मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री टंकबहादुर मोक्तान, ०७२-WO-०३१६, उत्प्रेषण / परमादेश, पुष्पबहादुर अर्याल वि. क्षेत्रबहादुर शाहीसमेत

अदालतबाट रिट निवेदकको घर ठेगानामा

नै म्याद जारी भएको, निज प्रतिवादी आफ्नो घरमा नभेटिएको अवस्थामा अ.बं. ११०(१) को कानूनी प्रावधानअनुसार वडा सचिवको रोहबरमा प्रतिवादीको घरको ढोकामा सबैले देखने गरी म्याद टाँस भएको अवस्थामा सो म्याद तामेली बेरीतको भन्न सक्ने स्थिति रहेन। रिट निवेदकको घर ठेगानामा गएको र निजको अनुपस्थितिमा एकासगोलका परिवारका सदस्यले सो म्याद बुझ्न नमानेको कारण निजको घरदैलोमा म्याद टाँस भएको हुँदा सो म्यादलाई पछि आएर म्याद तामेल भएकै होइन भनी भन्न मिल्ने अवस्था पनि हुँदैन। रिट निवेदकको घर वतनमा नै रीतपूर्वक इतलायनामाको म्याद तामेल भएको अवस्थामा बेरीतको म्याद तामेली भई एकतर्फी फैसला भएको भन्ने निवेदकको भनाइसँग सहमत हुन नसकिने।

अतः उल्लिखित आधार कारणबाट यी निवेदक पुष्पबहादुर अर्याललाई प्रतिवादी बनाई दायर भएको लेनदेन मुद्दामा ललितपुर जिल्ला अदालतबाट जारी भएको ३० दिने इतलायनामाको म्याद मुलुकी ऐन, अ.ब. ११०(१) बमोजिम सम्बन्धित गा.वि.स. सचिवसमेत रोहबरमा बसी रीतपूर्वक तामेल भई फैसला भएको र हाल बिगोको कारबाहीसमेत चलिरहेको

सन्दर्भमा मिति २०६९।१०।१५ को तामेली म्याद र मिति २०७०।१।८ को फैसलामा कुनै कानूनी त्रुटि देखिन नआएकोले निवेदन मागबमोजिमको आदेश जारी गरिरहनु पर्ने देखिएन । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: कल्याण खड्का

इति संवत् २०७५ साल वैशाख २४ गते रोज २ शुभम् ।

१२

मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री टंकबहादुर मोक्तान, ०७२-WO-०५६९, उत्प्रेषण / परमादेश, प्रमिला मण्डल वि. महोत्तरी जिल्ला अदालतसमेत

निवेदकको नागरिकताअनुसारको स्थायी ठेगानामा निज प्रतिवादी नाउँको म्याद सूचना रीतपूर्वक तामेल भएको देखियो । निवेदकको स्थायी ठेगानाभन्दा अन्यत्र अदालतबाट म्याद सूचना जारी गरी म्याद तामेल भएको देखिँदैन । यसरी अदालतबाट यी रिट निवेदकको स्थायी ठेगानामा म्याद जारी भएको, निज प्रतिवादी आफ्नो घरमा नरहेको अवस्थामा अ.ब. ११०(१) को कानूनी प्रावधानअनुसार नै उक्त पडौल गा.वि.स. का सचिव हरिनारायण महतोको रोहबरमा प्रतिवादीको घरको ढोकामा सबैले देख्ने गरी म्याद टाँस भएको अवस्थामा सो म्याद तामेली बेरीतको देखिन आएन । रिट निवेदकको स्थायी ठेगानालाई नै निज निवेदकले गलत ठेगाना हो भनी भन्न मिल्ने अवस्था पनि हुँदैन । रिट निवेदकको उल्लिखित वतनमा नै रीतपूर्वक इतलायनामाको म्याद तामेल भएको अवस्थामा गलत वतन फरकमा म्याद तामेल भएको भन्ने निवेदकको भनाइसँग सहमत हुन नसकिने ।

अतः उल्लिखित आधार कारणबाट महोत्तरी जिल्ला अदालतबाट यी निवेदक उर्मिला

मण्डलसमेतलाई प्रतिवादी बनाई दायर भएको अंशदर्ता मुद्दामा निजको नाउँको ३० दिने इतलायनामाको म्याद मुलुकी ऐन, अ.ब. ११०(१) बमोजिम सम्बन्धित गा.वि.स. सचिव हरिनारायण महतोसमेत रोहबरमा बसी रीतपूर्वक तामेल भई फैसला भएको देखिँदा उक्त मिति २०७१।५।२४ को तामेली म्यादमा कानूनी त्रुटि देखिन नआएकोले सो म्याद बदर नगर्ने गरी भएको महोत्तरी जिल्ला अदालतको मिति २०७१।८।२६ र पुनरावेदन अदालत, जनकपुरको मिति २०७२।३।११ को आदेशमा त्रुटि देखिन आएन । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: कल्याण खड्का

कम्प्युटर: विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७५ साल वैशाख २४ गते रोज २ शुभम् ।

इजलास नं.१३

१

मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०७१-WO-०१८०, उत्प्रेषण / परमादेश, रामेश्वरी के.सी. ढुङ्गाना वि. नेपाल सरकार, अर्थ मन्त्रालय, सिंहदरबारसमेत

कृषि विकास बैंक लिमिटेड कर्मचारी सेवा सर्त विनियमावली, २०६२ ले कर्मचारीको उमेरको हद ५८ वर्ष तोकी बैंकको सेवामा २०५०।१।१७ भन्दा पछि नियुक्त हुने कर्मचारीका हकमा सेवा अवधि थप गर्ने व्यवस्था राखिएको देखिएन । यो व्यवस्था रिट निवेदिकालाई मात्र नभई बैंकको सेवामा कार्यरत सम्पूर्ण कर्मचारीहरूलाई समान रूपमा लागु हुने प्रावधान देखिन्छ । कसैप्रति पनि असमान व्यवहार वा भेदभाव हुनेगरी अनुचित रूपमा वर्गीकरण गरिएको अवस्था देखिँदैन । कर्मचारी व्यवस्थापन सम्बन्धमा आवश्यक

नीति अख्तियार गरी कार्यान्वयनमा ल्याउनु सम्बन्धित बैंक, कम्पनी वा प्रतिष्ठानको स्वायत्त अधिकारको विषय हो। यसरी गरिएको व्यवस्थाबाट अनुचित विभेद पैदा भएको वा स्वेच्छाचारी तवरबाट गम्भीर अन्यायपूर्ण परिणाम पैदा भएको स्थितिमा न्यायिक हस्तक्षेपको अवस्था आउन सक्तछ। तर त्यसप्रकारको अवस्था नदेखिएको र निश्चित मितिलाई आधार मानेर सुविधा व्यवस्थापन गरिएको कुरालाई अनुचित काम कारबाही मान्न नमिल्ने।

विनियमावलीअनुसार उमेर हद पूरा गरी अवकाश पाउने कर्मचारीलाई सेवा अवधि थप गरी थप सुविधा प्रदान गर्नुपर्ने कुरालाई अनिवार्य प्रावधान मान्न मिल्दैन। उमेर हदको कारणबाट सेवा निवृत्त भएका कर्मचारीलाई सेवा अवधि थप गरी सुविधा दिनु पर्छ भन्नु मनासिब पनि हुँदैन। मनासिब वर्गीकरण (Reasonable Classification) गरिएको कुरालाई समानताको हकप्रतिकूल मान्न मिल्दैन। वर्गीकरण गर्दा अनुचित, स्वेच्छाचारी र पूर्वाग्रहपूर्ण तवरबाट गरिएको अवस्था देखिएमा त्यसलाई समानताको हकप्रतिकूल मान्न सकिने अवस्था रहन्छ। त्यसप्रकारको अवस्था प्रस्तुत विवादको सन्दर्भमा देखिन नआएको हुँदा निवेदिकाको संविधानद्वारा प्रदत्त हकप्रतिकूल कार्य वा व्यवहार भएको मान्न नमिल्ने।

बैंकको अभिलेखअनुसार निवेदिकाको जन्म मिति २०१३।३।२९ भएको तथ्यमा विवाद छैन। कृषि विकास बैंकको उल्लिखित विनियमावली, २०६२ ले व्यवस्था गरेअनुसार २०५०।१।१७ भन्दा पछि अर्थात् मिति २०५३।१।२० देखि बैंकको सेवामा प्रवेश गर्नुभएको निवेदिका मिति २०७१।३।२८ सम्म १७ वर्ष ४ महिना ९ दिन सेवामा वहाल रहने कुरा स्वाभाविक देखिन्छ। निजको उमेर ५८ वर्ष पूरा भएकोले सेवा अवधि थप गर्नुपर्ने अवस्थासमेत

देखिँदैन। तसर्थ मिति २०७१।३।१५ को निर्णयअनुसार २०७१।३।२९ देखि लागू हुने गरी बैंकको सेवाबाट रिट निवेदिकालाई अनिवार्य अवकाश दिएको कृषि विकास बैंक लिमिटेडसमेतका विपक्षीहरूबाट भए गरिएका निर्णय एवम् कामकारबाही कानूनप्रतिकूल नदेखिँदा निवेदन मागबमोजिम आदेश जारी गर्न मिलेन। प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत: कृष्णप्रसाद अधिकारी

कम्प्युटर: चन्दनकुमार मण्डल

इति संवत् २०७४ साल वैशाख ३ गते रोज १ शुभम्।

२

मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०७१-CI-०४५६, लिखित दर्ता बदर दर्ता, श्रीमती गोदावरी देवीसमेत वि. हरेन्द्रप्रसाद केशरी

कपिलदेवले ०-०-२ जग्गा मात्र हरेन्द्रप्रसाद केशरीलाई लिखत पारित गरी दिएको देखिन्छ। प्रतिवादी कपिलदेवले प्रतिवादी हरेन्द्रप्रसाद केशरीलाई लिखत पारित गरिदिएको जग्गा व्यवहार चलाउन आधाभन्दा कम नै देखिएकाले अंशबन्डाको महलको १९(१) नं. बमोजिम वादीहरूको मन्जुरी लिनुपर्ने बाध्यात्मक कानूनी व्यवस्था रहेको देखिँदैन। घरको मुख्य व्यक्तिले घर व्यवहार चलाउनलाई सम्पत्ति बिक्री गरेको देखिएको र अंशबन्डाको १९(१) नं. बमोजिम समेत उक्त व्यवहारलाई अन्यथा हो भन्न सकिने अवस्था नदेखिँदा पुनरावेदन अदालत, हेटौंडाबाट भएको फैसला उल्टी गरिपाउँ भन्ने पुनरावेदन जिकिर मनासिब नदेखिने।

तसर्थ उल्लिखित आधार कारणबाट प्रतिवादी कपिलदेव घरको मुख्य व्यक्ति रहेको र करिब एक विगाहा जग्गा भएका व्यक्तिले केवल दुई धुर जग्गा घर व्यवहार चलाउन बिक्री गरेको देखिएको हुँदा

अंशबन्डाको महलको १९(१) नं. को कानूनी व्यवस्था अनुकूल नै व्यवहार भएको हुदा लिखत बदरतर्फ वादी दाबी नपुग्ने ठहरी भएको पुनरावेदन अदालत, हेटौंडाको मिति २०७०।१०।५ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: कृतबहादुर बोहरा

कम्प्युटर: संजय जैसवाल

इति संवत् २०७३ साल फागुन ९ गते रोज २ शुभम् ।

३

मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०७०-CI-१११३, निषेधाज्ञा, धनबहादुर घिमिरे वि. नवराज खत्री (पौडेल) समेत

निवेदकलाई अनधिकृत रूपमा कानूनविपरीत पक्राउ गर्ने, थुनामा राख्ने वा जबरजस्ती रकम असुल गर्ने आशंकाको अवस्था विद्यमान रहेको तथ्य देखिन आएको छैन । प्रहरी प्रशासनको तर्फबाट निवेदक विरुद्ध पक्राउ गर्न प्रहरी परिचालन भएको वा हुन सक्ने आशंकाको अवस्था देखिँदैन । करिब ४ वर्षअगाडिको कुरा भएकाले अहिले यो कुराको सान्दर्भिकता कायम रहेको अवस्था पनि देखिँदैन । आदेश जारी गर्नुपर्नेसम्मको मनासिब पूर्वावस्था विद्यमान रहेको नदेखिएको हुँदा निवेदन मागबमोजिम आदेश जारी गर्नु परेन । अतः निषेधाज्ञाको आदेश जारी हुने अवस्था नरहेको हुँदा निवेदन खारेज हुने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत, पाटनको मिति २०७०।७।२७ को आदेश मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: विष्णुप्रसाद आचार्य

इति संवत् २०७४ साल भदौ १ गते रोज ५ शुभम् ।

४

मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०७४-CR-०३४७, कर्तव्य

ज्यान, शम्भु चन्द्रवंशी वि. नेपाल सरकार

प्रतिवादी शम्भु चन्द्रवंशीले अदालतसमक्ष बयान गर्दा मोबाइल चोरेको विषयमा आफ्नी ठूली छोरीलाई मात्र कुटेको हुँ । यी मृतक सोनीलाई कुटपिट गरेको होइन, कर्तव्य गरी मारेको होइन भनी (स.ज.७ र १२ मा) उल्लेख गरेको देखियो । तर अनुसन्धानको क्रममा गरिएको बयानमा निज प्रतिवादीले आफ्नी कान्छी छोरीलाई लाठीले हिकाएको कुरा स्वीकार गरेको पाइयो । निज प्रतिवादीले हरियो सालको प्रयोग गरी रूखमा झुन्ड्याउने प्रयास गरेका भन्ने कुरा बरामद भएको हरियो साल तथा शिरिषको रूखमा भेटिएको हरियो सालसँग मिल्दाजुल्दा हरिया रेसाहरूबाट समर्थित भएको देखिन्छ । प्रतिवादीको कारणबाट मृतक सोनी (सोनित) को मृत्यु नभएको भए मृतकलाई लुकाउने-छिपाउने र ढाकछोप गर्नुपर्ने अवस्था आउने थिएन । घटनालाई शृङ्खलाबद्ध रूपमा उल्लेख गरी सिलसिलेवार तरिकाले सविस्तार उल्लेख गरेको र अन्य स्वतन्त्र प्रमाणबाट समर्थित भएको देखिँदा प्रतिवादीको मौकाको बयान बेहोरा प्रमाणयोग्य नै देखिन आउने ।

तसर्थ, विवेचित आधार, प्रमाणबाट प्रतिवादी शम्भु चन्द्रवंशीको कर्तव्यबाट निजकी छोरी सोनी (सोनित) चन्द्रवंशीको मृत्यु भएको तथ्य प्रमाणित भएकाले प्रतिवादीलाई अभियोग दाबीबमोजिम मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १३(३) नं. अनुसार सर्वस्वसहित जन्मकैद सजाय हुने ठहर्‍याएको सुरु सुनसरी जिल्ला अदालतको फैसलालाई सदर गर्ने गरी उच्च अदालत, विराटनगरबाट मिति २०७४।२।२ मा भएको फैसला मनासिब देखिँदा सदर हुने ।

मृतक र प्रतिवादी बाबु छोरी नाताका भएको र निजहरूका बीचमा पूर्वरिसइवी र ज्यानै मार्नेसम्मको कारण रहे भएको देखिँदैन । मोबाइल

भेटाएको विषयमा मृतकले गाउँघरमा हल्ला खल्ला गरिदिएको कारण बेइज्जती हुने डरले आवेशमा आई बाबुले छोरीलाई गाली गरी तत्काल उठेको रिस थाम्न नसकी कुटपिट गरेको देखिन्छ। सोही चोटका कारण प्रतिवादीको कान्छी छोरीको मृत्यु भएको पाइयो। ज्यान लिनुपर्नेसम्मको नियत / मनसाय देखिएको छैन। बाँसको लाठीले पटकपटक बालिकाउपर प्रहार गरेको कारणबाट उक्त वारदातलाई भवितव्य मान्न वा ज्यानसम्बन्धीको १४ नं. बमोजिमको कसुर ठान्न सकिएन। तथापि वारदात घटनाको श्रृङ्खला भवितव्य हो कि भनी लाग्ने प्रकृतिको देखिएको छ। यस अवस्थामा कसुरदारलाई ऐनबमोजिम सजाय दिँदा चर्को हुने भई घटी सजाय गर्नु मनासिब देखिन्छ। तसर्थ, प्रतिवादी शम्भु चन्द्रवंशीलाई सर्वश्वसहित जन्मकैदको सजाय नगरी अ.बं.१८८ नं. बमोजिम १०(दश) वर्ष कैद सजाय हुने।

इजलास अधिकृत: शिवप्रसाद आचार्य

इति संवत् २०७४ साल चैत २२ गते रोज ५ शुभम्।

५

मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत, ०७०-CR-१२६७, अपहरण गरी ज्यान मार्ने उद्योग, *रामकुमार कार्की वि. नेपाल सरकार*

वारदातमा गोली प्रहार भएको भन्ने पुष्टि भएको छैन। खुकुरीजस्तो जोखिमी हतियारले हानेको भनी जिकिर लिए पनि घाउचोटको अवस्थाबाट खुकुरी प्रहार गरिएको र गम्भीर चोटपटक लागेको भन्ने देखिँदैन। प्रतिवादीको ज्यान मार्नेसम्मको मनसाय थियो भन्ने कुरा खुल्न आएको पाइएन। पीडितलाई डर त्रास मात्र देखाउने वा सामान्य घाउचोट मात्र पार्ने अभिप्रायले गरिएका सामान्य प्रकृतिका कार्यलाई

ज्यान मार्ने उद्योगको कसुर मान्न मिल्दैन। तेस्रो पक्षको उपस्थिति वा अवरोधका कारण ज्यान गर्न नपाएको भन्ने पनि देखिँदैन। मिसिल प्रमाणबाट ज्यान मार्ने उद्योगको वारदात भएको तथ्य नै प्रमाणित हुन आएको नदेखिने।

अतः विवेचित आधार प्रमाणबाट प्रतिवादीहरू रामकुमार कार्कीलाई ज्यान मार्ने उद्योगको कसुरमा ७ वर्ष कैद हुने गरी भएको पुनरावेदन अदालत, पाटनको मिति २०६९।९।२४ को फैसला मिलेको नदेखिँदा उल्टी हुन्छ र पुनरावेदक प्रतिवादी रामकुमार कार्कीले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने ठहर्छ। वारदात नै ज्यान मार्ने उद्योग ठहर नभएकोले कसुरदार ठहर भएका पुनरावेदन नगर्ने प्रतिवादी कुलबहादुर लामाले समेत मुलुकी ऐन, अ.बं.२०५ नं. बमोजिम सफाइ पाउने।

इजलास अधिकृत: गीता श्रेष्ठ

कम्प्युटर: अर्जुन पोख्रेल

इति संवत् २०७४ साल पुस २६ गते रोज ४ शुभम्।

यसै लगाउको निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैअनुसार फैसला भएका छन्:

- ०७०-CR-१२६८, हातहतियार खरखजाना, *रामकुमार कार्की वि. नेपाल सरकार*
- ०७०-CR-१२६९, अदालतको अवहेलना, *रामकुमार कार्की वि. राजु खत्रीसमेत*

६

मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल, ०७१-CR-१११२, जबरजस्ती करणी, *अशोककुमार देउला वि. नेपाल सरकार*

पीडित स्वयम्ले अभियुक्तको पहिचान गरेको र पीडितले खुलाएको अभियुक्तको हुलिया

विवरणसँग अभियुक्तको हुलिया विवरण मिलेको भनी स्वयम् अभियुक्तले अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्षको बयानमा स्वीकार गरेको अवस्थामा घटनास्थल फरक देखाउँदैमा अपराध नै नभएको भन्न नसकिने ।

मिसिल संलग्न रहेको भरतपुर अस्पताल, चितवनको च.नं. १८२१ मिति २०७०।०३।१४ गतेको पत्रबाट चिकित्सकको रिपोर्टअनुसार पीडितको उमेर ८-१० वर्ष भएको भन्ने देखिन आउँछ । पीडितको उमेर अनुमानको आधारमा १५ वर्ष भन्दैमा वैज्ञानिक परीक्षणको आधारमा पीडितको उमेर ८-१० वर्ष भएको भनी प्रमाणित गरिदिएको भरतपुर अस्पताल, चितवनको उक्त पत्रलाई अन्यथा मान्न मिल्ने नदेखिने ।

जबरजस्ती करणीको वारदातमा वीर्य स्खलन हुनैपर्छ भन्ने अनिवार्यता रहँदैन । जबरजस्ती करणीको वारदातमा वीर्य स्खलित भए पनि विविध कारणले स्खलित वीर्य भेटिन नसक्ने सम्भावनासमेत रहने हुन्छ । Condom प्रयोग गरी जबरजस्ती करणीको अपराध गरेको अवस्थामा स्खलित वीर्य भेटिने सम्भावना रहँदैन । जबरजस्ती करणीको अपराध हुनका लागि स्त्रीको योनिभित्र पुरुष जनेन्द्रिय पूर्णरूपमा प्रवेश भएकै हुनुपर्ने, स्त्रीको कन्याजाली (Hymen) च्यातिएकै हुनुपर्ने, पुरुष वीर्य योनिमा स्खलन भई योनिको वरपर वीर्य वा सोको दाग देखिने पर्ने भन्ने अनिवार्यता नहुने ।

योनिको बाह्य भागभित्र आंशिक लिङ्ग प्रवेश गराउनु मात्र पनि कानूनी प्रयोजनका लागि जबरजस्ती करणीको अपराध हुने हुँदा पीडितको Vaginal Swab मा वीर्य नदेखिएको भन्ने आधारमा मात्र जबरजस्ती करणीको अपराध नभएको भनी मान्न मिल्ने देखिएन । यदि पीडितले प्रतिवादीउपर झुठा आरोप लगाएको भए झुठा आरोप लगाउनु पर्ने कुनै प्रकारको कारण प्रतिवादीले देखाउन सकेकोसमेत

पाइएन । माथि उल्लिखित आधार, कारणबाट यी पुनरावेदक प्रतिवादीले आरोपित कसुर अपराध गरेको पुष्टि हुन आएको देखिँदा अभिगोग मागदाबीअनुसारको कसुरबाट सफाइ पाउँ भन्ने प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

अतः विवेचित पीडितको मौकाको कागज र अदालतमा भएको बकपत्र, पीडितले प्रतिवादीको पहिचान गरी गरिदिएको सनाखत कागज, पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदन र सो प्रतिवेदन तयार गर्ने चिकित्सकको बकपत्र, भरतपुर अस्पताल, चितवनले पीडितको उमेर जाँच प्रमाणित गरिदिएको प्रमाणित पत्र र मौकामा कागज गरिदिने व्यक्तिहरूले गरिदिएको बकपत्रसमेतबाट प्रतिवादीले जबरजस्ती करणी गर्ने मनसायले पीडित परिवर्तित नाम हटिया (क) लाई रिक्सामा चढाई जंगलमा लगी अभियोग माग दाबीबमोजिमको कसुर अपराध गरेको प्रमाणित हुन आएको अवस्थामा सुरु मकवानपुर जिल्ला अदालतले प्रतिवादी अशोक देउलालाई मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको ३ नं. को देहाय (१) बमोजिम १० (दश) वर्ष कैद हुने ठहर्‍याई भएको फैसला सदर हुने गरी पुनरावेदन अदालत, हेटौँडाबाट मिति २०७१।०८।०९ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: विकास श्रेष्ठ

इति संवत् २०७४ साल कात्तिक ३० गते रोज ५ शुभम् ।

इजलास नं. १४

१

मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०७२-CR-०४९५, जबरजस्ती करणी, नेपाल सरकार वि. उमेश चौधरीसमेत

प्रतिवादीहरू दुई जनाको संलग्नता रही

जबरजस्ती करणी भएको देखिन आएकोले सामूहिक रूपमा कसुर भएको हुँदा थप पाँच वर्ष कैद गर्नुपर्ने भनी लिएको जिकिरका सम्बन्धमा सामूहिक ठहर्न सामूहिक योजना, पूर्वतयारीसमेत हुनुपर्छ यहाँ त्यस्तो केही रहे भएको पाइँदैन । योजनाबद्ध रूपमा काम गरेको भन्ने नदेखिँदा निज प्रतिवादीहरू धरेन्द्र चौधरी र उमेश चौधरीलाई अभियोग दाबीबमोजिम थप पाँच वर्ष कैद सजाय गर्नुपर्ने स्थिति देखिएन । मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणी महलको १ नं. बमोजिमको कसुरमा यी प्रतिवादीहरूले मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महल ३क नं. बमोजिमको कसुर गरेको नदेखिएकोले सोही महलको ३(२) नं. बमोजिम जनही ८ वर्ष कैद सजाय गर्ने गरी सुरु कैलाली जिल्ला अदालतले गरेको फैसलालाई सदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत, दिपायलबाट मिति २०७१।१।३० मा भएको फैसलालाई अन्यथा भन्न नमिल्ने ।

मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको १० नं. “कसैले कुनै महिलालाई जबरजस्ती करणी गरेको ठहरेमा अदालतले त्यस्ती महिलालाई भएको शारीरिक, मानसिक र मनोवैज्ञानिक क्षतिपूर्ति कसुरदारबाट भराइदिनु पर्नेछ” भन्ने र सोही महलको १०ग. नं. मा “फैसला गर्दा जबरजस्ती करणी ठहर गरेकोमा कसुरदारबाट क्षतिपूर्ति भराई दिनुपर्नेसमेत उल्लेख गरी सम्बन्धित महिलालाई भराई दिनुपर्नेछ” भन्ने व्यवस्था भएकोले जबरजस्ती करणी भएको अवस्थामा भराई दिनुपर्ने क्षतिपूर्तिसमेत फैसलामा उल्लेख गर्नुपर्ने बाध्यात्मक व्यवस्था रहेको देखिन्छ । उल्लिखित कानूनी व्यवस्थाबमोजिम प्रतिवादीहरूबाट पीडितलाई क्षतिपूर्ति भराउनु पर्नेमा सुरु कैलाली जिल्ला अदालतबाट मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणी महलको १० र १०ग. नं. बमोजिम प्रतिवादीहरूबाट पीडितलाई क्षतिपूर्ति भराउनेतर्फ कानूनको व्याख्या

गरी फैसला गरेको नदेखिएबाट सो हदसम्म पुनरावेदन अदालतबाट भएको फैसला मिलेको नदेखिने ।

तसर्थ: प्रस्तुत मुद्दाका विवेचित तथ्य, कानूनी व्यवस्था तथा प्रमाणहरूबाट प्रतिवादीहरूलाई जबरजस्ती करणी गरेकोमा सजायको हकमा मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको ३(२) नं. बमोजिम जनही ८ वर्ष कैद सजाय हुने गरी भएको सुरु कैलाली जिल्ला अदालतको फैसला सदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत, दिपायलबाट मिति २०७१।१।३० मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । तर क्षतिपूर्तिको हकमा पीडितलाई क्षतिपूर्ति भराउनु पर्नेमा सोही महलको १० नं. र १०ग. नं. बमोजिम क्षतिपूर्ति भराउनेतर्फ केही नबोली भएको सुरु कैलाली जिल्ला अदालतको फैसला सदर हुने गरी पुनरावेदन अदालत, दिपायलबाट उक्त मितिमा भएको फैसला सो हदसम्म मिलेको नदेखिँदा केही उल्टी भई पीडितलाई प्रतिवादीहरूको उमेर र आर्थिक अवस्थासमेत विचार गरी दुवैजना प्रतिवादीहरूबाट जनही रु.१०,०००।- का दरले क्षतिपूर्ति भराई पाउने ।

इजलास अधिकृत: मनकुमारी जि.एम.वि.क.

कम्प्युटर: पद्मा आचार्य

इति संवत् २०७४ साल चैत १९ गते रोज २ शुभम् ।

२

मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०७१-CR-१२५४ र ०७३-RC-००५६, कर्तव्य ज्यान, भुपाल दाहालसमेत वि. नेपाल सरकार र नेपाल सरकार वि. तोर्णप्रसाद न्यौपाने पोष्टमार्टम रिपोर्ट हेर्दा टाउकोमा चोट लागेको र टाउकोको हाड नै Fracture भएको भन्ने उल्लेख छ । घरभित्र बन्चरो प्रहार गरी मारी बोरामा लास हाली रगत खस्न नदिई स्टिलको थाल थापी बाटोमा रगत खस्न नदिई घरपछाडि बारीमा खाल्टो खनी लास

पुरेको अवस्थामा फेला परेको पाइन्छ । लासलाई घिसाउँ लागेको भन्ने मिसिलबाट नदेखिएबाट लास बोकी लागेको कुरा स्थापित हुन्छ । लास लाँदा मृतकको शरीरबाट निस्केको रगत थालमा थाप्दै लागेको र सो थाल लाससँगै पुरेको र लास खोतल्दा सोसमेत फेला परेको देखिन्छ । एकै जनाले लास बोकी लग्न सक्ने र सो गर्दा कतै रगत नचुहिने, बाटो घस्रने मडारिने अवस्था नहुने कुरा हुँदैन । यस स्थितिमा प्रतिवादीमध्येका तोर्णप्रसाद न्यौपानेले लासलाई बोकेर खाल्टो खनी गाडेको होला भनी अनुमान गर्न सक्ने अवस्था मिसिल संलग्न कागज प्रमाणबाट नदेखिने ।

प्रतिवादीमध्येका तोर्णप्रसाद न्यौपानेले अदालतमा आई बयान गर्दा मृतक बाबुलाई आफू एकलैले मार्ने कार्य गरेको हो अरूको संलग्नता थिएन भनी बयान गरेको भए पनि घटनाक्रम, लास खाल्डो खनी गाडिएको अवस्था र लासमा लागेको चोट हेर्दा हत्याको कार्य एकै व्यक्तिले गर्न सक्ने प्रकृतिको देखिँदैन । प्रतिवादी कृष्ण तामाङ तथा भुपाल दाहाल र प्रतिवादी तोर्णप्रसादले अनुसन्धानमा गरेको बयान मुताबिक नै सुनियोजित रूपमा मनसायपूर्वक आफ्नो बाबु कुशमाखर सुतिरहेको अवस्थामा दाउरा चिर्न प्रयोग हुने बन्चरो कृष्ण तामाङलाई दिएको, आफूले मृतकको खुट्टा समातेको, भुपाल दाहालले हात समातेको र कृष्ण तामाङले दुई पटक टाउकोमा हिकोई बुबा मरिसकेपछि तीनै जनाले प्लाष्टिकको बोरामा हाली घरबाहिर निकाली लासलाई बारीको भित्तामा खाडल खनी पुरी भागेका रहेछन् र भुपाल दाहाल र कृष्ण तामाङले प्रतिवादी तोर्णप्रसाद न्यौपानेलाई निजको बाबु कुशमाखर न्यौपानेलाई मार्ने कार्यमा आर्थिक लोभसमेतमा परी मार्न सहयोग गरेको रहेछ भन्ने देखिन आउने ।

बाबु र छोराबीचमा घरायसी झगडा भइरहने,

वारदातको दिनमा समेत आफ्नो बाबुसँग झगडा वादविवाद भई पूर्वनियोजित रूपमा मार्ने मनसाय राखी अन्य दुई प्रतिवादीहरू कृष्ण तामाङ र भुपाल दाहाललाई बोलाई निजहरूको सहयोग लिई मृतकलाई धारिलो जोखिम हतियार बन्चरोले टाउकोजस्तो संवेदनशील अङ्गमा प्रहार गरी कर्तव्य गरी मारेको कुरा मिसिल संलग्न प्रमाण कागजातसमेतबाट पुष्टि हुन आएकोले तोर्णप्रसाद न्यौपानेलाई कसुरदार ठहर्‍याएको फैसलालाई अन्यथा भन्नु पर्ने नदेखिने ।

अतः उल्लिखित आधार कारणसमेतबाट प्रतिवादीहरू तोर्णप्रसाद न्यौपाने, भुपाल दाहाल र कृष्ण तामाङले अभियोग दाबीबमोजिम मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १ नं. विपरीतको कसुर गरेको ठहर्‍याई सोही महलको १३(१) नं. बमोजिम जन्मकैदको सजाय हुने गरी पुनरावेदन अदालत, धनकुटाबाट मिति २०७५।१।७ भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । पुनरावेदक प्रतिवादीहरू कृष्ण तामाङ र भुपाल दाहालको पुनरावेदन जिकिर पुग्न सक्दैन । साथै प्रतिवादी तोर्णप्रसाद न्यौपानेको हकमा पेस भएको साधकसमेत सदर हुने ।

प्रस्तुत मुद्दामा पुनरावेदक प्रतिवादी कृष्ण तामाङ र प्रतिवादी भुपाल दाहाललाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३ (१) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद सजाय हुने ठहरी फैसला भएको छ तापनि कुशमाखर न्यौपानेलाई मार्नु पर्ने निजहरूको आफ्नै कारण रहे भएको देखिँदैन । वारदातमा संलग्न अर्का प्रतिवादी तोर्णप्रसादको कारण घटना घटेको र निजको बहकाउमा लागी यी प्रतिवादीहरूले मृतकलाई मार्न सहयोगी भूमिका गरेको देखिन्छ । यसरी निजहरूको तत्कालको परिस्थिति र अवस्था, निजहरूको उमेर, निजहरूले पूर्व अपराध नगरेको अवस्थासमेतलाई विचार गर्दा निजहरूलाई

ऐनबमोजिम हुने सजाय गर्दा चर्को पर्न जाने देखिएकोले मुलुकी ऐन, अदालती बन्दोबस्तको १८८ नं. बमोजिम प्रतिवादीहरू कृष्ण तामाङ र भुपाल दाहाललाई १०(दश) वर्ष कैद गर्दा न्यायको उद्देश्य पूरा हुने देखिएकोले निज प्रतिवादीहरूलाई जनही १० वर्ष कैदको सजाय हुने।

इजलास अधिकृत: मनकुमारी जि.एम.वि.क.

कम्प्युटर: पद्मा आचार्य

इति संवत् २०७४ साल चैत १९ गते रोज २ शुभम्।

इजलास नं. १५

मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ, ०७१-CI-०७७४, दूषित दर्ता निर्णय बदर दर्ता हक कायमसमेत, बखतमान सिंह बस्नेत वि. धनकुमारी बस्नेत

हेमलक्ष्मी बस्नेतसमेतले संयुक्त रूपमा जग्गा रजिस्ट्रेसन गराई लिएको र २०६६।१२।१५ मा शेषपछिको बकसपत्र अष्टलोह वादी बखतमान सिंह बस्नेतलाई हेमलक्ष्मीले गरिदिएको र हेमलक्ष्मीको मृत्यु भएपछि आफूले प्राप्त गरेको शेषपछिको बकसपत्रको लिखतलाई आधार बनाई लिखतमा उल्लेख भएको जग्गामा आफ्नो हक स्थापित गराउनको लागि वादीबाट फिराद परेको अवस्था भएकोले वादी सरोकारवाला व्यक्ति देखिँदा वादीलाई फिराद गर्ने हकद्वैया छैन भनी भन्न मिल्ने नदेखिने।

वादीले २०६६।१२।१५ मा शेषपछिको बकसपत्र अष्टलोह प्राप्त गरेकोमा शेषपछिको बकसपत्र दिने व्यक्तिको २०६६।१२।२० मा मृत्यु भएको मृत्युदर्ता प्रमाणपत्रसाथ राखी २०६८।११।२९ मा जग्गाधनी प्रमाणपुर्जाको नक्कल र निर्णयको नक्कलसमेत सारी लिँदा धनकुमारी बस्नेतले एकलौटीरूपमा दर्ता

गराएको कुरा थाहा जानकारी भएकोले भन्दै नक्कल सारेको मिति २०६८।११।२९ बाट हदम्यादको गणना गरी मिति २०६९।१।३ मा वादीले आफ्नो फिराद दायर गरेको देखिन्छ। अर्कोतर्फ वादीले पहिले नै थाहा पाइसकेको भन्ने कुराको जिकिर लिई सोको वस्तुनिष्ठ प्रमाण प्रतिवादीले दिएको मिसिलबाट देखिँदैन। त्यसकारण शेषपछिको बकसपत्र दिने दाताको मृत्युपश्चात् शेषपछिको बकसपत्र पाउने वादीको हक सिर्जना हुने र आफ्नो हकको प्रचलन गराउने सन्दर्भमा दूषित दर्ता र निर्णय भएको जानकारी भएपछि ऐनमा भएको व्यवस्थानुसारको समयवाधिमै वादीको प्रस्तुत फिराद परेको भन्ने देखिन आएकोले वादीको फिराद हदम्याद नाघी दायर भएको रहेछ भन्ने नदेखिने।

मिसिल समावेश २०३८।३।८ को धनकुमारी र हेमलक्ष्मीको बीचमा भएको दर्ताफारीको प्रतिलिपिबाट अहिलेको विवादित कि.नं.१७१, १७४, १७५, १७८ र १७९ को जग्गा दर्ताफारीको लिखतमा उल्लिखित भएको नदेखिँदा दर्ताफारी भएको भन्ने देखिन आएन। त्यसरी दर्ताफारीको कागजमा विवादको उल्लिखित कि.नं. का जग्गाहरू उल्लेख भएको नदेखिएपछि त्यसको अस्तित्व संयुक्त दर्ताकै रूपमा देखिन आएको छ। यस्तो प्रकृतिको जग्गा र संयुक्त दर्तावालाले आफ्नो हक कसैलाई कानूनसङ्गत तौरतरिकाले हस्तान्तरण गरेको देखिन्छ भने लिखतबाट जसलाई दिएको हो सो अन्यथा प्रमाणित नभएको अवस्थामा जग्गा प्राप्त गर्ने व्यक्तिको हक सिर्जना हुने नै देखिने।

यदि संयुक्त दर्ता देखिन्छ। अर्को दर्तावालाको अनुपस्थितिमा सुनुवाइको मौकासमेत प्रदान नगरी एकलौटी दर्ता गर्ने भनी निर्णय गर्नुपर्छ भने त्यस्तो कार्यलाई कानूनतः स्वाभाविक मान्न नमिल्ने।

मिसिल संलग्न फिल्डबुक उतार, प्लट रजिस्ट्ररसमेतका प्रतिलिपिहरूबाट विवादित जग्गा धनकुमारी र हेमलक्ष्मीको संयुक्त दर्ताको भन्ने देखिई रहेकोमा अर्को दर्तावालालाई बुझ्ने कामसम्म नगरी भएको निर्णय कानूनको दृष्टिमा मान्य हुनेसमेत देखिँदैन। त्यसैले संयुक्त दर्तावाला हेमलक्ष्मीलाई बुझ्दै नबुझी निजको सहमतिबेगर एकतर्फी रूपमा कारबाही चलाई संयुक्त दर्ताबाट एकलौटी दर्ता हुने गरी भएको निर्णय दूषित निर्णय भएको देखिँदा सो कायम रहन सक्ने अवस्थाको नदेखिने।

तसर्थ संयुक्त दर्तावालालाई बुझ्दै नबुझी दूषित तरिकाबाट एकलौटी दर्ता गराएको मिति २०६८।११।२९ को मालपोत कार्यालय, कलंकीको निर्णय आदेश कानूनविपरीतको भई दर्तासमेत दूषित देखिन आएकाले दूषित दर्ता निर्णय बदर भई वादी बखतमान सिंह बस्नेतले संयुक्त दर्तावालामध्ये हेमलक्ष्मीबाट मिति २०६६।१२।२५ मा शेषपछिको बकसपत्र अष्टलोह प्राप्त गरेको भन्ने देखिँदा र सो कागज

अन्यथा भएको स्थिति र अवस्थासमेत मिसिलबाट नदेखिएकोले शेषपछिको बकसपत्र प्राप्त गर्ने व्यक्ति वादी बखतमानसिंह बस्नेत नाममा दर्ता भई निजको हककायमसमेत हुने।

अतः माथि उल्लेख भई विवेचना भएको आधार कारण एवम् प्रमाणसमेतबाट सुरुको फैसला उल्टी गरी वादी दाबी पुग्न नसक्ने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, पाटनबाट मिति २०७१।६।२ मा भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा उल्टी भई विपक्षीले दूषित तरिकाले गराएको दर्ता र सोसम्बन्धी मालपोत कार्यालय, कलंकीबाट मिति २०६८।७।१६ मा भएको निर्णयसमेत बदर भई फिराद दाबीबमोजिम विवादको उल्लिखित कि.नं.१७१, १७४, १७५, १७८ र १७९ को जग्गाहरूको आधामा वादीको हक कायम वादीका नाममा दर्ता हुने र वादीले चलन चलाई पाउने।

इजलास अधिकृत: सोमराज काफ्ले

कम्प्युटर: अर्जुन पोख्रेल

इति संवत् २०७५ साल असार ५ गते रोज ३ शुभम्।

“मेलमिलाप गरौं, विवाद नबढाऔं”

- सर्वोच्च अदालत, मेलमिलाप समिति